यशस्वी एवं कर्मठ

डॉ॰ लक्ष्मी नारायण सारस्वत

की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में प्रस्तुत

मंगल कलश

अभिनन्दन ग्रंथ

डा० सारस्वत को भेंट

शुभ कामना सहित

[illegible]

— [illegible] 3.7.05

हिसार

[illegible]

(G.S. [illegible])

Jodhpur

[illegible]

03.7.05

यशस्वी एवं कर्मठ

डॉ० लक्ष्मी नारायण सारस्वत

की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में प्रस्तुत

मंगल कलश

मार्गनिर्देशक :

साहित्य वाचस्पति

प्रो० उदयभानु हंस

राज्यकवि हरियाणा

सम्पादक मंडल :

प्रो० रघुवीर 'अनाम'

रघुनाथ प्रियदर्शी

प्रकाशक :

'डॉ० लक्ष्मीनारायण सारस्वत अभिनन्दन समिति'

शांतिकुञ्ज 93, मॉडल टाउन, हिसार (हरियाणा)

मूल्य : **आशीर्वाद, शुभकामनाएं एवं प्रेरणा**

(नि:शुल्क : सप्रेम भेंट)

आवरण पृष्ठ : **ओमप्रकाश कादयान**

मुद्रक : **ओजस्वी आर्ट प्रेस**

ज्योतिपुरा, हिसार।

MANGAL KALASH

(Felicitation Volume)

By Prof. Raghuvir Anam

&

Raghunath Priyadarshi

सम्पादक मंडल

प्रो॰ रघुवीर अनाम
(सम्पादक)

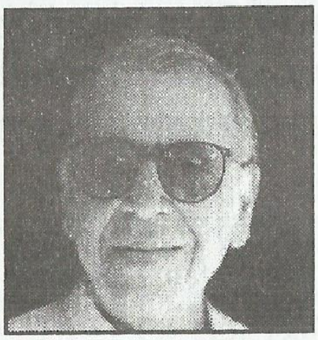

प्रो॰ उदयभानु हंस
(मार्ग निर्देशक)

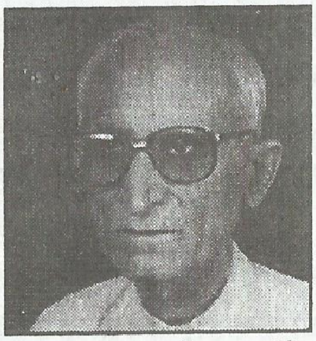

रघुनाथ प्रियदर्शी
(सह सम्पादक)

अभिनन्दन समिति

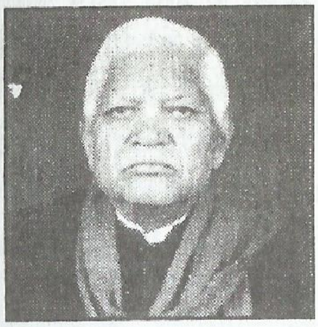

पं॰ मदन गोपाल शास्त्री
प्रधान

नरेन्द्र कश्यप
सचिव

सदस्य

प्राचार्य करतार सिंह कौशिक
श्री जगत सरूप एडवोकेट
डॉ॰ कुलदीप सिंह ढींढ़सा
श्री डी.एम. लाल
डॉ॰ डी.डी. शर्मा
प्राचार्य शमीम शर्मा
श्री गौरी शंकर अत्री एडवोकेट
डॉ॰ दलेल सिंह
डॉ॰ वेद शर्मा
डॉ॰ इन्द्रजीत
प्राचार्य हरिकृष्ण शर्मा
प्रो॰ दर्शन सिंह ठाकुर
प्रो. एस. दास
श्री सतीश कौशिक
श्री जय कुमार जैन
प्राचार्य बलराज सिंगला
श्री निहाल सिंह
श्री ओम प्रकाश कादयान
डॉ॰ प्रदीप गोयल
प्राचार्य सुनीता गर्ग

सम्पादकीय

वर्तमान परिस्थितियों में, जहाँ भौतिकवादी सभ्यता का प्रभुत्व हो और नैतिक एवं सैद्धान्तिक मूल्य पत्नोन्मुख हों, डॉ. लक्ष्मीनारायण सारस्वत जैसे त्यागी, उदारवादी, समाजसेवी, साहित्यसेवी तथा मानवतावादी व्यक्तित्व की षष्टिपूर्ति के सुअवसर पर उनके सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन तथा समारोह का आयोजन निश्चित रूप से प्रशंसनीय एवं वन्दनीय है।

डॉ॰ सारस्वत के शुभचिन्तकों तथा मित्रों ने जब उनकी षष्टि-पूर्ति मनाने का सुझाव उनके सामने रखा तो ये इसके लिए लेशमात्र भी तैयार नहीं हुए, बोले, ''मैं इसके योग्य कहाँ? मैंने तो कुछ किया ही नहीं। जब मैं सत्तर-पचहत्तर का हो जाऊँ, और समाज के लिए कुछ कर लूँ, तब सोचा जा सकता है'' हमनें डॉ॰ सारस्वत से कहा, ''डॉ. साहब! हीरा कब अपने मोल को जान पाता है? आप हमारे अनुरोध को स्वीकार करें।'' हमारे बार-बार आग्रह-अनुरोध करने के बाद ही वे इसके लिए तैयार हुए।

किशोरावस्था से ही डॉ॰ सारस्वत अत्यन्त परिश्रमी, संयमी, आज्ञाकारी और अनुशासित रहे हैं। एक विद्यार्थी के रूप में अपने गुरुओं के प्रति सदैव नतमस्तक एवं विनम्र रहे हैं। *'गुरुरेव परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः'* के मूल-मंत्र को आत्मसात् किए आज भी ये क्लीनिक में पहुँच कर सर्वप्रथम श्रद्धेय गुरु जी की मूर्ति के समक्ष नतमस्तक हो पूज्यभाव अर्पित करते हैं।आज के युग में ऐसी श्रद्धा देखने को तो क्या, सुनने को भी नहीं मिलती। आज तक जो कुछ भी इन्होंने प्राप्त किया है, वे इसे गुरुकृपा ही मानते हैं। विद्यार्थी जीवन में अर्जित ये सुसंस्कार आज इनकी धरोहर बन गए हैं, जिनके बल पर आज एक सुव्यवस्थित एवं सात्विक जीवन यापन कर रहे हैं।

डॉ॰ सारस्वत के लिए जीवन की डगर सदैव समतल रही हो, ऐसा नहीं है। अनेक ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलकर आगे बढ़े हैं, संघर्षों में पले हैं और साहस एवं उत्साह के साथ उन पर चले हैं। आत्मविश्वास के बल पर सभी कठिनाइयों और विपत्तियों को झेला है, हँसते-हँसते उनसे खेला है। उनका जीवन केवल सुखों की सेज नहीं; उसमें फूल भी हैं और शूल भी, गुलाब भी हैं और बबूल भी । अत्यन्त संघर्षमय परिस्थितियों में जीवन जिया है, शिव की तरह विषपान किया है। अपने गाँव सिवानी बोलान से नहला, जो ५ किलोमीटर पड़ता है, स्कूल में पढ़ने के लिए पैदल जाया करते थे। डॉक्टर बनने के बाद की घटना है। सारे इलाके में महामारी फैल गई। डॉ॰ सारस्वत लगातार चार दिन बिना सोए दिन-रात रोगियों की सेवा में जुटे रहे, जो यह दर्शाता है कि ये कितने परिश्रमी, संघर्षशील, समर्पित तथा निष्ठावान हैं। यही कारण है कि यह एक ही स्थान पर - शेरड़ा (राज.) २० वर्ष तक कार्यरत रहे। पाँच बार इनको स्थानांतरित किया गया, किन्तु हर बार ग्रामवासी सरकार से अनुरोध कर इन्हें वापिस शेरड़ा ले आए। यह इस बात का परिचायक है कि डॉ॰ साहब वहाँ कितने लोकप्रिय थे।

डॉ॰ सारस्वत परिजनों और परजनों - सभी के प्रति अत्यन्त उदारवादी हैं। ऐसा भी नहीं कि वे बहुत धनवान हों; उद्योगपति या पूँजीपति हों; घर में धन के अंबार लगे हों, ऐसा कुछ भी नहीं है। मगर हाँ, इनके दिल में गरीबों के प्रति तड़प है, चाह है; कुछ

कर गुज़रने का असीम उत्साह है। यही भाव इन्हें अन्य लोगों से अलग श्रेष्ठ मानव की कोटि में लाकर खड़ा कर देता है। धनी व्यक्ति बनना सरल है, परन्तु श्रेष्ठ मानव बनना बहुत कठिन है। इसके लिए त्याग, संयम और उदारता की आवश्यकता पड़ती है, जो इनमें कूट-कूट कर भरी हुई है। परोपकार भावना के क्षेत्र में अपने सीमित साधनों के बावजूद ये असीम हैं। ये धन को भोग विलास एवं एश्वर्य का साधन नहीं मानते। वास्वत में ये धन का उपयोग करते हैं, उपभोग नहीं जबकि अधिकांश लोग स्वयं तक, या अधिक से अधिक परिवार तक ही सीमित रहते हैं। ये ग़रीबों और बेसहारा लोगों को निःशुल्क दवाई देते हैं तथा सभी के दुःख-दर्द में सम्मिलित होते हैं। केवल इतना ही नहीं, इन्होंने पिताजी के निर्देशानुसार सभी भाई-बहनों के प्रति अपने दायित्वों का भली-भांति निर्वहन किया है। आज के युग में कहाँ मिलते हैं ऐसे त्यागी व्यक्ति? शायद ढूंढने से भी नहीं मिलते।

सन् १९९२ से हिसार में स्थायी रूप से आगमन के पश्चात् डॉ॰ सारस्वत की सामाजिक, साहित्यिक तथा धार्मिक गतिविधियों को और अधिक विस्तार एवं बल मिला है। साहित्य-सेवा के क्षेत्र में आज वे सर्वाधिक सक्रिय हैं तथा इनकी ख्याति उत्तरोतर चर्मोत्कर्ष पर है। पहले 'रसराज केन्द्र' के प्रधान और अब साहित्य के शिखर पुरुष राज्यकवि उदायभानु हंस जी की छत्र-छाया में 'साहित्य कला संगम' के प्रधान के रूप में जिस लगन एवं निष्ठा से सेवारत हैं, उससे इनकी क्षमताओं तथा बहुआयामी व्यक्तित्व का पता चलता है। इसके साथ ही वे अत्यन्त सरल, सहज, सभ्य, सौम्य, सौजन्य, स्नेह तथा सद्भाव की सजीव प्रतिमा हैं।

सबसे बड़ा गुण, जो इनमें देखने को मिलता है, वह है — समन्वयवादी दृष्टिकोण। कट्टरता एवं संकीर्णता से कोसों दूर रहते हैं। धर्म-विज्ञान, आसक्ति-विरक्ति, अध्यात्म-भौतिकता, गांधीवाद-समाजवाद, आधुनिक-प्राचीन, इन सभी का समन्वय इनके जीवन में मिलता है। सद्गृहस्थी होते हुए भी सन्त हैं; सीमित होते हुए भी अनन्त हैं। संसार में रहते हुए भी संसार से अलग दिखाई देते हैं —

दुनिया में हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं हूँ।
बाज़ार से गुज़रा हूँ, ख़रीदार नहीं हूँ।।

अन्त में हम उन सभी लेखकों, कवियों, शुभचिन्तकों और परिजनों के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं भेज कर हमें अनुगृहित किया है। स्वनाम-धन्य राज्यकवि उदयभानु हंस जी की महती भूमिका को कैसे भुलाया जा सकता है, जिनके मार्गदर्शन में ही यह सब कुछ सम्भव हो सका है। परम आदरणीय पं. मदन गोपाल जी शास्त्री ने भी समय-समय पर अपने अमूल्य सुझावों से हमें कृतार्थ किया है। हम ओजस्वी आर्ट प्रेस के प्रति भी अपना आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

हमें पूरा विश्वास है कि यह अभिनन्दन ग्रन्थ भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत सिद्ध होगा।

रघुवीर 'अनाम'
रघुनाथ 'प्रियदर्शी'

मंगल कलश

अनुक्रम :

1.	मधुपर्क	7-24
2.	जीवन परिचय	25-40
3.	स्वस्ति वाचन	41-130
4.	अक्षत चन्दन	131-170
5.	कविताञ्जलि	171-194
6.	चित्रावली	- -
7.	चिन्तन के क्षण	195-210
8.	स्वास्थ्य दर्पण	211-222
9.	भजन-गीत	223-234

1

मधुपर्क

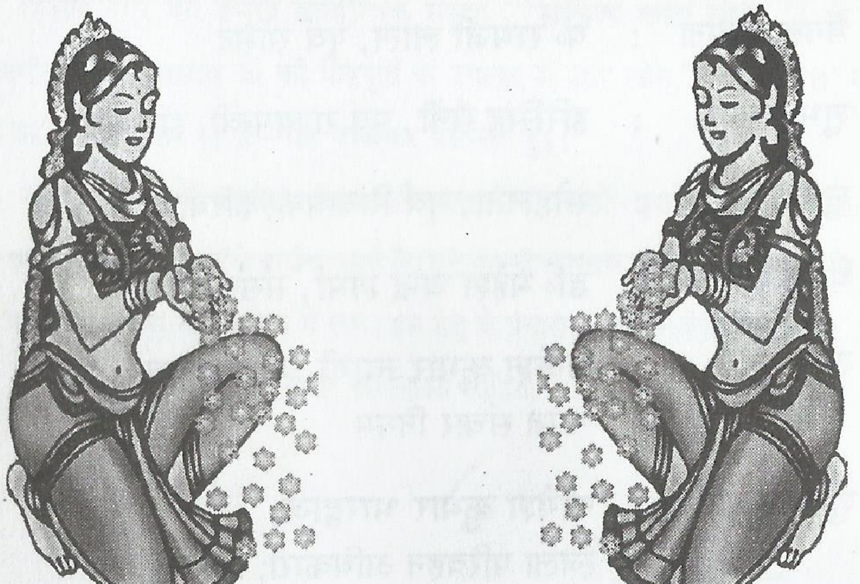

विषय सूची

1	शुभ आशीर्वाद	:	**मृत्युंजय शर्मा- मथुरा**	9
2	शुभ सन्देश	:	**कुमारी शैलजा,** केन्द्रीय राज्य मंत्री	10
3	शुभ सन्देश	:	**भजन लाल,** पूर्व मुख्य मंत्री, हरियाणा	11
4	शुभ सन्देश	:	**ओ.पी. जिन्दल,** ऊर्जा मंत्री, हरियाणा	12
5	मंगल कामना	:	**प्रो. सम्पत सिंह,** पूर्व वित्त मन्त्री, हरियाणा	13
6	शुभ सन्देश	:	**सुभाष गोयल,** पूर्व राज्य मंत्री, हरियाणा	14
7	शुभकामनाएँ	:	**डॉ० एम.एल. रंगा,** पूर्व राज्यमंत्री, हरियाणा	15
8	शुभ सन्देश	:	**डॉ० एम.के. मिगलानी,** कुलपति हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार	16
9	मंगल कामना	:	**पं० रामजी लाल,** पूर्व सांसद	17
10	शुभकामना	:	**हरिसिंह सैनी,** पूर्व राज्यमन्त्री, हरियाणा	18
11	शुभकामना	:	**स्नेहलता,** पूर्व विधायक, हरियाणा	19
12	मंगल कामना	:	**डॉ० महेश चन्द्र शर्मा,** संसद सदस्य	20
13	शुभ सन्देश	:	**राकेश कुमार त्यागी,** महाप्रबन्धक भारत संचार निगम	21
14	शुभकामनाएँ	:	**योगेश कुमार भारद्वाज,** ज़िला परिवहन अधिकारी, हिसार	22
15	शुभकामनाएँ	:	**सतबीर वर्मा,** पूर्व चेयरमैन पिछड़ा वर्ग आयोग, हरियाणा	23
16	शुभ सन्देश	:	**मुकेश सेठी,** पूर्व अध्यक्ष नगर सुधार मण्डल, हिसार	24

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्
सत्यं शिवं सुन्दरम्
फोनः ४०३९४०
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा
नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का रचनात्मक अभियान

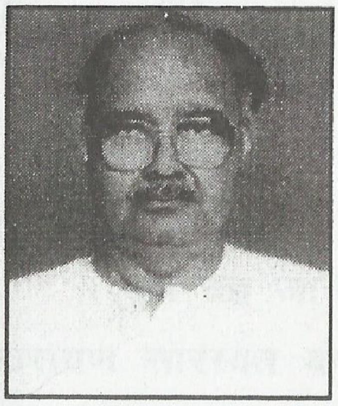

शुभ आशीर्वाद

हमारे आत्मीय बन्धु,

हिसार नगर की प्रमुख साहित्यिक संस्था ''साहित्य कला संगम'' के प्रधान डॉ. लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष में आप लोग 'मंगल कलश' नामक पुस्तक का प्रकाशन कर रहे हैं—यह जान कर प्रसन्नता हुई।

षष्टिमूर्ति के सभी कार्यक्रम दिव्य वातावरण में संपन्न हों- इस हेतु गायत्री माता, पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी से प्रार्थना करते हैं। डॉ. लक्ष्मी नारायण जी दीर्घजीवी हों और उनके जीवन का प्रत्येक क्षण समाजसेवा में लगे। इस हेतु वे प्रयासरत रहेंगे—ऐसी आशा है।

मंगल कामनाओं सहित,

आपका भाई

(मृत्युंजय शर्मा)

कुमारी सैलजा
KUMARI SELJA

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
शहरी रोजगार एवं गरीबी उपशमन
भारत सरकार
निर्माण भवन, नई दिल्ली-110011
MINISTER OF STATE (I/C)
FOR URBAN EMPLOYMENT & POVERTY ALLEVIATION
GOVERNMENT OF INDIA
NIRMAN BHAWAN, NEW DELHI-110011

शुभ-सन्देश

मुझे जानकर अति प्रसनन्ता हुई कि ''डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत अभिनन्दन समिति'', हिसार द्वारा 'साहित्य कला संगम' के प्रधान डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में 'मंगल-कलश' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

डा० सारस्वत का समाज सेवा, धर्म सेवा तथा साहित्य सेवा में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे विनम्रता, सरलता एवं सौजन्य की मूर्ति हैं तथा प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित वरिष्ठ नागरिक हैं।

मैं डा० लक्ष्मीनारायण 'सारस्वत' अभिनन्दन समिति से जुड़े सभी समाज सेवियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ तथा 'मंगल-कलश' के प्रकाशन की सफलता की कामना करती हूँ।

(कुमारी सैलजा)

ओ. पी जिन्दल

ऊर्जा मंत्री, हरियाणा

शुभ-सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत के जीवन पर 'मंगल-कलश' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। बुद्धिजीवी यह कार्य कर रहे हैं। मैं उन्हें बधाई देना चाहता हूँ।

समाज सेवा में समर्पित योग्य चिकित्सक डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत बहुत सज्जन, मृदुभाषी एवं सादगी की प्रतिमूर्ति हैं। आध्यात्मिक और पुरुषार्थी व्यक्ति हैं। इनसे मेरा बहुत पुराना संबंध है। अच्छे वक्ता भी हैं। हमारी फैक्ट्री के कर्मचारी भी इनसे चिकित्सा लाभ लेकर प्रशंसा करते रहते हैं।

मेरी भगवान से प्रार्थना है कि डा० सारस्वत को स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन प्रदान करें ताकि लम्बे समय तक समाज की सेवा कर सकें।

ओ. पी जिन्दल

Phones : 2743666
2741426

हरियाणा प्रदेश काँग्रेस (आई) कमेटी
HARYANA PRADESH CONGRESS (I) COMMITTEE
140, SECTOR 9-B, CHANDIGARH

BHAJAN LAL
PRESIDENT

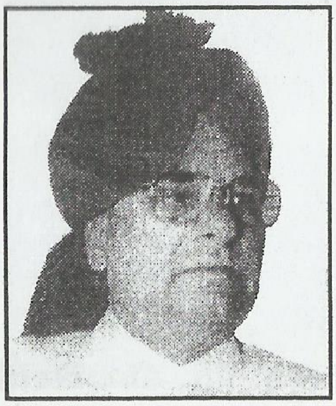

शुभ-सन्देश

मुझे जानकर बहुत ख़ुशी हुई है कि ''डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत'' के जीवन पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ 'मंगल-कलश' का प्रकाशन किया जा रहा है। डा० सारस्वत को मैं बहुत समय से जानता हूँ। ये बड़े ही सरल स्वभाव के हैं तथा इनका जीवन बहुत ही सादगी -पूर्ण रहा है। अच्छे चिकित्सक होने के नाते मेरे हलके के लोग भी, इनकी प्रायः प्रशंसा करते रहते हैं।

इनकी षष्टि-पूर्ति पर हार्दिक बधाई देता हूँ। इनके सुदीर्घ जीवन तथा सुख-स्वास्थ्य की मंगल कामना करता हूँ ताकि लम्बे समय तक जन-सेवा करते रहें।

आपका,

(भजन लाल)

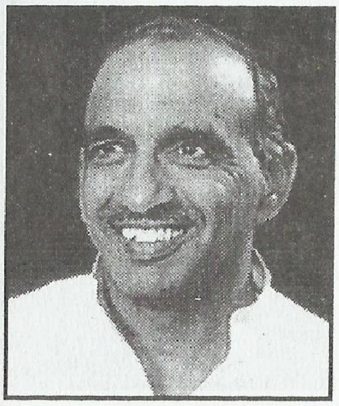

प्रो. सम्पत सिंह

पूर्व वित्त, योजना एवं संसदीय कार्य मन्त्री,

चण्डीगढ़, हरियाणा।

मंगलकामना

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसनन्ता हुई कि डा० लक्ष्मी नारायण 'सारस्वत' अभिनन्दन समिति, हिसार द्वारा इस वर्ष प्रमुख साहित्यिक संस्था 'साहित्य कला संगम' के प्रधान डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में 'मंगल-कलश' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की जा रही है तथा उनके अभिनन्दन के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन भी हो रहा है।

डा० सारस्वत समाज, धर्म तथा साहित्य के उत्थान के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व के अभिनन्दन के लिए एक विशेष पुस्तक का प्रकाशन करना एक सराहनीय प्रयास है, जो निश्चय ही अन्य लोगों को न केवल इनके जीवन के बारे में जानकारी देगा, बल्कि उन्हें प्रेरित भी करेगा।

मैं 'मंगल-कलश' के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

सम्पत सिंह

सुभाष गोयल

अ० स० पत्र क्र० ......6678/

पूर्व राज्य मन्त्री, नगर विकास,
हरियाणा, चण्डीगढ।

दिनांक 16/11/7

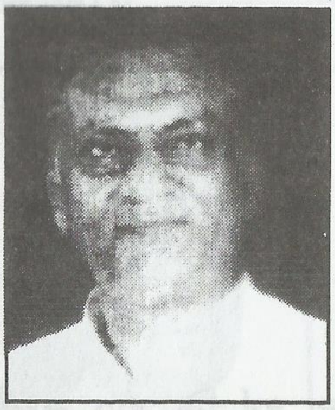

शुभ-सन्देश

हर्ष का विषय है कि "साहित्य कला संगम" के प्रधान और चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े डा0 लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में एक पुस्तक "मंगल कलश" का प्रकाशन किया जा रहा है।

चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े डा0 लक्ष्मी नारायण सारस्वत का योगदान समाज सेवा, धर्म सेवा तथा साहित्य सेवा में महत्वपूर्ण है। वे विनम्रता, सरलता और कर्मठता के धनी, हंसमुख एवं प्रतिष्ठित नागरिक हैं। उनको विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से सुशोभित किया जाना व अनेक संस्थाओं से जुड़ा होना उनकी लोकप्रियता व कार्यों को स्वयं प्रकट करता है कि वे एक महान समाज सेवी हैं।

मैं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली पुस्तक "मंगल कलश" के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

सुभाष गोयल

(सुभाष गोयल)

डा० एम० एल० रंगा

पूर्व राज्य मंत्री

स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा एवं

आयुर्वेद विभाग, हरियाणा, चण्डीगढ़

शुभकामनाएँ

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि ज़िला हिसार की प्रमुख साहित्यिक संस्था 'साहित्य कला-संगम' अपने प्रधान डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में 'मंगल-कलश' नामक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रही है।

चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े डॉक्टर सारस्वत का योगदान समाजसेवा, धर्मसेवा तथा साहित्य-सेवा में महत्वपूर्ण है। वे विनम्रता, सरलता एवं सौजन्य की मूर्ति हैं तथा हँसमुख, मधुरभाषी, सन्त स्वभाव, अत्यन्त लोकप्रिय, प्रसिद्ध एवं वरिष्ठ नागरिक हैं।

उन्होंने परिवार कल्याण के कार्यक्रम में रुचि लेते हुए अस्पताल में समय-समय पर शिविर लगवा कर लगभग २० हज़ार नसबंदी एवं नलबंदी शल्यकर्म करवाए तथा सदैव ग़रीबों एवं दलितों को निःशुल्क दवाइयाँ वितरित की। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय योगदान देने वाले ऐसे लोकप्रिय व्यक्तित्व का सार्वजनिक अभिनन्दन समाज के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

मैं इस शुभ अवसर पर 'मंगल-कलश' पुस्तक के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

एम० एल० रंगा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
हिसार-125 004 (हरियाणा), भारत

एम. के. मिगलानी
आई.ए.एस (सेवानिवृत्त)
कुलपति

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा0 लक्ष्मीनारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में *साहित्य कला संगम* द्वारा "मंगल कलश" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है । षष्टिपूर्ति निःसंदेह जीवन का एक विशेष पड़ाव होता है । ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर यादगार और योगदान को समर्पित पुस्तक का प्रकाशन किया जाना वास्तव में संतोषजनक है । इस सूझबूझपूर्ण कदम के लिए अभिनंदन समिति बधाई की पात्र है । "मंगल कलश" के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए आशा करता हूं कि उक्त पुस्तक सभी युवाओं, बुजुर्गों के लिए तो प्रेरणादायक सिद्ध होगी ही, साथ में बीते युग और आने वाले समय के बीच एक उज्ज्वल कड़ी का काम भी करेगी ।

डा0 लक्ष्मीनारायण सारस्वत एक चिकित्सक, साहित्यकार व समाजसेवी के साथ-साथ स्वयं में एक संस्था हैं । आज पूरा समाज, विशेषकर बुद्धिजीवी वर्ग जानता है कि अपने विद्यार्थी जीवन से ही डा0 सारस्वत पूरी लग्न व निष्ठा से मानव कल्याण तथा पूरे समाज के बौद्धिक व भौतिक विकास से जुड़े कार्यों का तत्परता से निर्वहन करते आए हैं । उन्होंने सादा जीवन जीया है और अपने बौद्धिक कार्यो द्वारा समाज विकास में रचनात्मक योगदान दिया है । अपने व्यक्तिगत जीवन में, मैं कई अवसरों पर डा0 सारस्वत से मिला हूं । मुझे लिखते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है कि मैंने बातचीत के हर अवसर पर डा0 सारस्वत को समाज के भौतिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास के प्रति मननशील व प्रयत्नशील पाया है । मैं हर बार उनके विचारों से प्रभावित हुआ हूं । आधुनिक विकास के नाम पर आज हमारे समाज में जो कुरीतियां फैल रही हैं, उनके निवारण के लिए डा0 सारस्वत जैसे आदर्श व्यक्ति के पथ-प्रदर्शन की समाज को हमेशा ज़रूरत रहेगी ।

मैं इस शुभ अवसर पर डा0 सारस्वत के स्वस्थ, सम्पन्न व दीर्घ जीवन की कामना करता हूं और अभिनंदन समिति को इस सद्प्रयास के लिए पुनः बधाई देता हूं ।

प्रकाशन की सफलता की कामनाओं सहित,

शुभाकांक्षी

(एम. के. मिगलानी)

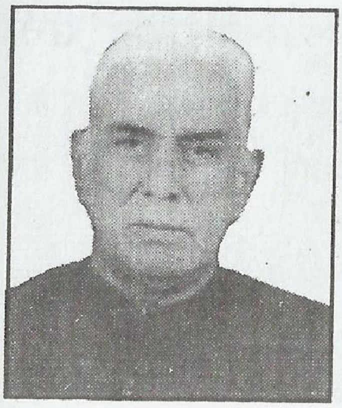

पं. रामजीलाल

पूर्व सांसद (राज्य सभा)

मंगलकामना

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत से मेरा परिचय काफी पुराना हैं। पूर्व मन्त्री चौधरी भजनलाल जी के यहां प्रायः मिलते रहते हैं। समाजसेवी लालमण आर्य के साथ भी कई बार मिले हैं।

डा० सारस्वत शहर के प्रतिष्ठित एवं सर्वप्रिय चिकित्सक हैं। आर्य समाज के प्रोग्राम में भी अभिरुचि लेकर जन-सेवा के कार्य करते रहते हैं। जब आपसे विचारों का आदान-प्रदान होता हैं तो ऐसा लगता है कि आप सौम्य, निराभिमान व भारतीय संस्कृति के पोषक हैं।

आपके सुस्वास्थ्य एवं चिरायु की मंगलकामना करता हूँ।

रामजीलाल

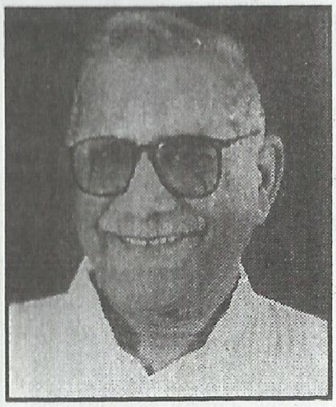

हरिसिंह सैनी

पूर्व राज्यमन्त्री, हरियाणा सरकार

प्रधान, आर्य समाज, हिसार

शुभकामना

'साहित्य कला संगम' द्वारा डा० एल. एन. सारस्वत के सम्मानार्थ 'मंगल-कलश' का प्रकाशन एक अद्वितीय एवम् सराहनीय क़दम है।

डा० सारस्वत की निजी ज़िन्दगी एक खुली किताब है जो समाज के विभिन्न रंगों को छूती हुई परोपकारी भाव से ओत-प्रोत है। यह गति सौ वर्ष तक निरन्तर चलती रहे, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना हैं।

डा० सारस्वत साहित्य में विशेष रुचि रखते हैं तथा राज्यकवि उदयभानु हंस जी के प्रति श्रद्धाभाव रखते हैं। इसके साथ-साथ उच्च कोटि के समाजसेवी हैं। समाज के दीन-हीन वर्ग की सेवा एवं सहायता में सदैव लीन रहते हैं।

मैं उन्हें इस शुभावसर पर बधाई देते हुए गर्व का अनुभव कर रहा हूँ तथा उनके प्रति मंगल भावों को उजागर करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

हरिसिंह सैनी

स्नेहलता

पूर्व विधायक, हरियाणा

मॉडल टाउन, हिसार

शुभकामना

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर अभिनन्दन-ग्रंथ के प्रकाशन का समाचार पढ़कर बहुत प्रसनन्ता हुई। समिति के सभी सदस्यों को इस मंगल कार्य के लिये बधाई देती हूँ।

डा० सारस्वत को मैं बहुत समय से जानती हूँ। ये योग्य चिकित्सक के साथ-साथ साहित्य प्रेमी भी हैं। सज्जनता, योग्यता एवं श्रेष्ठ गुणों के कारण इनकी छवि हिसार में लोकप्रिय है। इनका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। एक प्रसिद्ध एवं सुयोग्य आयुर्वेदिक डॉक्टर तथा मानवीय गुणों के धनी डा० सारस्वत हिसार की अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं साहितियक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

मैं इनके दीर्घ जीवन की कामना करती हूँ तथा इनके परिवार में सुखशान्ति बनी रहे, यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।

स्नेहलता

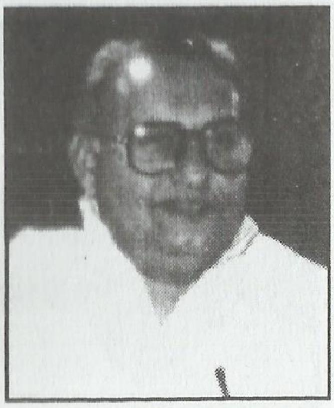

डा० महेश चन्द्रशर्मा

संसद सदस्य

चेयरमैन, एकात्म मानवदर्शन अनुसंधान

एवम् विकास प्रतिष्ठान

मंगल-कामना

आदरणीय डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत के सारस्वत व्यक्तित्व के अभिनंदनार्थ, अभिनंदनीय 'मंगल-कलश' पुस्तक प्रकाशन के सार्थक उपक्रम के लिए बधाई एवं मंगल कामनाएँ।

डा० लक्ष्मी नारायण जी का बहुमुखी कर्तृत्व संजीदा एवं सम्प्रेरक है तथा अभ्युदय एवं निश्रेयस का वाहक है। साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों का मंजुल सामंजस्य किसी एक ही व्यक्तित्व में प्राप्त होना, अलभ्य होता है। डा० लक्ष्मीनारायण जी एक आपवादिक व्यक्तित्व है, जो इतनी सांगोपांग रीति से कुसुमित हुआ है।

षष्टिपूर्ति के पावन अवसर पर 'जीवेत शरदः शतम्' की शुभाकांक्षा के साथ, उनका अभिवादन एवं समारोह एवं प्रकाशन-संयोजन की समुचित योजना के लिए आप सभी वरिष्ठजनों का बहुत बहुत अभिनन्दन।

महेश चन्द्रशर्मा

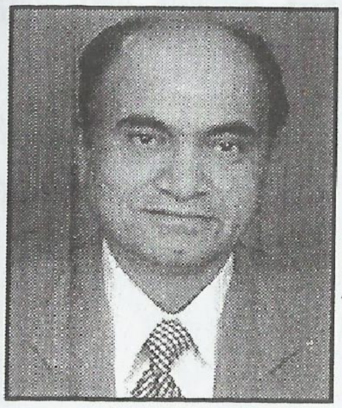

राकेश कुमार त्यागी
महाप्रबन्धक
भारत संचार निगम लि.
दूरसंचार, हिसार

शुभसन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि हिसार के सुयोग्य एवं सुप्रसिद्ध समाज सेवी, चिकित्सक डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

डा० सारस्वत को मैं बहुत लम्बे समय से जानता हूँ। ये अनेक संस्थाओं के माध्यम से जनसेवा का कार्य कर रहे हैं। मैं संक्षेप में यही कहना चाहूँगा कि डा० सारस्वत सभ्य, शालीन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि इसी प्रकार सेवा कार्य करते हुए इनका स्वास्थ्य अच्छा रहे व दीर्घायु प्राप्त करें।

राकेश कुमार त्यागी

योगेश कुमार भारद्वाज
एच. सी. एस.
ज़िला परिवहन अधिकारी
हिसार

शुभकामनाएँ

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि 'साहित्य कला संगम' के प्रधान डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में अभिनन्दन समिति द्वारा 'मंगल-कलश' पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। डा० सारस्वत जी से मेरा लगभग तीन वर्ष से परिचय है। वे अति सरल, विनम्र, समाजसेवी तथा मृदुभाषी हैं। जो व्यक्ति उनके सम्पर्क में एक बार आ जाता है, हमेशा उनसे जुड़ जाता है। पेशे से तो वे चिकित्सक हैं ही, परन्तु साहित्य-कला के भी धनी हैं।

मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की हृदय से कामना करता हूँ तथा उनके सार्वजनिक अभिनन्दन के उपलक्ष्य में 'मंगल कलश' के प्रकाशन पर भी हार्दिक बधाई देता हूँ।

योगेश कुमार भारद्वाज

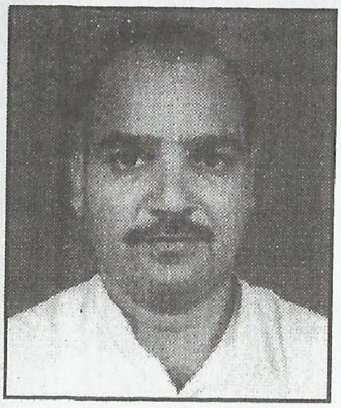

सतबीर वर्मा

पूर्व चेयरमैन पिछड़ा आयोग
हरियाणा सरकार
चण्डीगढ़

शुभकामनाएँ

वही व्यक्ति इस धरा पर सम्मान के अधिकारी होते हैं जो सामाजिक चिन्तन और दिल में बसी पर-हित कामना को उज्ज्वल बनाते हैं। दीन-हीन के घर में सवेरा हो, इस बात का ख़्याल रखते हैं। इन्हीं गुणों को अपने में समेटे डा० एल. एन. सारस्वत विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और संवेदनशील साहित्यानुरागी हैं। मान्यवर राज्यकवि उदयभानुहंस के दिव्य रूप को मैंने इनमें देखा है। एक कवि ने कहा है :-

पीर-पराई जो लखें, आँखें वे उजियार
दीन-हीन की सेवा में, ज्योति-पर्व संचार

इन्ही भावों को लिए मैं 'साहित्य कला संगम' तथा अभिनन्दन समिति के आयोजकों को बधाई देते हुए डॉक्टर सारस्वत की शतायु हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे सदा स्वस्थ रहें।

सतबीर वर्मा

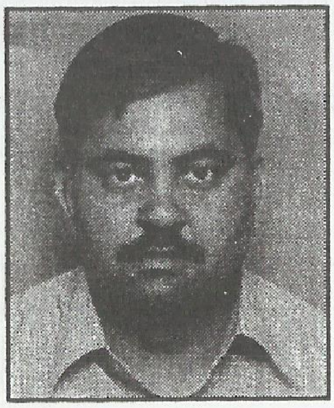

मुकेश सेठी
पूर्व अध्यक्ष
नगर सुधार मण्डल
हिसार

शुभसन्देश

यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि सुप्रसिद्ध चिकित्सक एवम् प्रख्यात समाजसेवी डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत के सम्मान में 'मंगल-कलश' पुस्तक का प्रकाशन हो रहा है।

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत इस क्षेत्र की महान विभूति हैं और उनकी महत्वपूर्ण सेवाएँ समाज एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

डा० साहब सरलता एवम् सज्जनता की मूर्ति हैं। मैं इनकी षष्टिपूर्ति के सुअवसर पर इन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना है कि वे दीर्घायु हों जिससे समाज की लम्बे समय तक सेवा कर सकें।

मुकेश सेठी

2

जीवन परिचय

विषय सूची

1.	एक सात्विक सारस्वत ब्राह्मण	:	**पं० मदनगोपाल शास्त्री** अध्यक्ष, डॉ० एल.एन. सारस्वत षष्टिपूर्ति अभिनन्दन समिति, हिसार	27
2.	एक यशस्वी एवं कमर्ठ व्यक्तित्व	:	**नरेन्द्र कश्यप** सचिव, डॉ० एल.एन. सारस्वत षष्टिपूर्ति अभिनन्दन समिति, हिसार	30
3.	उपलब्धियाँ			38

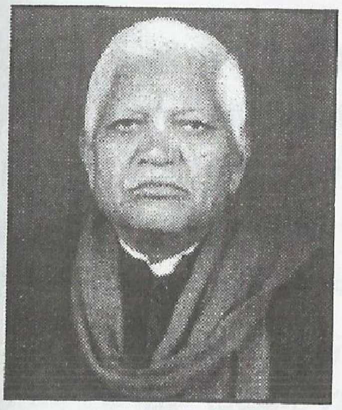

पण्डित मदनगोपाल शास्त्री
वरिष्ठ साहित्यकार एव अध्यक्ष
डा० एल० एन० सारस्वत षष्टिपूर्ति अभिनन्दन समिति,
हिसार

एक सात्विक सारस्वत ब्राह्मण

ब्राह्मण समुदाय की गणना करते समय सारस्वत ब्राह्मणों का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। प्राचीन पावन सरस्वती नदी जिस क्षेत्र में बहती थी उसे ब्रह्मावर्त, ब्रह्मवेदी, सप्तसिन्धु तथा धर्म क्षेत्र आदि नामों से पुकारा जाता था। यह मान्यता है कि ऋषियों ने वेदों का ज्ञान इसी क्षेत्र में सुना था तथा यहीं पर वेदाङ्गों व उपनिषदों आदि अनेक धर्मग्रंथों की रचना हुई थी। ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के वरदपुत्र होने तथा सरस्वती नदी के तटों पर रहने से इन ब्राह्मणों को सारस्वत संज्ञा दी गई थी।

सरस्वती नदी के लुप्त हो जाने पर सारस्वत ब्राह्मण यत्र तत्र अन्य नदियों के तटों पर चले गये। इनमें शुक्ल-यजुर्वेद की मग्ध्यन्दनी शाखा, कात्यायन श्रौत्र तथा पारस्कर गृह्य सूत्र से सम्बन्धित कौशिक गोत्रीय सारस्वत ब्राह्मणों का एक परिवार यमुना नदी के तट पर वृन्दावन में जाकर रहने लगा था। उसे चारों वेदों का ज्ञाता होने के कारण 'चतुर्वेदी' उपनाम भी मिल गया था। यह परिवार वेदों के अतिरिक्त धर्मशास्त्र, ज्योतिष, कर्मकाण्ड तथा आयुर्वेद में भी पारङ्गत था।

हरियाणा निवासी एक धार्मिकवृत्ति का सिहाग गोत्रीय किसान तीर्थ यात्रा तथा गिरिराज की परिक्रमा करने हेतु वृन्दावन जाता रहता था। देवयोग से उस किसान परिवार का वहां के सारस्वत ब्राह्मण परिवार से परिचय हो गया जो कालान्तर में प्रगाढ़ होता चला गया। किसान परिवार के आग्रह पर पण्डित सतराज ऋषि नामक एक ब्राह्मण उसके साथ सिवानी गांव में आकर बस गया। सिहाग ने उसे आवास तथा भूमि देकर सम्मानित किया और वह परिवार सिहागों का पुरोहित बन गया। यह सिवानी गांव राष्ट्रीय राजपथ नम्बर १० पर अग्रोहा से उत्तर की ओर हिसार भूना मार्ग पर स्थित है।

कहा जाता है कि इस गांव का शुद्ध नाम शिवानी था। इस विषय मैं एक किंवदन्ती भी सुनी जाती है। लोक-चर्चा के अनुसार एक बार भगवान शिव और शिवानी (पार्वती) इस क्षेत्र में वेश बदल कर पैदल भ्रमण कर रहे थे। अपनी धुन में मस्त भगवान शंकर तो चलते रहे और माता पार्वती एक तालाब के तट पर पीपल की छाया में विश्राम करने के लिए बैठ गई। उस स्थान पर पहले ही एक घुमन्तु किसान परिवार डेरा डाले हुए था। उस परिवार के पुरुष तो पशुओं को चराने के लिए दूर निकल गये थे, किन्तु उनके बाल-बच्चे व स्त्रियाँ वहीं पर बैठे थे। उन देवियों ने आगन्तुक पार्वती माँ को जलपान के पश्चात् दूध भी पीने को दिया। उनकी आवभगत से प्रसन्न माँ पार्वती वहीं पर बैठी रही।

भगवान शंकर ने कुछ दूरी पर जा कर ध्यान दिया कि पार्वती जी तो कहीं पीछे छूट गई हैं। शंकर जी भी एक वृक्ष की छाया में बैठ कर उनकी प्रतीक्षा करने लगे। तभी उनका ध्यान समीप ही ध्वस्त हुई एक बस्ती की ओर गया। यह स्थान आजकल सिवानी व किरमारा गांवों के बीच में है और यहां पर एक पुराना शिवालय भी बना हुआ है। यहां प्रत्येक शिवरात्रि को मेला लगता है तथा भक्तजन कांवड़ों में गंगाजल लाकर उसे शिवलिंग पर चढ़ाते हैं।

जब पार्वती जी वहां नहीं पहुँची तो शिवजी महाराज उनकी खोज में वापिस चल पड़े और देखा कि पार्वती जी स्त्री सुलभ स्वभाव के कारण बच्चों के लाड़ प्यार में संलग्न हैं। तभी पार्वती जी ने भी भगवान को वहां पहुँचा देख लिया और जब वह उठ कर चलने लगी तो उन स्त्रियों ने उनके चरण छूकर उन्हें विदाई दी। तब माता ने उन्हें वहीं पर बसने व सदा सुखी रहने के ढेरों आशीर्वाद दिये और वहीं पर सिवानी गांव बस गया। इसी सिवानी गांव में वृन्दावन से आकर बसे सारस्वत कुल में १८ सितम्बर सन् १९४३ को सज्जनता व विनम्रता की प्रतिमूर्ति डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी का जन्म हुआ।

डा० सारस्वत के प्रपितामाह पंडित वंशीधर इस क्षेत्र के जाने माने संस्कृत विद्वान थे। उनकी हस्तलिखित पाडुंलिपियां अभी तक सुरक्षित हैं। उनके पुत्र पं. देवीदयाल के यहां डा० सारस्वत जी के पूज्य पिता पं. सीताराम जी उत्पन्न हुए, जिन्होंने सेना में भर्ती होकर राष्ट्र की सेवा की थी। उन्होंने अपनी सन्तति को सुशिक्षित किया तथा अपने संस्कारों में आप्लावित किया। डा० सारस्वत जी ने अपने

पैतृक गांव में प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करके नहला से मैट्रिक तथा सरदारशहर (राजस्थान) से भिषगाचार्य (बी. ए. एम. एस.) पास करके राजस्थान के आयुर्वेद विभाग में लगभग तीन दशकों तक चिकित्सा सेवा करके ख़ूब नाम कमाया।

डा० सारस्वत के एक भाई खुशीराम हरियाणा में एम. बी. बी. एस. डॉक्टर थे, जो असमय में स्वर्गवासी हो गये। उनका इकलौता पुत्र भी एम. एस. डॉक्टर (नेत्र विशेषज्ञ) है। अन्य दो छोटे भाई श्री देवेन्द्र सारस्वत तथा श्री राधेश्याम चतुर्वेदी क्रमशः इन्जीनियर तथा अधिवक्ता हैं। इनकी इकलौती बहिन प्रेमलता जी डा० ओमप्रकाश जी शर्मा सारस्वत से विवाहित हैं। डा० ओमप्रकाश सेवा निवृत्त सत्र-न्यायधीश है तथा अखिल भारतीय न्यायधीश संघ के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। इस प्रकार डा० सारस्वत जी का परिवार सुशिक्षित एवं सुव्यस्थित परिवार है।

राजस्थान आयुर्वेद विभाग से प्रथम श्रेणी के आयुर्वेद अधिकारी के पद से सेवानिवृत्ति लेकर डॉक्टर सारस्वत आजकल डाबड़ा चौक हिसार में अपना निजी चिकित्सालय चला रहे हैं। डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी पूर्व में अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष रह चुके हैं तथा वर्तमान में 'साहित्य कला संगम' तथा विद्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल हिसार के अध्यक्ष हैं। ये नेशनल इंटीग्रेटिड मैडिकल एसोसियेशन के संरक्षक तथा अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार की स्थानीय शाखा के दृढ़स्तम्भ हैं।

आपको अपने जीवन में अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है। उन सम्मानों का सम्पूर्ण विवरण लिखना कठिन है। उनमें राजस्थान संस्कृत सम्मेलन, निदेशक राजस्थान आयुर्वेद विभाग, दूरदर्शन नई दिल्ली, ब्राह्मण सभा हिसार तथा दलित साहित्य अकादमी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपको अमेरिका की ए.वी.आई. संस्था द्वारा ''मैन ऑफ दा इयर'' भी घोषित किया जा चुका है। आप इतने विनम्र एवं मधुरभाषी हैं कि आपको इन गुणों का अप्रतिम उदाहरण माना जाता है।

आपके बहुमुखी व्यक्तित्व तथा अनेक परोपकारी क्रियाकलापों से प्रभावित होकर ही इन्हें यह अभिनन्दन ग्रन्थ भेट किया जा रहा है। हम सभी इनके सुन्दर स्वास्थ्य एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं, जिससे समाज की भलाई हो सके और दूसरे लोग भी इनके जीवन से प्रेरणा ले सकें।

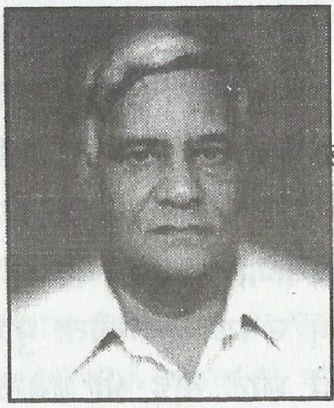

नरेन्द्र कश्यप

कार्यकारी अधिकारी, टी.टी.सी. एवम् सचिव

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत अभिनन्दन समिति, हिसार

एक यशस्वी एवं कर्मठ व्यक्तित्व

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी से मैं पहली बार राज्यकवि उदयभानु हंस जी के निवास पर मिला। इनके सशक्त व्यक्तित्व के आकर्षण ने मुझे इतना प्रभावित किया कि इसके बाद तो मैं इनसे बार-बार मिलने का मोह नहीं त्याग सका। इनकी सज्जनता सरलता, सौम्यता तथा शिष्टता ने तो मानों मुझे मोल ही ले लिया। इनकी योग्यता एवं क्षमता को देखकर उदयभानुहंस जी के नेतृत्व में इन्हें 'साहित्य कला संगम' के अध्यक्ष पद पर सुशोभित किया गया। मुझे भी सचिव के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। साथ-साथ काम करते परत-दर-परत इनके जीवन में झाँकने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अनुभव के आधार पर जैसा इन्हें पाया, उसे मैं शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

सुयोग्य एवं कर्मठ व्यक्तित्व के धनी डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत उन श्रेष्ठ चिकित्सकों में से हैं जिन्हें अपने जीवन काल में भरपूर प्रसिद्धि मान-सम्मान, प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता मिली है। वे जहाँ भी रहे अपनी सेवा भावना, बुद्धिमता और कर्त्तव्यपरायणता के कारण सर्वप्रिय होते चले गए।

'अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः' के सिद्धान्त को दृष्टिगगत रखकर ये बुजुर्गों का विशेष मान-सम्मान रखते हुए चिकित्सा क्षेत्र में प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करके भी सहज, सौम्य और विनम्र बने रहे।

इन्होंने विकट परिस्थितियों का सामना किया, कष्ट उठाए तथा जीवन में बहुत संघर्ष किया, परन्तु धैर्य और मानसिक सन्तुलन कभी नहीं खोया। बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़े। ये विनम्रता, सरलता और सौजन्य की प्रतिमूर्ति हैं तथा हँसमुख, मधुरभाषी, सन्तस्वभाव आदि गुणों से सुशोभित हैं। इनको लक्ष्मी और सरस्वती दोनों का ही

वरदान प्राप्त है।

सिवानी बोलान (हिसार) निवासी डा० सारस्वत का जन्म १८ सितम्बर १९४३ तदनुसार आश्विन शुक्ला पंचमी संवत् २००० को अपने ननिहाल धीरवास बड़ा ज़िला चुरू (राजस्थान) में हुआ। इनके नाना विद्वान पंडित एवं ज्योतिषाचार्य थे। उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ उच्च आत्मा ने जन्म लिया है। यह बालक विशेष योग्यता वाला और समाजसेवी होगा। डा० सारस्वत के दादा पं० देवीदयाल कर्मकाण्डी थे, परदादा पं० वंशीधर जी इलाके के माने हुए विद्वान थे, जिनकी हस्त लिखित पुस्तकें आज भी उपलब्ध हैं। भगवान कृष्ण की जन्म स्थली मथुरा नगरी इनका मूलस्त्रोत है। इनका सारस्वत ब्राह्मण, चतुर्वेदी गोत्र तथा कौशिक शासन है।

इनके परिवार की आर्थिक स्थिति साधारण थी। पिता पं० सीताराम सारस्वत हृष्टपुष्ट होने के कारण सुभाषचन्द्र बोस की सेना में कार्यरत् थे। ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा इनके विशेष गुण थे। इन्हीं के कारण दूसरे पुत्र डा० खुशीराम सारस्वत ने बहुत नाम कमाया। हरियाणा के स्वास्थ्य मन्त्री डॉक्टरों की मीटिंग में गर्व के साथ कहते थे और उदाहरण देते थे कि डा० हो तो के. आर. सारस्वत जैसा हो, जिन्होंने वेतन के अतिरिक्त एक रुपया भी अपने जीवन में नहीं लिया।

माता का नाम सरस्वती देवी था, जो सरस्वती माता की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। सभी बच्चों में विद्या पढ़ने के संस्कार जन्म से ही कूट-कूट कर भर दिये थे। सभी को सुशिक्षित नागरिक बनाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया। गाँव में सभी यही कहते थे कि पं० सीताराम का पहला घर है जिन्होंने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाई है।

सन् १९५९ में डा० सारस्वत ने हाई स्कूल नहला से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। सिवानी बोलान से नहला तक पाँच किलोमीटर प्रतिदिन पैदल पढ़ने जाया करते थे। परिवार के धार्मिक संस्कार थे। नहला हाई स्कूल के पास से नहर जाती थी। वहाँ बैठकर प्रतिदिन सुबह गीता के एक अध्याय का पाठ करते थे; और उसके बाद ध्यान लगाना इन्हें बहुत अच्छा लगता था। एक दिन ध्यान के समय ५-७ शरारती छात्र आए, जो नास्तिक थे। मोडा-मोडा- मोडा कहकर उपहास करने लगे। बात हैडमास्टर तक गई तो उन्होंने समझाया कि "ईश्वर भक्ति

से मनुष्य उन्नति करता है। लक्ष्मी नारायण एक दिन अवश्य ही योग्य नागरिक बनेगा।''

'माता निर्मात्री भवति' के अनुसार घर में माता ही परिवार की रीढ़ होती है, घर ही सर्वोत्तम पाठशाला होती हैं। माँ जैसे संस्कार बच्चों में डालती है, वैसे ही परिवार का निर्माण होता चला जाता है। डा० सारस्वत की माँ ने शिक्षा पर विशेष ज़ोर दिया और कहती थीं कि 'बेटा ज़मीन अपने कम है, अतः विद्या पढ़कर अपना जीवन उज्ज्वल बनाओ।'

मैट्रिक उतीर्ण करने के बाद आयुर्वेद विश्व भारती सरदार शहर में प्रवेश दिलाया तो परिवार से एक दम दूर रहने के कारण मन नहीं लगा।

कॉलेज में प्रातः प्रार्थना होती थी *''जयति जय-जय माँ सरस्वती, जयति वीणा धारिणी माँ''* को गाते समय अश्रुओं की धारा बहने लगती थी, क्योंकि इनकी माता का नाम सरस्वती देवी था। घर पत्र लिख दिया कि मेरा मन नहीं लगता। पिता जी फौज की नौकरी में थे। दादा जी को मालूम हुआ कि बच्चे का मन नहीं लगा, तो वापिस लाने के लिए बस अड्‌डे चले गये। इनकी माता को उक्त जानकरी मिली तो वह दादा जी को यह कहकर घर वापिस ले आई कि बच्चे को ज़रूर पढ़ाना है। धीरे-धीरे मन लग जायेगा।

वयोवृद्ध प्रिंसिपल मणिराम शर्मा सरल हृदय एवं विद्वान थे। *''गुरुरेव परम् ब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवे नमः''* की पक्ति को ध्यान रखकर ये प्रायः नौ बजे से रात्रि दस बजे तक इनकी सेवा सुश्रूषा में रहते थे, और वे इन्हें हरमोनियम, तबले पर संगीत का रसास्वादन करवाते थे। कुछ मित्र इसे अच्छा न समझकर, चमचागिरी कहकर, इनका उपहास भी उड़ाते थे।

तीन वर्ष का डिप्लोमा करने के बाद प्रिंसिपल ने विदाई के समय पर कहा कि लक्ष्मी नारायण में सेवा भावना है, अतः यह एक योग्य चिकित्सक बनने में सफल हो सकेगा। जाते-जाते वे यह भी कह गये -''बेटा चिकित्सा क्षेत्र में दो बातों का ध्यान रखना, प्रथम आटे में नमक समावे, इतना ही लाभ लेना। दूसरा बीमारी समझ में न आने पर दूसरे अस्पताल में भेज देना।'' उपरोक्त बातों को ध्यान में रख कर ही इन्होंने सफलता एवं यश प्राप्त किया।

गाँधी विद्या मन्दिर के अन्तर्गत आयुर्वेद विश्व भारती एक उच्च कोटि की संस्था है जिसमें पांच वर्ष तक इनको विद्या अध्ययन का शुभावसर मिला। जहाँ प्रत्येक रविवार को सांय सर्वधर्म प्रार्थना सभा होती थी। सभी छात्रों का उसमें भाग लेना अनिवार्य था। उच्चकोटि के सन्त महात्मा एवं विद्वानों के प्रवचन वहां होते थे, जिससे छात्रों में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण होता था। स्वामी केशवानन्द, रामसुखदास जी, राष्ट्रपति राधाकृष्णन के गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी शरणानन्द जी प्रायः आते रहते थे। इस संस्था का शुभारम्भ भी प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के कर कमलों द्वारा हुआ था। आदर्श सन्त कन्हैयालाल दूगड़ यहां के पथ प्रदर्शक थे।

उक्त आदर्श संस्था में अध्ययन करने के कारण इनके विचारों में और अधिक श्रेष्ठता का समावेश होता चला गया। अतः चतुर्थ एवं पंचम वर्ष में कॉलेज के सर्वोत्तम विद्यार्थी रहे। सर्वाधिक उपस्थिति व खेल में भी विशेष अभिरुचि लेकर सर्वप्रथम रहे। योग्य छात्र होने के कारण समस्त स्टाफ़ इनसे स्नेह रखता था। डा० वेद प्रकाश शर्मा, प्रो० रामावतार शास्त्री का विशेष आशीर्वाद मिला।

सन १९६२ में इनका विवाह पास के ही गाँव नंगथला में श्रीमती परमेश्वरी के साथ कर दिया गया। लड़की कम पढ़ी होने के कारण इन्होंने कालेज से ही माता-पिता को पत्र लिखा कि यह शादी नहीं करवाऊँगा। घर जाने पर इनकी माता ने विशेष ज़ोर देकर कहा - ''बेटा अपनी बिरादरी के प्रमुख ने हमारे पैरों में आकर पगड़ी रख दी है। अब हमारी प्रतिष्ठा तेरे हाथ में है। बेटा, अब हम वचन दे चुके हैं।''

माता के आग्रह को ये टाल नहीं सके और यह शादी हो गई। पत्नी ने सरल, सौम्य और मधुर व्यवाहर के कारण परिवार को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया, अतः सुयोग्य धर्मपत्नी सिद्ध हुई।

आयुर्वेद विश्व भारती के नए प्रिंसिपल एस. एन. बोस का स्नेह, आत्मीयता एवं मार्गदर्शन अतिंम दो वर्ष में विशेष रूप से रहा। आतुरालय में रोगियों के परीक्षण के समय भी वे इन्हें साथ-साथ रखकर चिकित्सा कार्य सिखाते थे। एक दिन उन्होंने कहा ''बेटा लक्ष्मी! डेन्टल फारस्पैस लाओ और मेरा यह दाँत उखाड़ो।'' सभी के सामने शर्मिन्दा सा होकर इन्होंने कहा, ''जी यह मैं कैसे कर सकूँगा। कभी मैंने दाँत को उखाड़ा ही नहीं'', उन्होंने बड़े ही प्यार से समझया कि इस प्रकार

से दाँत उखाड़ते हैं। प्रिंसिपल के दाँत को उखाड़ कर इनका आत्मविश्वास बढ़ा। धीरे-धीरे शल्य चिकित्सा का अनुभव बढ़ने लगा। राजकीय सेवा में भी रसौली निकालकर, डैन्टल व सामान्य सर्जरी करके रोगियों को लाभान्वित किया।

सन् १९६४ में भिषगाचार्य (बी. ए. एम. एस.) की डिग्री उत्तीर्ण करते ही इनकी नियुक्ति परलीका श्री गंगानगर में कर दी गई। नियुक्ति पत्र लेकर वहां पहुँचे तो उनकी आयु इक्कीस वर्ष की थी। वहाँ कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने कहा कि हमारे इतने बड़े कस्बे में आप कैसे सफल होंगे? सेवा निवृत्त होने वाले डा० देशराज से इन्होंने चार्ज लिया था। सेवाभावना, लगन एवं परिश्रम से चिकित्सा-कार्य करके गाँव परलीका में ही नहीं बल्कि आस-पास के अनेक गाँवों में प्रसिद्धि प्राप्त की। चार वर्ष तक रहने के बाद जब गाँव वालों ने इन्हें भावपूर्ण विदाई दी और कहा कि शल्य और काय-चिकित्सा दोनों में निपुण चिकित्सक आप जैसा न तो अभी तक आया और न ही आगे सम्भावना है।

स्वामी केशवानन्द संगरिया वाले आचार्य श्री राम शर्मा मथुरा का साहित्य गाँव-२ जाकर बाँटतें थे व प्रचार किया करते थे। अखंण्ड ज्योति मासिक पत्रिका का सदस्य इन्हें भी बनाया गया। साहित्य से प्रेरित होकर १९६७ में गायत्री तपोभूमि मथुरा जाकर, आचार्य श्रीराम शर्मा से गुरुदीक्षा ली, और कहा कि गुरुदेव ऐसा चाँटा मारो, जिससे समस्त दोष-दुर्गुण भाग जाएं। उन्होंने उच्च आत्मा कहकर प्यार से आर्शीवाद दिया। इनका रोम-रोम पुलकित और प्रफुल्लित होने लगा। नित्य प्रति गायत्री साधना एवं दीप यज्ञ का क्रम चलता रहा।

राजकीय सेवा में प्रवेश करते ही इन्होंने अपने माता-पिता से कहा ''आपने उच्च शिक्षा दिलाकर कर्त्तव्य पूरा किया है, अब आगे मेरा फ़र्ज़ है। आप निश्चिंत होकर ईश्वर की उपासना करें''।

'क्वचिद् धर्मः क्वचिद् अर्थः क्वचिद् यशः। कर्माभ्यासः क्वचिदेति, चिकित्सा नास्ति निष्फला' के अनुसार चिकित्सा कार्य से अर्थ भी आने लगा। सर्वप्रथम गाँव में अच्छा मकान बनाकर अपनी इकलौती बहन प्रेमलता की शादी बड़े धूम-धाम से की। ईश्वर की कृपा से बहुत योग्य वर श्री ओमप्रकाश जी (सैशन जज) मिले। गाँव व

रिश्तेदारी में सभी ने प्रशंसा की।

गाँव शेरड़ा के चिकित्सक का तबादला हो जाने के बाद अच्छे चिकित्सक की तलाश थी। किसी ने इनके नाम का सुझाव दिया। शेरड़ा का अस्पताल एवं निवास स्थान अच्छा बना हुआ होने के कारणा व हिसार के पास होने से इन्होंने शेरड़ा आने की स्वीकृति दें दी। गाँव के सरपंच लालमन आर्य ने निदेशक आयुर्वेद को कहकर इनका स्थानान्तरण परलीका से शेरड़ा (श्री गंगानगर) करवा लिया। यहां भी इन्होंने अपने परिश्रम और योग्यता के कारण सभी के दिलों में विशेष स्थान बना लिया। पांच बार इनका तबादला निरस्त करवाया व बीस वर्ष तक यहां रहे और स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति यहीं से ली।

डा० सारस्वत ने छोटे भाई खुशीराम को एम० बी० बी० एस० में रोहतक मेडिकल कालेज में प्रवेश दिलवा कर डॉक्टर बनाया। फिर गायत्री मिशन के अनुसार नितान्त साधारण तथा आदर्श विवाह के रूप में सिरसा की कुभारी कमलेश के साथ गठबंधन कराया। इनके भी एक बेटा डा० विवेक है जो एम० एस० (आई) में करके देहली कार्यरत् हैं।

छोटे भाई देवेन्द्र को इन्जीनियर की उच्च शिक्षा दिलवाकर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार जाकर आदर्श विवाह किया। पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा तथा माता भगवती देवी के सान्निध्य में विवाह संस्कार हुआ। इस विवाह से प्रसिद्ध समाज सेवी एवं दानवीर लालमन आर्य अत्यन्त प्रभावित हुए; और कहा कि हमने तो केवल प्रचार ही किया है, डा० सारस्वत ने यह सब करके दिख दिया है। पूर्व कृषि मन्त्री ज्ञान सिंह चौधरी ने भी इस विवाह की प्रशंसा की। देवेन्द्र की धर्मपत्नी एक सुयोग्य महिला ही नहीं बल्कि श्रेष्ठ अध्यापिका भी है; जो न्यू यशोदा स्कूल में कार्यरत् है। इसने अभी दिल्ली से राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त किया है। निदेशक यशोदा माथुर जी इसकी योग्यता की प्रायः प्रशंसा करती रहती हैं।

छोटे भाई राधेश्याम एडवोकेट, पुत्र डा० विजय एवं भतीजे डा० विवेक की शादी भी आदर्श विवाह के रूप में करके समाज को नई दिशा दी।

डा० सारस्वत ने १६६२ में कुछ अनिवार्य कारणों से अचानक राजकीय सेवा के राजपत्रित पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति अपने बहनोई श्री ओमप्रकाश शर्मा सेशन जज, जयपुर की सलाह से ले ली। डाबड़ा चौक

हिसार पर एक छोटी सी दुकान किराए पर लेकर अपना निजी चिकित्सा केन्द्र, गायत्री यज्ञ के साथ प्रारम्भ किया। इनके मधुर व्यवहार एवं सस्ती सुलभ चिकित्सा से रोगियों की संख्या और लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। इनकी सदैव यही धारणा रहती है कि सच्चे मन से रोगी की सेवा कभी निष्फल नहीं होती।

इनकी योग्यता एवं सज्जनता से प्रभावित होकर संस्था के सदस्यों ने इनको रसराज केन्द्र हिसार का प्रधान बना दिया। इस संस्था में अनेक साहित्यकार, वरिष्ठकवि एवं बुद्धिजीवी जुड़ते चले गए। विराट कवि सम्मेलनों के माध्यम से जन चेतना एवं राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में भी संलग्न हो गए।

'रसराज केन्द्र, हिसार' ने सन् १९९२ में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त एवं प्रसिद्ध संगीतकार पं० जसराज का अभिनन्दन किया। प्रमुख साहित्यकार श्री यशपाल जैन ने समारोह की अध्यक्षता की। अगले दिन स्मारिका विमोचन के साथ विराट कवि सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। पं० जसराज ने अभिनन्दन के प्रत्युत्तर में कहा कि रसराज ने मेरा सम्मान करके आज मुझे असली जसराज बना दिया है। और वे अत्यन्त भावविभोर हो गये। हिसार में ही नहीं बल्कि हरियाणा प्रांत में इस समारोह की प्रशंसा हुई। इसके संयोजक वरिष्ठ कवि प्रो० रघुवीर अनाम थे, जिनके मार्गदर्शन एवं अथक प्रयास से इतना बड़ा आयोजन सानन्दपूर्वक सम्पन्न हो सका।

'साहित्य कला संगम' हिसार के संस्थापक राज्यकवि उदयभानु हंस को संस्था के अध्यक्ष पद के लिए योग्य व्यक्ति की तलाश थी। हंस जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर डा० सारस्वत ने अध्यक्ष पद को स्वीकार किया। हरियाणा के दो प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवियों को प्रतिवर्ष हंस जन्मोत्सव पर सम्मानित करने की स्वस्थ परम्परा को आगे बढ़ाते हुए श्री सुभाष रस्तोगी, श्री माधव कौशिक (चंडीगढ़), श्री बलदेवराज 'शान्त' (फरीदाबाद), श्री रामकुमार आत्रेय (कुरुक्षेत्र), विपिन सुनेजा (रेवाड़ी), प्रो० अमृतलाल मदान (कैथल) आदि कवियों को सम्मानित किया। 'साहित्य कला संगम' के विविध समारोहों के मुख्य अतिथि-पद को क्रमशः राज्यपाल श्री धनिकलाल मण्डल, श्री छतरसिंह चौहान (विधानसभा अध्यक्ष), श्री सम्पत सिंह (वित्तमंत्री), श्री रामबिलास

शर्मा (शिक्षा मंत्री), श्री सुभाष गोयल (नगर विकास मंत्री) ने सुशोभित किया। हंस जी के साथ कार्य करने से डा० सारस्वत की प्रतिभा और अधिक निखरती चली गई।

पं० जगतस्वरूप एडवोकेट के मार्गदर्शन में नगर की प्रमुख गांधीवादी-सर्वोदय संस्था द्वारा प्रत्येक रविवार को सांयकाल, सर्वोदय भवन में प्रार्थना सभा का आयोजन होता है, जिसमें भारतवर्ष के प्रमुख साहित्यकार एवं स्वतन्त्रता सेनानी आकर अपने विचारों द्वारा स्थानीय जनता को सद्प्रेरणा देते रहते हैं। यहाँ भी डा० सारस्वत अपना अमूल्य योगदान देकर गायत्री मिशन के संस्थापक आचार्य वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा द्वारा व्यक्ति परिवार एवं राष्ट्रनिर्माण की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। *''वसुधैव कुटुम्बकम्''* भारतीय संस्कृति की अवधारणा के अनुसार डॉ० सारस्वत ने हिन्दू-मुस्लिम-सिख और ईसाई सभी धर्मों के कार्यक्रमों में भाग लेकर संतुलित जीवन जीने का क्रम अपनाया है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० सारस्वत चिकित्सा, साहित्य एवं धर्म के आदर्श सिद्धान्तों की त्रिवेणी के रूप में, ज्ञानगंगा का प्रवाह एवं नवसंचार करके, जनचेतना जाग्रत करने में अपना तन, मन एवं धन से योगदान कर रहे हैं। मानवीय मूल्यों को समाज में स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इनका जीवन परमार्थ से भरपूर रहा है। इनकी अन्तिम इच्छा भी यही हैं कि मोक्ष प्रप्ति न करके जन्म-जन्मान्तरों तक दीन-दुखियों की सेवा करते रहें। डा० सारस्वत जी का आदर्श वाक्य है -

न त्वहं कामये राज्यं न सौख्यं ना पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

अर्थात् मुझे न राज्य की, न सुख की, न पुनर्जन्म की कामना हैं। दुःख से पीड़ित प्राणियों के कष्ट दूर करने की कामना है।

ऐसे आदर्श एवं यशस्वी व्यक्ति की षष्टिपूर्ति पर हम सभी प्रभु से इनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की मंगलकामना करते हैं।

उपलब्धियाँ

विद्यार्थी जीवन (कॉलेज) में सम्मानित

१६-४-१९६३	✦ सर्वोत्तम विद्यार्थी के रूप में सम्मानित
	✦ 'सर्वाधिक उपस्थिति' के रूप में सम्मानित
१६-४-१९६४	✦ 'सर्वोत्तम विद्यार्थी' के रूप में सम्मानित
	✦ 'गोला फेंक क्रीड़ा प्रतियोगिता' में सर्वप्रथम सम्मान से सम्मानित
	✦ 'डिस्क-थ्रो क्रीड़ा प्रतियोगिता' में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित
	✦ 'सर्वाधिक उपस्थिति' के रूप में सम्मानित
२४-२-१९६४	✦ राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जयपुर में राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द द्वारा रजत पदक से सम्मानित

राजकीय सेवा में सम्मानित

२०-६-१९६८	सरपंच, ग्राम पंचायत 'परलीका' (श्री गंगानगर) द्वारा सम्मानित
४-१२-१९७१	प्रधान युवक समाज सेवा संघ 'शेरड़ा' (श्री गंगानगर) द्वारा सम्मानित
५-३-१९७४	सरपंच, ग्राम पंचायत 'शेरड़ा' द्वारा सम्मानित
५-४-१९७४	ज़िला स्वास्थ्य अधिकारी श्री गंगानगर द्वारा सम्मानित
२८-२-१९७६	एम.एल.ए. श्री ज्ञानसिंह चौधरी द्वारा सम्मानित
२५-१-१९७६	प्रधान आर्य सरोवर समिति 'शेरड़ा' (श्री गंगानगर) द्वारा सम्मानित
२६-१-१९८२	जिलाधीश महोदय श्री गंगानगर द्वारा सम्मानित
७-३-१९८३	जिलाधीश श्री गंगानगर द्वारा सम्मानित
१५-७-१९८३	स्वास्थ्य सचिव श्री आर. जे. मजीठिया द्वारा श्री गंगानगर में सम्मानित

६-२-१६८५ निदेशालय आयुर्वेद विभाग, अजमेर द्वारा सम्मानित

संस्थाओं द्वारा सम्मानित

१८ सितम्बर, १६६२ 'अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी' द्वारा डा० अम्बेडकर फैलौशिप से राज्यपाल बाबू परमानन्द द्वारा सम्मानित

२४ सितम्बर, १६६२ मासिक पत्र 'हिन्द जनपथ' द्वारा तत्कालीन महानिदेशक दूरदर्शन, दिल्ली सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री कमलेश्वर के कर कमलों से सम्मानित

२० अक्तूबर, १६६३ 'जनवादी नौजवान सभा' द्वारा सम्मानित

२४ सितम्बर, १६६३ 'सन्त नामदेव पुरस्कार' से चेयरमैन सतबीर सिंह द्वारा सम्मानित

२४ अक्तूबर, १६६४ शिवालिक हाई स्कूल वार्षिकोत्सव पर विधायक श्री चन्द्रमोहन द्वारा सम्मानित

७ सितम्बर, १६६५ आर्य समाज मॉडल टाउन के वार्षिकोत्सव पर प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जगदीश आर्य गुरेरा द्वारा सम्मानित

२० सितम्बर, १६६५ राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर में दयानन्द कॉलेज, हिसार के राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी प्रो० रघुवीर 'अनाम' द्वारा सम्मानित

२३ सितम्बर, १६६७ अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा 'डा० अम्बेडकर सेवा श्री राष्ट्रीय पुरस्कार' से राज्यपाल श्री मातादीन द्वारा सम्मानित

२४ अगस्त, १६६८ अखिल भारतीय साहित्य परिषद् द्वारा सम्मानित

१५ अक्तूबर, १६६८ 'हरियाणा निजी स्कूल संघ' द्वारा सम्मानित

२ अगस्त, १९९९	'साहित्य कला संगम' द्वारा 'सेवा श्री विशिष्ट पुरस्कार' से सम्मानित
२४ अगस्त, २०००	'ब्राह्मण सभा, हिसार' द्वारा परशुराम जयन्ती के सुअवसर पर सम्मानित
२४ सितम्बर, २००१	पंजाब नेशनल बैंक के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री रस्तोगी जी द्वारा सम्मानित
१२ मार्च, २००२	अमेरिका की ए.वी.आई., संस्था द्वारा 'मैन ऑफ दी ईयर' अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित।

संस्थाओं के पदाधिकारी

✦ राजस्थान आयुर्वेद विभागीय चिकित्सक संघ, श्री गंगानगर	प्रधान	१९८० से १९८२ तक
✦ राजस्थान आयुर्वेद वैलफेयर एसोसियेशन, जयपुर	प्रान्तीय कार्यकारिणी सदस्य	१९८३ से १९८५ तक
✦ रसराज केन्द्र, हिसार	प्रधान	१९९१ से १९९९ तक
✦ विद्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, हिसार	प्रधान	१९९५ से ....
✦ अखिल विश्व गायत्री परिवार, हिसार	टोलीनायक	१९९५ से १९९९ तक
✦ आर्य समाज, मॉडल टाउन, हिसार	उपप्रधान	१९९९ से २००० तक
✦ 'साहित्य कला संगम', हिसार	प्रधान	१९९८ से ....

3

स्वस्ति वाचन

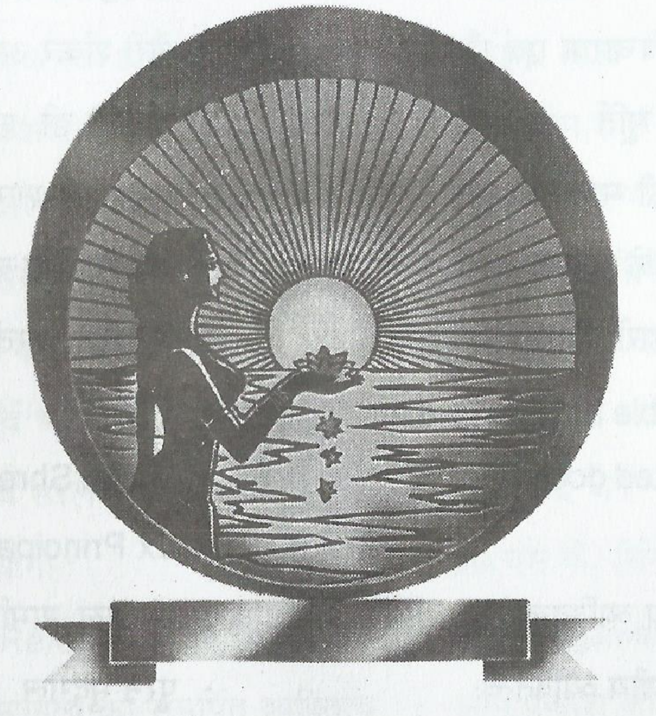

विषय सूची

1	शुभाशंसा	:	प्रो. उदयभानु हंस, राज्यकवि	45
2	इन्सानी मूल्यों के प्रतीक	:	डॉ० कुलदीप ढींडसा	46
3	सज्जनता एवं सेवाभाव	:	पं. जगत सरूप एडवोकेट	48
4	जन कल्याणकारी व्यक्तित्व के धनी	:	रामकुमार रावलवासिया	49
5	एक अनुकरणीय व्यक्तित्व	:	बलराज सिंगला प्राचार्य	52
6	सामाजिक एवं साहित्यिक चेतना के अग्रदूत	:	प्रो. रघुवीर 'अनाम'	54
7	कर्मठ एवं सौम्य व्यक्तित्व	:	सुश्री यशोदा माथुर	56
8	स्मृति के वातायन से	:	आचार्य बलदेव राज 'शान्त'	57
9	सच्चे सरस्वती पुत्र	:	प्रो. अमृत लाल मदान	59
10	A complete Man	:	Dr. J.R. Sharma	60
11	समाज सेवी - साहित्यकार	:	रामकुमार आत्रेय	61
12	गम्भीर विचारक एवं मौन साधक	:	गौरी शंकर अत्री एडवोकेट	62
13	दया की मूर्ति	:	डॉ० डी.डी. शर्मा	63
14	हिसार की महान् विभूति	:	फ़तेहचन्द शास्त्री प्राचार्य	64
15	मानवता के प्रतीक	:	करतार सिंह कौशिक प्राचार्य	66
16	सद्व्यवहारी व साहित्यानुरागी	:	कमलेश भारतीय पत्रकार	68
17	A Lovable Brother and a dedicated doctor	:	Manju Shree Dass, Ex Principal	69
18	चुम्बकीय व्यक्तित्व	:	एम.एल. शर्मा	72
19	चिरस्मरणीय व्यक्तित्व	:	पूरन मुद्गल	74
20	विनम्रता है जिसकी पहचान	:	जयकुमार जैन	75

21	मानव शिरोमणि	:	डॉ॰ रामकुमार निजात	77
22	साहित्यानुरागी : डॉ॰ सारस्वत	:	विनोद शंकर गुप्त	78
23	वर्तमान युग में मानव-रत्न	:	प्रो. दर्शन सिंह ठाकुर	79
24	सरस्वती पुत्र : डॉ॰ सारस्वत जी	:	डॉ॰ रमा कान्त शर्मा	80
25	डॉ॰ सारस्वत-एक व्यक्तित्व	:	निहाल सिंह	82
26	A Multifaceted Personality	:	Prof. H.C. Nagpal	84
27	उच्च आदर्शों के प्रणेता	:	डॉ॰ इन्द्रजीत	86
28	समाज उत्थान में अग्रणी	:	लॉयन डॉ॰ प्रताप सिंह सांगवान	87
29	समाज की भलाई में तत्पर	:	डॉ॰ दलेल सिंह	88
30	प्रतिष्ठित एवं समर्पित चिकित्सक	:	डॉ॰ डी. एन. शर्मा	89
31	गायत्री मिशन के समर्पित कार्यकर्ता	:	डॉ॰ वेद शर्मा	90
32	संस्कृति-पुरुष	:	हरिकृष्ण शर्मा प्राचार्य	91
33	समाज सेवा में अग्रणी	:	डॉ॰ प्रदीप गोयल	92
34	कथनी-करनी एक समान	:	चेतराम रहबर	93
35	ओजस्वी व्यक्तित्व-आदर्श चिकित्सक	:	डी.एम. लाल	94
36	एक सौम्य व्यक्तित्व	:	डॉ॰ शमीम शर्मा प्राचार्य	95
37	साहित्य-स्वास्थ्य जगत के नक्षत्र	:	देवेन्द्र उप्पल पत्रकार	96
38	एक श्रेष्ठ सम्पूर्ण व्यक्तित्व	:	चन्द्र प्रकाश द्विवेदी	97
39	बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी	:	सुनीता गर्ग प्राचार्य	98
40	अध्यात्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रतीक	:	डॉ॰ त्रिभुवन भारद्वाज	99
41	विनम्रता एवं सरलता के प्रतिरूप	:	प्रो॰ देवेन्द्र जैन	100
42	सच्चे कर्मयोगी	:	प्रो॰ एस.के. सिंगला	101
43	A Social Reformist	:	Neeta Aggarwal Principal	102
44	समाज व साहित्य को समर्पित व्यक्तित्व	:	ओम् प्रकाश कादयान	103

45	समाज सुधारक-श्रेष्ठ नागरिक	: जगदीश चन्द्र आर्य	105
46	सौम्य एवम् शालीन व्यक्तित्व	: डॉ० राजेश मेहता	106
47	अध्यात्म एवं भौतिकता के समन्वयक	: सन्तोष कुमार आर्य वेद प्रकाश आर्य	107
48	लोकप्रिय चिकित्सक	: एस.पी. चौधरी	109
49	समाज सेवा को समर्पित	: डॉ० अशोक यादव	110
50	नैतिक मूल्यों की जीवन्त मूर्ति	: भगत सिंह राजोरिया	111
51	मानवता का वटवृक्ष	: नौरंग लाल शर्मा	112
52	मृदुभाषी व निष्ठावान	: सत्यपाल शर्मा	115
53	माँ गायत्री के उपासक	: नंद लाल तंवर	116
54	सहृदयता की साक्षात मूर्ति	: वैद्य शिव कुमार शर्मा	117
55	अपार धैर्यवान	: वैद्य महावीर प्रसाद इन्दोरिया	119
56	आयुर्वेद जगत के नक्षत्र	: वैद्य श्रीराम कौशिक	120
57	अच्छे मित्र-अच्छे भाई	: वैद्य ताराचन्द भारद्वाज	121
58	सबके चहेते	: आशा कुन्दन	122
59	पथ प्रदर्शक	: वीरेन्द्र कौशल	123
60	सुषुप्त समाज के सजग प्रहरी	: डॉ० सुभाष शर्मा	124
61	नैतिक मूल्यों के संवाहक	: आर. के. शर्मा	125
62	समाज सुधार में अग्रणी	: गोविन्द राम बंसल	126
63	मानवतावादी एवं राष्ट्रवादी	: दर्शनानन्द सारस्वत	127
64	कोमल हृदय-सेवाभावी	: रमेश वर्मा	128
65	विनम्रता एवं सौम्यता की प्रतिमूर्ति	: डॉ० महिपाल मुंजाल	129
66	मृदुभाषी-हँसमुख	: सीताराम बेरवाल	130

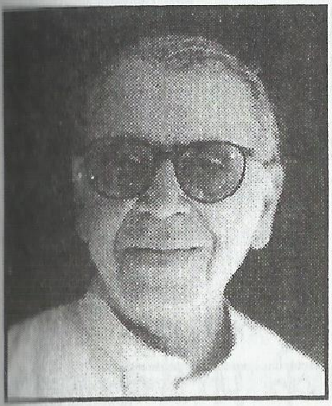

साहित्य वाचस्पति

प्रो० उदयभानु हंस

राज्यकवि, हरियाणा

शुभाशंसा

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जब से मेरे निकट आए हैं, वे मेरे अनन्य मित्र, निष्काम हितैषी तथा अत्यन्त आत्मीय बन गए हैं। मुझ पर उनका अपार स्नेह, आशातीत सम्मान एवं श्रद्धा का भाव एक ऐसा ऋण लगता है, जिसे मैं इस जीवन में तो उतार नहीं सकूंगा। स्वर्गीय श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन के बाद डा० सारस्वत से मेरा सम्पर्क-सान्निध्य अविस्मरणीय रहेगा। ऐसा विनम्र, धर्मप्राण, स्नेही, निष्कलुष, परोपकारी, हँसमुख व्यक्ति आधुनिक युग में मुझे दुर्लभ लगता है, जो इतने अधिक मानवीय गुणों से अलंकृत हो। एक सुयोग्य एवं कुशल वैद्य के रूप में तो उन्होंने मेरे परिवार के स्वास्थ्य का मानो दायित्व ही ले लिया है।

षष्टिपूर्ति के इस अभिनन्दन-समारोह पर मैं उन के चिरायुष्य स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि एवं सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ।

डॉक्टर सारस्वत सरल सज्जन सौम्य सुजान।
खिली रहे मुखकमल पर मन्द-मन्द मुस्कान।।

गंगा सा निर्मल हृदय, जीवन मधुर वसन्त।
सद्‌गृहस्थ होते हुए श्वेत वस्त्र में सन्त।।

कैसी भी स्थिति हो, रहें सदा शान्त गम्भीर।
जैसे उपवन में बहे मन्द सुगन्ध समीर।।

मिले सफलता और यश, खुले प्रगति का द्वार।
स्वस्थ चिरंजीवी सुखी रहें सहित-परिवार।

डा० कुलदीप ढींडसा
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार

इन्सानी मूल्यों के प्रतीक

"सारस्वत जी के जीवन का क्या-२ करूँ बखान,
दिखने में साधारण लगें, परन्तु सद्‌गुणों की खान।"

लाला लाजपतराय, चौ० सूरजमल, बाबू महावीर प्रसाद जैन जैसी महान् विभूतियों की कर्मभूमि हिसार में पिछली दशाब्दी में यदि कोई नाम उभर कर सामने आया है तो वह है डॉ० लक्ष्मी नारायण सारस्वत। एक कुशल आयुर्वेदिक चिकित्सक, निःस्वार्थ समाज सेवी, इन्सानी मूल्यों के प्रतीक, दलित और वंचितों के मसीहा। जी हाँ! यही हैं सर्व-जन प्रिय सारस्वत जी की पहचान।

मेरा उनसे परिचय लगभग एक दशक पुराना है पर इस थोड़े समय में ही उन्होंने मुझ पर जो अमिट छाप छोड़ी, वह मेरे लिए किसी धरोहर से कम नहीं। कितने निर्धन रोगी उनके औषधालय में आते हैं जो उधार की बात करते हैं। मैं इस बात का अनेक बार चशमदीद गवाह रहा हूँ, जब उन्होंने कहा "उपचार में उधार नहीं चलती, हाँ तुम्हारा इलाज मैं निःशुल्क करूंगा।" पर उसके आगे जब उन्होंने कहा कि यह दवा दूध के साथ लेनी है, तो अपनी जेब से उसके लिए धन दिया। धन्य हैं लक्ष्मी नारायण जी और धन्य उनके माता-पिता जिन्होंने उन्हें ये संस्कार प्रदान किए।

एक सौम्य व्यक्तित्व, नम्रता एवं शिष्टाचार की मूर्ति, धर्मनिष्ठ डा० सारस्वत हर मिलने वाले पर एक ऐसी अमिट छाप छोड़ते हैं कि बार-बार उनसे मिलने को मन करता है। साहित्य जगत में उनका अपना एक विशिष्ट स्थान है। शान्तिकुंज हरिद्वार के गायत्री परिवार के प्रचार-प्रसार में उन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और गायत्री

परिवार के सिद्धान्तों को अपने जीवन में आत्मसात् किया है। गांधी जी के मूल मन्त्र ''सादा जीवन, उच्च विचार'' एवं अहिंसा डा० सारस्वत जी के जीवन के अभिन्न अंग हैं। सारांश में कहा जाए तो उनका व्यक्तित्व भारतीय सांस्कृतिक धरोहर एवं आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का एक सुखद सम्मिश्रण है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनके जीवन पर लिखी जा रही यह पुस्तक आने वाली पीढ़ियों को आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा देगी।

डा० सारस्वत के दीर्घ, स्वस्थ एवं सार्थक जीवन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

✦ चित्त की शुद्धि न होने तक भगवान की उपलब्धि नहीं हो सकती। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

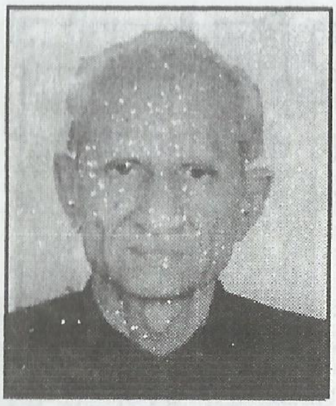

पं. जगत सरूप
वरिष्ठ एडवोकेट
पूर्व प्रधान बार एसोसियेशन–हिसार

सज्जनता एवं सेवा भाव

मुझे यह जानकर विशेष हर्ष हुआ कि डा० लक्ष्मीनारायण जी सारस्वत को उनकी षष्टिपूर्ति के अवसर पर उनके मित्रों-प्रशंसकों द्वारा एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। डा० सारस्वत इस सम्मान के अधिकारी भी हैं। जहां अपने चिकित्सक व्यवसाय के कारण उन्होंने हज़ारों रोगियों को स्वास्थ्य-लाभ करवा कर पुण्य कमाया, वहीं वह धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं परहित के कार्यों में पूर्ण रूप से संलग्न हैं। गायत्री परिवार तथा साहित्य कला संगम के कार्यक्रमों द्वारा उन्होंने नगर के सामाजिक-धार्मिक जीवन में जो स्थान बनाया है, वह श्लाघा योग्य है।

एक बार मुझे हिसार ज़िले की सीमा से सटे गांव शेरड़ा (राजस्थान) में जाने का अवसर मिला। शेरड़ा में सारस्वत जी राजस्थान सरकार की सेवा में स्वास्थ्य अधिकारी रहे हैं। वहां भी सभी मिलने वालों ने इनके बारे में अच्छा ही अच्छा कहा।

आज के स्वार्थमय व बनावटी युग में डा० सारस्वत सरीखे सज्जन व्यक्ति दूसरों पर ज़रूरत से ज़्यादा विश्वास करने के कारण धोखा खा चुके हैं। आप पर ग़लत तरीके से झूठा मुकद्दमा बनाने का भी प्रयास किया गया, किन्तु आप किन्हीं भी परिस्थितियों में विचलित नहीं हुए, बल्कि स्वर्ण की तरह भट्टी में तपाये जाने पर कुन्दन बनकर ही निकले। सर्वोदय भवन की विचार गोष्ठियों में भी आप हर प्रकार से सहयोग करते रहते हैं।

इस शुभ अवसर पर परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि डा० सारस्वत जी को दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन प्रदान करें, ताकि वह समाज सेवा के नये आयाम स्थापित करते हुए समाज को अधिकाधिक लाभान्वित करते रहें।

रामकुमार रावलवासिया

प्रमुख उद्योगपति एवम् समाजसेवी, हिसार

जन कल्याणकारी व्यक्तित्व के धनी -डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत

इस कलिकाल में धर्म ग्रंथों और गीता के उपदेशों को व्यवहार में लाने वाले देव पुरुष प्रायः दुर्लभ हैं। इस देश में विलक्षण प्रतिभाएं जन्म लेती हैं, जो पूरे देश को ही नहीं वरन् सारे संसार को चमत्कृत करती हैं तथा समाज में नए आयाम लोगों के सामने प्रस्तुत करती हैं। इसी तर्ज़ का एक उदाहरण है - हमारे नायक डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत।

वे गांधी नहीं हैं, पर मेरे सपनों का लक्ष्मी नारायण भी गांधी की करुणा लिए है, प्रेम से ओत-प्रोत है, सेवा-शुश्रूषा भाव से परिपूर्ण है, नए समाज को पुराने संस्कारों से जोड़ने वाला अग्रदूत है तथा बहुआयामी सेवाओं का प्रकाशपुंज है। मैं पहली बार इनसे शेरड़ा में मिला था जहाँ कई लाख की लागत से अस्पताल में आतुरालय भवन का निर्माण हो रहा था। वहाँ जाकर मुझे पता लगा कि बीस वर्ष से ये ग्रामीण-गांधी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से प्रभावित होकर खादी में ओत-प्रोत रहा। मानव सेवा का महानतम कार्य चिकित्सा को अपनाकर उसे कभी व्यवसाय नहीं बनने दिया। निःशुल्क चिकित्सा ही नहीं बल्कि राजस्थान और हरियाणा, जिस-जिस क्षेत्र में भी रहे, ज़रूरतमंदों में निःशुल्क दवाइयां वितरण भी कराई।

शेरड़ा में जब मैं इनसे पहली बार मिला तो मुझे लगा था कि यह आदमी या तो कोई समाज सेवी बनेगा या साधु। अब मैं देखता हूँ, एक न होकर यह आदमी दोनों हो गया। समाज सेवी भी और साधु भी। समाजसेवी सी मस्त धुन लिए यह समाज सेवा के प्रत्येक आयाम से जुड़ा है और धन वैभव से निर्लेप होकर भोगवादी समाज में रहकर भी सन्तों की भांति दूसरों के लिए जीवन जी रहा है।

समाज उसी प्राणी से धन्य होता है जो डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत की तरह अपनी परवाह न कर दूसरों में खुशी की लहर पैदा करता है। अतः आज उसी के अभिनंदन का आयोजन भी कर रहा है। धन्य है वह माँ जिसने लक्ष्मीनारायण जैसे बेटे को जन्म दिया। वास्तविकता तो यह है कि आज समाज उनकी सेवाओं का ऋणी है। उनके दैवीय और मानवीय गुणों से समाज को जो अभूतपूर्व लाभ हुआ है उसके उदाहरण समाज में बहुत कम मिलते हैं। डा० सारस्वत में जो सरलता और सादगी पाई जाती है वह वास्तव में प्रेरणास्पद और अनुकरणीय है। सच तो यह है कि यदि माँ धरा पर मानवीय सभ्यता को बनाए रखना है तो आज नहीं तो कल हमें सरल एवम् सादा रहन-सहन और सौम्यतापूर्ण डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जैसे जीविकोपार्जन के भी ऐसे ही साधन अपनाने होंगे जिन मानवी गुणों का डा० सारस्वत समाज में बीजारोपण करना चाहते हैं।

जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं तथा रहन-सहन के मामलों में डा० सारस्वत में जो सरलता व सादगी पायी जाती है, ऐसी निराहंकारा, उदारमना भाव, सर्वस्व लुटाने की समाजोत्कर्ष भावना अनायास ही अन्तःकरण को छू जाती है। डा० सारस्वत ने इन्हीं गुणों से ओत-प्रोत होकर अपने सारे परिवार को समाज में प्रतिष्ठित कर सम्मानजनक स्थिति में पहुँचाया है। अन्य सामाजिक कार्यों की तरह पारिवारिक उत्थान में भी इनकी धर्मपत्नी का इन्हें पूर्ण सहयोग मिला है। यह सौभाग्य की बात है कि इनकी धर्मपरायण पत्नी हर काम में इनके साथ कन्धे से कंधा मिलाकर चलती है।

डा० सारस्वत उपरोक्त सभी गुणों की जीती-जागती प्रतिमूर्ति हैं। अपनी सादगी, साफ़गोई, निष्कपट्ता, निराहंकारिता जैसे मानवीय गुणों के कारण उन्हें प्रायः सभी लोग प्यार एवं सम्मान देते हैं।

डा० सारस्वत आज एक ऐसे व्यक्ति का नाम है जिसने अपने जीवन काल में ही दिन-प्रतिदिन घटते जा रहे नैतिक मूल्यों तथा बढ़ते जा रहे दुराचारी वातावरण में एक व्यक्ति के अर्थवाली सीमा को पार कर एक 'जीवन-मार्ग', एक 'जीवन संदेश' का रूप ले लिया है। उनके हिसार आने के बाद की मुलाकातों में मैंने महसूस किया है कि उनके

आधारभूत सिद्धान्तों, नैतिक जीवन में उनके आचार-विचार एवम् क्रिया-कलापों, जटिल मानवीय सहज प्रवृतियों, आवेग, आरोहावरोह, विचारों, अभिप्रायों, आचरण आदि की दिशा में उनकी गहरी पकड़ है। उनके व्यक्तित्व की ये विशेषताएं ऐसी हैं कि मुझे बरबस उनमें अलौकिकता की झलक निम्न श्लोक में दृष्टिगत होती है।

डा० सारस्वत में दूसरों की आवश्यकता को सहानुभूति से समझ, समर्पण-भाव, उदारमना, करुणा से भरा सागर सा दिल और अहम् से कोसों दूर कुछ ऐसी बातें हैं जो वस्तुतः व्यक्ति को आश्चर्यचकित किए बिना नहीं रहतीं। यहाँ मुझे एक शाश्वत सत्य का स्मरण हो रहा है कि *''आभारी बनने की इच्छा से रहित होकर जो दया दिखाई जाती है, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मिलकर भी उसका बदला नहीं चुका सकते।''* डा० सारस्वत की सहज प्रवृति एवम् उनके कर्म उन्हें आधुनिक विवेकी चिंतक 'बिट्रण्ड रसल' द्वारा पारिभाषित पुरुष के समकक्ष ला खड़ा कर देते हैं। रसल कहते हैं : *''यदि कोई व्यक्ति दूसरों को देखकर खुश होता है, खुले दिल वाला है, उदारमना है, तो उसे सज्जन मानना चाहिए फिर उसमें कोई छुटपुट कमज़ोरी ही क्यों न हो।''* आध्यात्मिक एवम् बौद्धिक दृष्टि से परिपक्व व्यक्ति की डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने जो विशेषताएं बताई हैं, डा० सारस्वत में वे समा जाती हैं। उन्होंने कहा, *''आध्यात्मिक विकास मार्ग व्यक्ति को अहम, हठधर्मी, व्यक्तिगत श्रेष्ठता आदि-आदि भावों से मुक्ति दिलाकर विनम्रता, स्पष्टवादिता, दूसरों की आवश्यकताओं की समझ एवम् उत्तरदायित्व संभालने की उत्सुकता की ओर ले जाते हैं।''* जीवन की यह बुनियादी सच्चाई डा० सारस्वत में भरपूर पाई जाती है।

वस्तुतः एक सच्चा, ईमानदार और निष्ठावान व्यक्ति ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। हमारा सौभाग्य है कि डा० सारस्वत जैसा समाज सेवी, विद्वान एवम् प्रांजल व्यक्ति हमारे बीच है जो भावी पीढ़ियों के लिए एक प्रकाशपुंज का काम करेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे डा० सारस्वत एवम् श्रीमती सारस्वत को स्वस्थ एवम् हर्षोल्लासपूर्ण दीर्घायु प्रदान करें जिससे आने वाले समय में वे समाज को और उत्कर्ष सेवा प्रदान कर सकें।

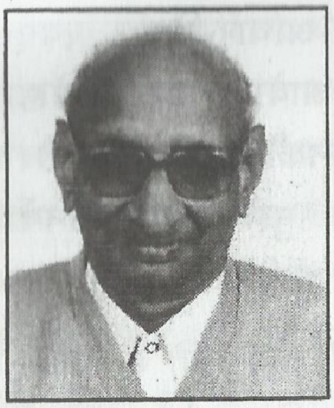

बलराज सिंगला

प्राचार्य, देवी भवन हाई स्कूल, हिसार

एक अनुकरणीय व्यक्तित्व

श्री लक्ष्मीनारायण सारस्वत से मेरा परिचय 'साहित्य कला संगम' के सदस्यों की मीटिंग में हुआ। इस मानद संस्था का सदस्य होने के नाते मैं भी इस सभा में उपस्थित था। राज्यकवि श्री उदयभानु हंस जी के निवास स्थान पर आयोजित इस मीटिंग में स्वयं श्री हंस जी ने इनका परिचय एक आयुर्वेद आचार्य, साहित्य प्रेमी तथा समाज सेवी के रूप में करवाया। मीटिंग के पश्चात् व्यक्तिगत संपर्क से डा० सारस्वत ने राजस्थान सरकार के प्रथम श्रेणी के आयुर्वेदिक चिकित्सक के रूप में अपने द्वारा किए क्रियाकलापों, उपलब्धियों व मान-सम्मान अर्जित करने के अनेक संस्मरण सुनाए। पहली बार मिलने से ही इनकी मृदुभाषिता, नम्रता व सरलता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इनके अनेक संस्थाओं के अनुभवों का मूल्यांकन करते हुए आपको 'साहित्य कला संगम' का प्रधान बनाया गया। प्रधान के रूप में डा० सारस्वत ने इस संस्था के संचालन में तन, मन, धन से गति प्रदान की तथा अपनी प्रतिभा व कार्यकुशलता का परिचय दिया। संस्था द्वारा आयोजित उत्सव-समारोहों में व्यवस्था संबंधी कला का दिग्दर्शन कराकर आपने प्रधान पद के गौरव को बढ़ाया, क्योंकि किसी संस्था की प्रभावी गतिशीलता के लिए कुशल संचालन एवं कलात्मक व्यवस्था आदि आवश्यक गुणों की आवश्यकता होती है। डा० सारस्वत 'अखिल भारतीय साहित्य परिषद्' हिसार शाखा के सदस्य तथा स्वामी केशवानंद स्मृति साहित्य सदन ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं और मैं भी इन दोनों संस्थाओं का कोषाध्यक्ष हूँ। इसी नाते हमें इकट्ठा कार्य करने का सुअवसर मिलता रहता है। इसी आधार पर मैं इनके कुछ विशेष गुणों का वर्णन करना चाहूँगा।

जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित एक नैतिक व्यक्तित्व : राष्ट्र संत आचार्य तुलसी ने मानव के नैतिक उत्थान के लिए अणुव्रत

आन्दोलन का सूत्रपात किया था, जिसके अन्तर्गत व्यक्ति द्वारा नैतिकता के छोटे-छोटे संकल्प स्वीकार कर, अपने-आप को देश का नैतिक व सच्चरित्र नागरिक बनने का संकल्प लिया जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि इन नियमों को डा० सारस्वत ने अपने जीवन में आत्मसात् किया हुआ है। अनेक गायत्री अनुष्ठानों के माध्यम से तथा विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में स्वयं जाकर नैतिक प्रचार करते हैं तथा जीवन मूल्यों को अपनाने का आह्वान करते हैं।

संवेदनशीलता : पीड़ितों, गरीबों तथा असहायों के प्रति इनके हृदय में जो संवेदनशीलता है, इसको मैंने स्वयं निहारा और अनुभव किया है। एक बार मुझे इनके डाबड़ा रोड स्थित चिकित्सालय में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां मैंने देखा कि कुछ रोगी दवाई लेकर बिना पैसे दिए ही चले गए। मैंने जानकारी हेतु पूछ लिया, "डा० साहब ! इन सब का खाता आप के रजिस्टर में होगा ?" डा० साहब बोले, "नहीं ये ग़रीब लोग हैं और मैं ऐसे ग़रीब व्यक्तियों से न फीस लेता हूँ और न ही इनसे दवाई के पैसे लेता हूँ। मुफ़्त ही दवाई देने का प्रयत्न करता हूँ"। यही नहीं, जब मैं इनके चिकित्सालय से अपने घर के लिए चलने लगा, तो इन्होंने मुझे भी स्वनिर्मित हाज़मे के चूर्ण की शीशी दी। मैंने इसके पैसे देने चाहे, तो इन्होंने कहा, "आप भी तो समाज सेवी हैं। आप इसका सेवन करें, यही इसका मूल्य होगा"। मैं इन के अति निःस्वार्थ मानवीय गुण से बड़ा प्रभावित हुआ।

अनुकरणीय आतिथ्य : इनका अतिथि सत्कार का गुण अनुकरणीय है। 'साहित्य कला संगम' के सान्निध्य में कई विचार-गोष्ठियों एवं कवि सम्मेनलो का आयोजन इनके निवास स्थान पर यदा कदा होता ही रहता है। उन अवसरों पर विभिन्न व्यंजनो के साथ जो अतिथि-सत्कार आप स्वयं और आपके शिष्ट परिवारजनों द्वारा किया जाता है, वह वास्तव में सराहनीय है। इन सब गुणों के साथ आप एक अच्छे और विश्वसनीय साथी हैं। अपने साथी के सहयोग के लिए आप तो तैयार रहते ही हैं, कई बार आप के बिना आपकी पत्नी भी सहयोग करती है।

मैं आपकी षष्टिपूर्ति के अवसर पर आप एवं आपकी धर्मपत्नी की दीर्घ आयु एवं मंगलमय भावी जीवन की कामना करता हूँ, ताकि आप समाज की और अधिक सेवा कर सकें। इस शुभ अवसर पर आप मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

प्रो० रघुवीर 'अनाम'
वरिष्ठ साहित्यकार
संयोजक (जिज्ञासा मंच, हिसार)

सामाजिक एवं साहित्यिक चेतना के अग्रदूत

जिन्होंने सामाजिक, साहित्यिक तथा धार्मिक-तीनों क्षेत्रों में बढ़चढ़कर समाज ऐवं राष्ट्र की सेवा की है, माँ भारती के अनन्य सपूत डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत इस नगर में ऐसे ही विरला महानुभावों में एक हैं।

इनका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक, मनमोहक तथा चुम्बकीय है। जो भी इनके सम्पर्क में आता है, इन्हीं का हो जाता है तथा इनके सद्‌गुणों और सद्व्यवहार में खो जाता है। स्वभाव से विनम्र, शिष्ट, सभ्य तथा मृदुभाषी है। समाज के प्रत्येक वर्ग में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। सज्जनता एवं शालीनता की प्रतिमूर्ति हैं। संकीर्णता तथा कट्टरता से कोसों दूर रहते हैं। इनका जीवन फूलों का एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें सभी फूल क़रीने से सजे हुए हैं और मदमाते यौवन के समान खिले हुए हैं। जिधर नज़र डालें उधर ही ज़िन्दगी है, मुस्कराहट है, क़दम क़दम पर खुशियों की आहट है। उदासी-मायूसी का कोई काम नहीं, ग़म या पीड़ा का कहीं नाम नहीं।

डा० सारस्वत यारों के यार हैं, मिलनसार हैं, दिल के दिलदार हैं तथा खुशदिल और सदाबहार हैं। इनसे मेरा परिचय सन् १६६० से है जो उत्तरोतर प्रगाढ़ होता गया और अब स्नेह प्रेम और मित्रता में परिवर्तित हो गया है। डा० साहब साहित्यिक संस्था रसराज केन्द्र के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते रहे हैं और मैं इसका संयोजक रहा हूँ। इस अल्पकाल में डा० साहब के नेतृत्व में अनेक भव्य एवम् विशाल आयोजनों का सुअवसर प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय स्तर के अनेक कवि-सम्मेलन आयोजित हुए और सबसे बढ़कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संगीत-सम्राट पं० जसराज

का कार्यक्रम हुआ जिनके गायन-वादन को सुनकर इस क्षेत्र के लोग गद्‌गद् तथा आत्मविभोर हो गये। यह सब कुछ इनकी योग्यता एवं क्षमता के कारण ही सम्भव हो सका। सम्प्रति डा० सारस्वत सुपरिचित तथा राज्य में अग्रणी संस्था 'साहित्य कला संगम' के प्रधान पद पर आसीन हैं। राज्यकवि उदयभानु हंस जी के सान्निध्य में साहित्य-सेवा में समर्पित हैं। वस्तुतः साहित्य के प्रति इनके मन में असीम स्नेह एवं श्रद्धा भाव निहित है। प्रत्येक साहित्य समारोह में भाग लेते है तथा दिल खोलकर आर्थिक योगदान भी देते हैं। साहित्यकारों से विशेष लगाव होने के कारण उन्हें अत्यन्त आदर एवं सत्कार देते हैं।

डा० सारस्वत धर्मपरायण व्यक्ति हैं। आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा संचालित गायत्री परिवार शान्तिकुंज हरिद्वार से जुड़े हुए हैं। किन्तु इनमें धार्मिक कट्टरता नहीं, संकीर्णता नहीं। प्रत्येक धर्म तथा सम्प्रदाय का आदर करते हैं। किसी विशेष धर्म-जाति से कोई सरोकार नहीं, किसी वाद-विवाद में पड़ना इन्हें स्वीकार नहीं। धर्म इनके लिए नैतिक मूल्यों का संवाहक तथा सामाजिक उत्थान का द्योतक है। अपने अनुज देवेन्द्र सारस्वत का विवाह शांतिकुज हरिद्वार की छत्रछाया में बिना दहेज के सम्पन्न करवाया। धार्मिक भावना के ही कारण डा० सारस्वत मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत हैं।

डा० सारस्वत दलित तथा ग़रीब लोगों की भलाई में सदैव तत्पर रहते हैं। ग़रीब मरीज़ों को निःशुल्क दवाई देते रहते हैं। उदारमना डा० सारस्वत आतिथ्य सत्कार तथा आवभगत में भी सदैव अग्रणी रहते हैं। इनका हृदय सागर के समान उदार एवं विशाल है।

वस्तुतः डा० सारस्वत समाज के ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र हैं जो अपनी आभा से समाज को चमक प्रदान कर रहे हैं।

षष्टिपूर्ति के इस शुभावसर पर मैं इन्हें हार्दिक शुभकामनाएं देता हुआ ईश्वर से इनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ ताकि समाज, साहित्य तथा राष्ट्र की लम्बे समय तक सेवा करते रहें।

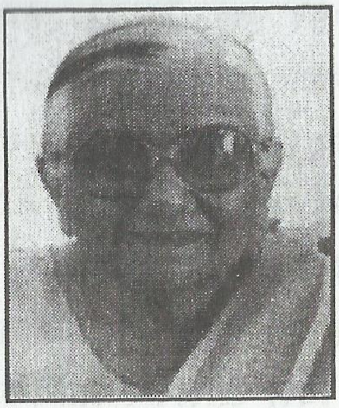

सुश्री यशोदा माथुर

निदेशिका

न्यू यशोदा पब्लिक स्कूल, हिसार

कर्मठ एवं सौम्य व्यक्तित्व

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हिसार शहर के वरिष्ठ चिकित्सक तथा साहित्यिक संस्था के प्रधान डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में ''मंगल कलश'' पुस्तक का प्रकाशन होने जा रहा है। भावी पीढ़ी को प्रेरणा देने के लिए यह पुस्तक मील का पत्थर साबित हो, ऐसी मेरी कामना है।

चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े डा० साहब साहित्यसेवी, समाज सेवी और धर्मसेवी है। यही कारण है कि इन्हें दलित साहित्य अकादमी तथा अम्बेडकर जैसे अनेक राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया गया है। अहंकार जैसी बुराई से वे कोसों दूर रहे। अनेक स्कूलों में जाकर आपने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन करा कर बच्चों में नैतिक-शिक्षा का प्रचार किया। ऐसे ही एक कार्य के सिलसिले में डा० साहब जब मेरे पास आए तब कार्य की अधिकता के कारण मैं उनसे मिलना नहीं चाह रही थी। लेकिन जब उनसे मिली तो उनकी वाकपटुता, मधुरवाणी, हँसमुख और संत स्वभाव ने मेरा मन मोह लिया। आप नशामुक्ति, दहेज-प्रथा तथा वृक्षारोपण जैसी योजनाओं में बढ़-चढ़कर अभिरुचि लेते हैं। जब कभी मेरे स्कूल का कोई बालक अस्वस्थ होता है या चोट आदि लगती है तो वे बड़े प्यार से मेरे बच्चों का उपचार करते हैं और साथ-साथ बोलते जाते हैं-''शाबाश ! रोना नहीं, यशोदा माथुर जैसे हिम्मती और बहादुर बनो।''

डा० साहब को मैं अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ और संस्थान के सदस्यों को इस कार्य के लिए बधाई देती हूँ।

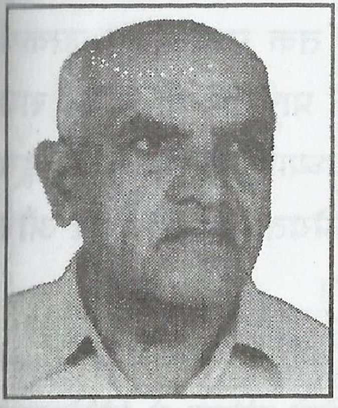

आचार्य बलदेव राज 'शान्त'
वरिष्ठ साहित्यकार–बल्लभगढ़

स्मृति के वातायन से

एक संस्कृत के विद्वान की उक्ति है कि : पर्वत ऊँचा जरूर है पर गहरा नहीं है। सागर गहरा तो है किन्तु वह ऊँचा नहीं है। ये दोनों ही अपनी-२ एक विशेषता के कारण अलंघनीय हैं। किन्तु कुछ महापुरुषों में उक्त दोनों गुण होते हैं।

कविवर माघ के उक्त कथन को पढ़कर जब मैं आत्ममंथन करता हूँ तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि दुर्लंघ्य व्यक्तित्व को या तो अच्छाई से नापा जाता है या फिर गहराई से। मेरी अनुभूति का यह शाश्वत सत्य कर्मयोगी डा० श्री लक्ष्मीनारायण जी सारस्वत के व्यक्तित्व पर सहज चरितार्थ होता है।

मुझे अब तक उनसे तीन बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुझे उनके पारदर्शी व्यक्तित्व में यश की जलन और अपयश की धूल झाड़कर कूल पर खड़ी गुलाब के फूल सी पुरुषोत्तमता दिखाई दी थी। स्वाभाविक उदारता, प्राकृतिक अनुग्रता, अजात-शत्रुता, सहज-मित्रता, सुपात्रता, दायित्व निर्वाह की चतुरता, भारतीय विचारधारा की अजस्त्रता, धार्मिक कृत्यों की अनश्वरता तथा सामाजिक अनुष्ठानों की सम्पूर्णता के रूप में डा० लक्ष्मी नारायण जी 'सारस्वत' ने विधिवत इन्हीं आदर्शों की विमल विभूति को अपने विरल व्यक्तित्व पर रमा कर भारतीय संस्कृति को दिग-दिगन्त तक अद्यावधिपर्यन्त जीवन्त बनाए रखा है।

अपने जीवन में सारस्वत जी ने परिवार निर्माण, समाज निर्माण, संस्कृति निर्माण एवं युग निर्माण के अनेक कार्य किए हैं। नैतिक भूमिका पर स्वयं को ऊँचा उठाने के लिये धन की नहीं, अपितु वश में किए हुए मन की आवश्यकता होती है। सारस्वत जी ने इसी मन को संघर्ष की

निकष पर खरा उतार कर स्वयं को फ़र्श से अर्श तक उठाते हुए उत्कर्ष के कीर्तिमान स्थापित किये हैं। उन्होंने जो कुछ भी प्राप्त किया है वह सब अस्ति-नास्ति की मिथ्याधारणा से दूर रह कर, आध्यात्मिक मस्ती में डूब कर, अपनी हस्ती को बनाये रख कर, सस्ती लोकप्रियता को छोड़कर और ख़ुदपरस्ती की धारा को तोड़ कर प्राप्त किया है।

यह बात नितान्त सत्य है कि ऊँचे आदर्श कभी व्यर्थ नहीं जाते। सारस्वत जी ने जिन ऊँचे आदर्शों की सुरक्षा के लिये जीवन में तितिक्षव्रत धारण किया उसी के फलस्वरुप वे आज एक प्रतिष्ठित डाक्टर, वरिष्ठ नागरिक, दयालु, दीनबन्धु, भारतीय संस्कृति के उन्नायक, जिजीविषा से जुड़े जननायक, कुलाचार पालक और लोकप्रिय मानव का अभिन्न स्वरूप बन सके हैं। मेरे अग्रज तुल्य सारस्वत जी जहां एक ओर विनम्रता, सरलता, सहजता व मधुरता के प्रतिमान हैं, वहीं दूसरी ओर वे व्यवहार कुशलता, पर दुःख कातरता, वाक-पटुता, कटुतारहित सत्यता तथा सद्‌शयता के भी दुर्लभ कीर्तिमान हैं।

२ अगस्त सन् १६६८ को सुशीला भवन हिसार में 'साहित्य कला संगम' द्वारा 'हंस कविता पुरस्कार' वितरण समारोह के अवसर पर मेरी रूह को कुछ समय सारस्वत जी के रु-बरू होकर सुर्ख़रु होने का सुअवसर मिला था। मैं आज भी जब स्मृति के वातायन से लगभग आधा दशक पूर्व देखे हुए सारस्वत जी के उस आकर्षक व्यक्तित्व के विषय में नतनयन चिन्तन करता हूँ तो मुझे चिरन्तन एवं सनातन सत्य के रूप में कहे गये महापुरुष के वे तीन लक्षण याद आ जाते हैं जो बिस्मार्क ने स्वीकार किये हैं - *वास्तविक महानपुरुष तीन चिन्हों द्वारा जाना जाता है-योजना में उदारता-उसे पूरा करने में मनुष्यता-और सफलता में सयंम।* निःसन्देह सारस्वत जी के कर्म-क्षेत्र के विविध आयाम अभी तक इन्हीं तीन बिन्दुओं पर केन्द्रित रहे हैं।

उनके भावी जीवन के लिये मैं चंडीदास के शब्दों में यही अरदास करता हूँ कि -

आमि निज सुख-दुःख किछु न जानी।
तोमार कुशले कुशल मानी।।

प्रो० अमृतलाल मदान
वरिष्ठ साहित्यकार–कैथल

सच्चे सरस्वती पुत्र - डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत

हर्ष का विषय है कि हिसार नगर की प्रमुख साहित्यिक संस्था 'साहित्य कला संगम' के प्रधान डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में एक अभिनन्दन पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा हैं। आज के नितांत व्यवसायिक युग में सरस्वती पुत्रों का अभिनंदन करना सचमुच एक सकारात्मक सोच का परिचय देता है।

डा० सारस्वत से मेरा पहला परिचय उनके पत्रों द्वारा हुआ जब मुझे अगस्त २००४ में उदयभानु हंस 'वरिष्ठ साहित्यकार' से सम्मानित किया जाना था। बहुत ही सहज एवं गरिमापूर्ण ढंग से उन्होंने मुझे अपना जीवन परिचय भेजने का अनुरोध किया। ऐसी ही शालीनता का परिचय उन्होंने फोन पर भी दिया।

किन्तु जब रविवार १ अगस्त, २००४ को सुशीला भवन में उनसे भेट हुई तो आश्चर्य हुआ कि यह व्यक्ति इतना विनम्र एवं आत्मीय भी हो सकता है। जब उनके बारे में और अधिक जानकारी मिली कि ये तो चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े डाक्टर हैं और इन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य पैसा न कमा कर समाज सेवा एवं साहित्य सेवा बनाया हुआ है तो मन ही मन इस कर्मयोगी सरस्वती पुत्र को अनेक बार नमन किया। इतनी शिक्षा एवं समाजसेवी संस्थाओं से जुड़ा होना, इतने सम्मान समारोहों में शीर्षस्थ हस्तियों/विद्वानों द्वारा सम्मानित होना, फिर भी कहीं भी अभिमान का लेशमात्र नहीं। ऐसे गुण तो केवल संतो में ही पाये जाते हैं। जितनी देर भी उनसे बातचीत हुई, उन्होंने अपनी मीठी वाणी एवं खुशमिज़ाजी से प्रभावित किया। आतिथ्य सत्कार में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। ऐसे व्यक्तित्व ही आज के अंधकार में प्रकाश स्तंभ बन मार्गदर्शन कर सकते हैं।

डा० साहब को, दीर्घायु की कामना करते हुए, मेरा सादर नमन।

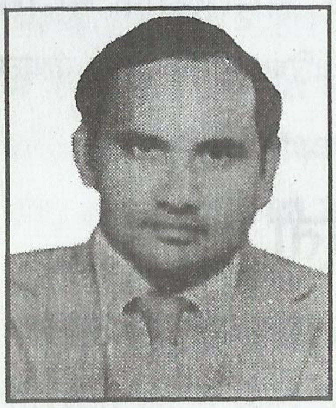

Additional Director
Ayurved Department
Govt. of Rajasthan

A Complete Man

It is a good news that a book is going to be published on Dr. L. N. Saraswat, a noble person and a dear friend of mine.

It is a tough job to describe a very good friend like him in words, because every aspect of his life is a great illustration for all of us. When I think about him, a complete man comes in my mind who is having a great farsightedness, sense of selfless social service and devotion to his profession. He is very loyal to his family and friends. Inspite of all his various activities, he possesses a great sense of humour.

May God bless him with a longer life.

✦ सन्तोषी मनुष्य ही सच्चा सुख भोग सकता है।

✒ आचार्य श्रीराम शर्मा

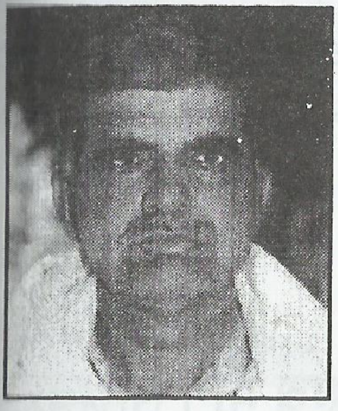

रामकुमार आत्रेय
वरिष्ठ साहित्यकार–कुरुक्षेत्र

समाजसेवी–साहित्यसेवी डा० सारस्वत

'साहित्य कला संगम' के प्रधान डा० लक्ष्मी नारयण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के अवसर पर उनके अभिनन्दन स्वरूप 'मंगल कलश' का प्रकाशन हो रहा है। इसके लिए आप सभी महानुभाव हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

लक्ष्मी एवं पद की तात्कालिक चकाचौंध से प्रभावित हो कर राजनीतिज्ञों, धनपतियों, कारखानेदारों तथा समाजसेवियों का अभिनन्दन तो हर कोई करने को तत्पर रहता है परन्तु समाजसेवियों तथा साहित्यकारों का अभिनन्दन करने वाले तो मुश्किल से ही ढूंढनें को मिलते हैं। 'साहित्यकला संगम' जैसी परोपकारी संस्था के दीपक को प्रज्ज्वलित रखने में जहां आप सभी लोगो ने आधार भूमि का कार्य किया है, वहीं पूज्य श्री उदयभानु हंस जी ने इसके लिए स्वयं को स्नेह बनाकर जलाया है तो डा० सारस्वत बने हैं वर्तिका। ऐसे में आप लोग वर्तिका का मान-सम्मान करके आलोक पूजा की परम्परा को समृद्ध एवं सुदृढ़ बना रहें हैं। साहित्य का उद्देश्य होता है जनता के हितों की रक्षा करना। उसी तरह आयुर्वेद भी अपनी कार्य प्रणाली से जनता का हित करता है। डा० सारस्वत ने आयुर्वेद के माध्यम से जनता की सेवा करके स्वयं को समाजसेवी-साहित्यकार के रूप में स्थापित किया है। ऐसे में षष्टिपूर्ति के अवसर पर मैं इन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।

✦ *धन बल, जन बल, बुद्धि अपार, सदाचार बिन सब बेकार।*

गौरी शंकर अत्री एडवोकेट
पूर्व प्रधान, बार एसोसियेशन, हिसार

गम्भीर विचारक एवं मौन साधक

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर अभिनन्दन समिति द्वारा 'मंगल कलश' पुस्तक के प्रकाशन पर बहुत ख़ुशी हो रही है। समिति के सभी पदाधिकारी और सदस्य बधाई के पात्र हैं।

डा० सारस्वत हिसार की जानी-मानी विभूति हैं। अनेक संस्थाओं के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में प्रायः भाग लेते रहते हैं। शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के तत्वावधान में गायत्री परिवार हिसार शाखा को भी अपना अमूल्य योगदान देते हैं। इन्होंने कभी प्रचार के हथकंडों का सहारा नहीं लिया। मौनसाधक के रूप में गरीबों की सहायता करते रहते हैं। आप अपने शान्त, मृदुल और स्नेहपूरित साधु स्वभाव के लिए प्रसिद्ध हैं। डा० सारस्वत को देखते ही कोई भी यह कह सकता है कि यह कोई आत्मलीन गम्भीर विचारक है। मैंने अनेक बार देखा है कि रोगियों को बहुत प्यार से समझाकर दवाई देते हैं, गुस्सा कभी नहीं करते तथा सदैव हँसते-मुस्कारते रहते हैं।

मैं इनके स्वस्थ-दीर्घ जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की मनोकामना करता हूँ ताकि समाज इनसे और अधिक सद्प्रेरणा लेता रहे।

✦ *अपना-अपना करो सुधार, तभी मिटेगा भ्रष्टाचार।*

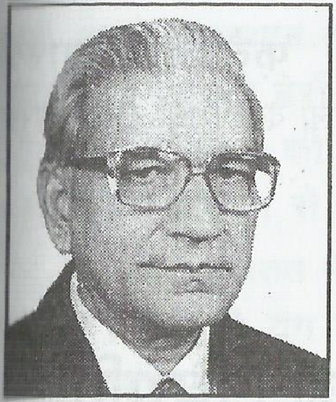

डा० डी० डी० शर्मा
एम.एस
शर्मा नर्सिंग होम, हिसार

दया की मूर्ति-डा० सारस्वत

महान देश भारत में समय समय पर सेवार्थ महान व्यक्ति जन्म लेते हैं। इन्हीं विभूतियों की कड़ी में एक नाम डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत का है। इन्हें मैं एक योग्य, अनुभवी व दयालु चिकित्सक के रूप में तो बहुत समय से जानता हूँ। यह मेरे लघु-भ्राता समान है। इनकी समाज सेवा, धर्म व साहित्य में रुचि ने इनके व्यक्तित्व पर चार चाँद लगा दिये हैं।

''बख़्श दो गर खता करे कोई'' के उसूलों को सिर्फ मानने वाले ही नहीं अपितु चलने वाले भाई लक्ष्मी नारायण वास्तव में एक दया की मूर्ति हैं। इनमें मानवता, मधुभाषिता, सेवा, दया, क्षमा सहनशीलता, धैर्य व ज्ञान का समिश्रण है।

यह अभिनन्दन-ग्रंथ इनके जीवन के नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार जन जन तक पहुँचाने का प्ररेणा स्त्रोत बने एवम् डा० सारस्वत स्वस्थ, दीर्घायु हों।

✦ पवित्र रहो, किसी से डरो मत। मलिन वस्त्र को ही धोबी पत्थर पर पछाड़ते हैं। ✑ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

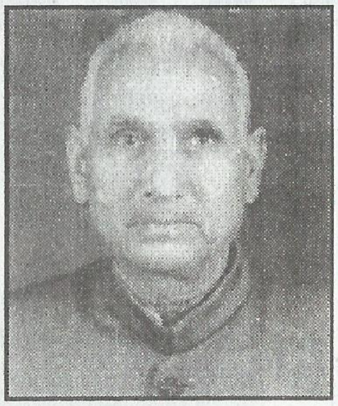

फ़तेहचन्द शास्त्री

प्रधान, श्रीमती शकुन्तला देवी शिक्षा ट्रस्ट, हिसार

हिसार की महान् विभूति

हरियाणा के एक छोटे से गांव सिवानी बोलान में जन्मे डॉ. लक्ष्मी नारायण जी सारस्वत, जो बचपन में अपने संगी-साथियों के साथ ग्रामीण जोहड़ों में उछल-कूद मचाकर, बैलगाड़ी की लीकों में बैठकर रास्ता रोकने का स्वांग रचा कर, गुल्ली डंडा, पत्ती-सुरलिया खेलों में मशगूल रहकर, कबड्डी और गेंदबाज़ी के शौकीन, ज़िन्दगी में इतनी बुलन्दियों को छू लेंगे, यह कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था।

विद्यार्थी जीवन में मेघावी छात्र की ख्याति प्राप्त करना, कार्यक्षेत्र में पदार्पण के बाद पग-पग पर उदाहरण बन कर आगे रहना, कोई मामूली बात नहीं है। यह उनके अथक परिश्रम, लगन और साहस का परिचायक है, जो प्रत्येक नवयुवक के लिए एक प्रेरणा-स्त्रोत कहा जा सकता है।

मैंने जब भी देखा डॉ. सारस्वत को हमेशा मनीषियों और साहित्यकारों के बीच घिरा हुआ पाया। आपमें आत्मविश्वास कूट-कूटकर भरा हुआ है। आप नए उत्साह, नई आशा, नई स्फूर्ति, नई आस्था के साथ शान्तिपूर्वक जीवन जीने के पक्षधर हैं। आपके अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व, आपकी निश्छलता, आपकी छवि और आपकी दूरदर्शिता से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि आप नाम के भूखे नहीं हैं, अपितु ग़रीब और दलितों की सेवा करके प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति हैं। सेवा के बदले कुछ पाने की किसी भी प्रकार की लिप्सा आपके हृदय में कभी नहीं रही। हाँ, मेंहदी बांटते-बांटते यदि हाथों में लाली आ जाए तो और बात है, जैसा कि आपके यशार्जन से प्रतीत होता है।

डॉ. सारस्वत ने अनेक संस्थाओं के संरक्षक, प्रधान, उप-प्रधान और प्रवक्ता रहकर साहित्य-साधना, लोकोपकार एवं अनेक कल्याणकारी

कार्य करके राजस्थान तथा हरियाणा में अपनी ख्याति की सुगन्ध चहुँओर बिखेरी है। आपको ढेरों पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। भारतीय संस्थाओं की बात छोड़ो - अमेरिका की ए.वी.आई. संस्था द्वारा 'मैन ऑफ दी ईयर' अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान से भी आप सुशोभित हैं।

डॉ. सारस्वत ने हिन्दू धर्म की हर बात को बुद्धि की कसौटी पर कसा है। तभी तो युग निर्माण योजना मथुरा की विचारधारा से जुड़कर राष्ट्र निर्माण हेतु घर-घर जाकर यज्ञ कराते हैं। आप द्वारा ''भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा'' का आयोजन एक सार्थक परिणाम लेकर उभरा है, जिससे प्रत्येक छात्र नैतिक शिक्षा ग्रहण करके विशुद्ध भारतीयता से जुड़ता जा रहा है।

डॉ. सारस्वत ने अपने छोटे भाई इंजीनियर श्री देवेन्द्र सारस्वत का विवाह शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में आचार्य श्रीराम शर्मा के सान्निध्य में कराकर एक स्वस्थ परम्परा स्थापित की और अपनी विद्वता, विशुद्धता, भाव-विह्वलता तथा तीव्रानुभूति का परिचय दिया। आज आपकी उसी अनुज-वधू श्रीमती आभा शर्मा के कारण हिसार गौरवान्वित है। क्योंकि उसने साहित्य, शिक्षा, पर्यावरण व कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देकर ''अवन्तिका राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान'' पुरस्कार प्राप्त किया है, जो केन्द्रीय मन्त्री श्री सुबोधकान्त सहाय और डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने अपने कर-कमलों से प्रदान किया है।

मैंने देखा है कि कभी-कभी दिग्भ्रमित करने वाली जटिलाति-जटिल समस्याएं भी आपके सामने आई हैं, परन्तु आपने धृति एवं साहस नहीं खोया। आक्रोश और निराशा के कारण विवेक को नष्ट नहीं किया। निम्नलिखित पंक्तियाँ आपके जीवन पर अक्षरशः घटित होती हैं :-

आघातों से, व्याघातों से, अवरोधक सम्पातों से।
यान प्रगति का कब रुकता है, प्रबल तरंगाघातों से।।

इन सब बातों के दृष्टिगत डॉ. सारस्वत हिसार की उन महान् विभूतियों में से एक हैं, जो साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्य-कलापों द्वारा ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' के उद्घोष को कार्यान्वित कर रहे हैं। मैं भगवान से कामना करता हूँ कि आप शतायु हों और ''साहित्य कला संगम'' संस्था को आपके जीवन-वृत्त पर पुनः एक वृहत् ग्रन्थ छापने का सौभाग्य प्राप्त हो।

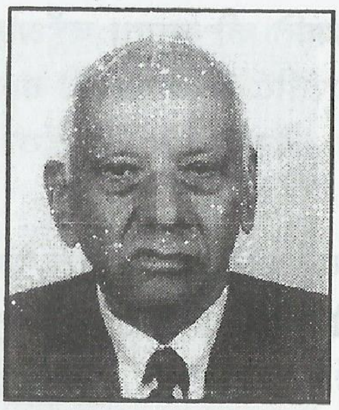

करतार सिंह कौशिक
प्राचार्य गुरु नानक सी० सै० स्कूल
मॉडल टाउन, हिसार

मानवता के प्रतीक – डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत

आयुर्वेदाचार्य श्री लक्ष्मी नारायण जी सारस्वत हिसार के प्रभावशाली कुशल डॉक्टरों में गिने जाते है। इनसे मेरा परिचय बहुत पुराना है। इन का सम्पर्क हिसार ही नहीं, हिसार के दूरदराज़ क्षेत्र से इतना है कि लोग हर बीमारी का इलाज इन से ही करवाने में अपना भला समझते हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, समझता हूँ, इसका एक कारण तो यह रहा होगा कि ये राजस्थान की राजकीय चिकित्सा सेवा में जहाँ भी रहे, अपने क्षेत्र के हरदिल-अज़ीज़ बनकर रहे। लोग इनकी समर्पित सेवा भावना से इतना प्रभावित रहे कि इनका स्थानान्तरण होने पर इन्हें वहीं वापस लाकर इनकी सेवा का लाभ प्राप्त करके अपने को धन्य मानते थे। शायद इसी कारण इनके डॉक्टरी गुणों से लोग इनके प्रति आदरभाव तो रखते ही थे, साथ ही विभिन्न संस्थाओं व सरकार की तरफ से बहुत बार इन्हें सम्मानित और पुरस्कृत भी किया गया। मैंने जितना जाना-समझा है, किसी भी रोग के इलाज में इनका विश्वास ऐलोपैथिक दवाइयों की अपेक्षा आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों व औषधियों से करके सफलता प्राप्त की है।

चिकित्सा के क्षेत्र में इनके जीवन की एक ऐसी विशेषता मैंने देखी है, जो प्रायः डॉक्टरों में कम ही मिलती है। कम क्या, मिलती ही नहीं। वह विशेष गुण है-इनकी दयालुता, उदारता और लक्ष्मीपति होते हुए भी लक्ष्मी के प्रति वीतराग की भावना। मैंने बहुत बार देखा कि बहुत से गरीब, असहाय इनसे मुफ्त दवाई ले जाते हैं। सबसे मुख्य और दिलचस्प बात तो यह है कि एक बार ही नहीं, जब तक उसका पूर्ण इलाज नहीं हो जाता, निःस्वार्थ भाव से उसका इलाज करते हैं। प्रायः डाक्टरों और

वक़ीलों के लिए तो यह प्रसिद्ध है कि ये तो अपने निजी से भी पैसे वसूल कर लेते हैं। इन्हें किसी का लिहाज़ नहीं। उनका मुहावरा है कि ''घोड़ा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या ? ''पर इनके दरवाज़े पर आया कोई दीन-हीन दया व सहायता पाए बिना ख़ाली नहीं लौटता। मेरी समझ में दीन-हीन की निःस्वार्थ सेवा ही असली ईश्वर भक्ति है, जो उन्हें प्राप्त है। इसे मैं अतिश्योक्ति के रूप में बना कर नहीं कहता। मैंने स्वयं अनुभव किया है। अपने परिचितों से भी सारस्वत जी दवा का पैसा नहीं लेते। मेरे साथ भी एक-दो बार जब ऐसा हुआ, तो मैंने इनके व्यवसाय को देखते हुए इन की दवा लेना ही छोड़ दिया। इस उदारता और दयालुता का धनी आज के युग में शायद ही कोई डॉक्टर हो।

इनकी लोकप्रियता केवल चिकित्सा के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। इनकी सेवा और उपकार की भावना समाज के अन्य क्षेत्रों में भी प्रचलित और प्रसारित है। कई सामाजिक व साहित्यिक सभाओं के प्रधान पद को ये सुशोभित करते रहे और कर रहे हैं। विभिन्न सभाओं के मानद पद पर रहकर इनकी कार्यकुशलता, संगठन-संचालन, मिलनसारिता, मृदुभाषी संवाद और विनयशीलता का प्रभाव ऐसा जम जाता है कि उस सभा-संस्था को चार चाँद लग जाते हैं।

मैं अपने हृदय के इन उद्‌गारों के साथ एक सरल, सात्विक, सदाचारी, समाज व साहित्यसेवी, निश्छल, निःस्वार्थ व्यक्तित्व के प्रति 'षष्टिपूर्ति' के शुभअवसर पर उनकी स्वस्थ, दीर्घायु की कामना करता हूँ कि वे अधिक से अधिक समाज की सेवा करने में अपना योगदान दे सकें।

✦ *निज सुख औरों तक पहुँचाओ, सदा पराई पीर घटाओ।*

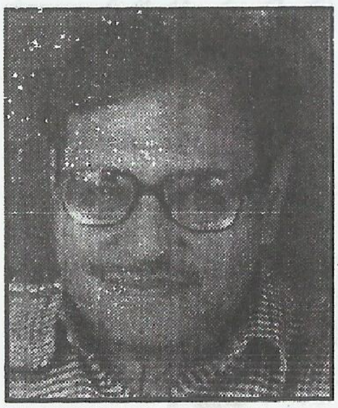

कमलेश भारतीय
वरिष्ठ स्टाफ रिपोर्टर
दैनिक ट्रिब्यून, हिसार

सद्व्यवहारी व साहित्यानुरागी-डा० सारस्वत

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत के अभिनन्दन ग्रंथ के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ! हिसार में सन् १९९७ में आने के बाद से यह सुखद संयोग है कि न केवल मेरा निवास डा० सारस्वत के निकट है बल्कि मेरा मन व मिज़ाज भी उनसे अच्छी तरह मिलता है। वे 'साहित्य कला संगम' के माध्यम से साहित्य-प्रेमियों को जोड़े रखने व उनसे जुड़े रहने के लिए निरन्तर प्रयासरत् रहते हैं। यह उनके सद्व्यवहार व साहित्य-अनुराग का ही प्रमाण है कि वे अपने आवास पर जब-जब काव्य-गोष्ठी का आयोजन करते हैं, मैं उसमें जाने का मोह कभी नहीं छोड़ता, चाहे मुम्बई से आए मधुकर गौड़ के सम्मान में काव्य-गोष्ठी हो या सामान्य गोष्ठी। डा० सारस्वत के आवास पर हुई गोष्ठियों का वातावरण व स्तर सदैव याद रहेगा। आज साहित्य में पठन-पाठन कम हो रहा है, ऐसे में साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं इसकी मशाल को समाज में जलाए रखने के लिए डा० सारस्वत जैसे साहित्य प्रेमियों की बहुत ज़रूरत हैं। उनका अनुराग बना रहे, इसलिए अभिनंदन भी सराहनीय है। मेरी पुनः शुभ कामनाएँ।

✦ दूसरों के द्वारा अपना आदर चाहते हो, तो दूसरों का आदर करो। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

Manjushree Dass
Ex. Principal
Vishwas Sr. Secondary School, Hisar

A LOVABLE BROTHER AND A DEDICATED DOCTOR

I first met him some time in the third week of November, 1988. My second daughter's marriage was fixed on 25th November that year and guests and relatives had already started arriving from distant places. As it often happens, it was not possible to house them all in our not too big residence. We were therefore, obliged to search for places around our house where we could accommodate them comfortably. Fortunately, just behind our own house, in the next lane, a reasonably big house was lying vacant. The owner of the house was a resident of Bombay. So some one advised us that we should contact one Dr. L. N. Saraswat whose clinic was situated at Dabra Chowk. I went to the clinic with my brother with some trepidation. I did not know what kind of man Dr. Saraswat was, and whether he would be willing or able to oblige us.

What we saw in the clinic, as soon as we entered, was something unbelievable. A very handsome young doctor who oozed confidence and goodwill, was burning incense in front of the photograph of my father. He did not turn to look at us, though he must have sensed the presence of two strangers, in his thought, a patient and his/her escort. With closed eyes, joined palms and his head bowed as a mark of respect to his Guru he said some mantras. After

he had paid his obeisance, he looked at us with a bright beaming face and smile.

Eversince then we have been brother and sister. Eversince then every year I have been eagerly waiting for two days- Raksha Bandhan and Bhratridvitiya. It is great to have a brother who is also a great doctor living in the same town where a married woman lives. Dr. Saraswat is a source of strength and security to me and my family.

That a docotor would be good to his sister is only natural, but it is very rare, indeed (at least in the present times), that he should be equally caring and concerned for his patients. Though by profession Shri Saraswat is a doctor, in his attitude he is humane and loving. He does not look at a patient as a potential source of income. His business is to cure the patient of his ailment, to relieve his pain. He is basically a religious man. I say not because he is so close to our family but because he is really so. I am confident that the whole town will bear me out.

Once Dr. Saraswat took us to his alma-mater at Sardar Shahar (Rajasthan) on the occasion of an alumni associates meeting. Everyone there,-both his seniors and juniors were delighted to meet him. He is universally loved and admired by all those who are associated, with the college from where Dr. Saraswat graduated. This reflects his loving and lovable nature and his friendly attitude towards the world. His teachers also loved and trusted him.

The teacher of a medical college will entrust difficult and complicated medical cases only to the best. The one who knows the ethics of his profession, is responsible,

dutiful, has dependable knowledge of medical jurisprudence, and above all his own branch of specialization. The price of the trust of teachers in a medical college is absolute dedication to his profession. Dr. Saraswat won this trust.

His patients today are enjoying the benefits of their physician's devotion to his profession. Treating patients is not merely Dr. Laxmi Narain's profession, it is a mission for him. His patients are half cured during the period of consultancy and counselling only. The other half of the ailment is cured by doctor sahib's unfailing diagnosis and medicines.

Dr. Saraswat is a multi-dimensional personality. Himself noble and simple, he quickly discovers the essentially noble and lofty qualities in men who possess them.

He has been awarded and honoured several times for his contributions to social life of this vast region.

On the happy occasion of Dr. Laxmi Narain's Sashti Purti we sincerely wish him and pray for his another sixty years happy and fruitful life. May the Lord Krishna shower on him his blessings.

✦ शरीर, मन व वचन से संयत रहने वाले, बुद्धिमान मनुष्य ही वास्तव में सुसंयमी कहलाते हैं। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

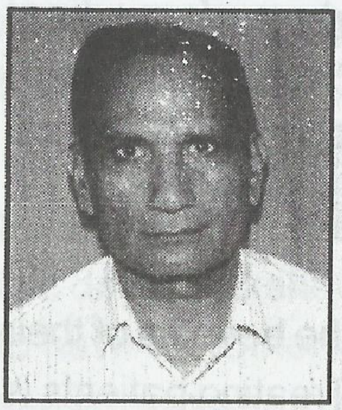

एम० एल० शर्मा
कार्यकारी अभियन्ता (सेवानिवृत्त),
हिसार

चुम्बकीय व्यक्तित्व

डा० लक्ष्मीनारायण जी सारस्वत से मैं पहली बार सन् १९८७ में मिला, जब मैं हिसार स्थानान्तरित होकर आया था। मुझे मकान की तलाश थी और इसी सिलसिले में मैं उनसे मिला था। यद्यपि मकान के विषय में हमारी बातचीत सिरे नहीं चढ़ी, फिर भी हमारा परिचय प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होता गया। यह एक सुखद आश्चर्य ही था कि जिस कार्य के लिए मैं उनके सम्पर्क में आया, उसके असफल होने पर भी मेरा उनके प्रति अपनत्व, आदर, प्रेम तथा सद्‌भाव बढ़ता ही चला गया। अब, जब भी मैं इस अतीत पर दृष्टि डालता हूँ, तो यही लगता है कि लक्ष्मीनारायण जी के व्यक्तित्त्व में अवश्य ही कुछ ऐसा आर्कषण है जो मनुष्य को उनकी ओर खींचता है। मैं भी इसका अपवाद नहीं हूँ।

उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है जो औरों में कम ही मिलता है। उनके इस चुम्बकीय व्यक्तित्व का सही विश्लेषण वही कर सकता हैं जिसने इस आकर्षण को अनुभव किया है, उनके सद्‌भाव को भोगा है तथा उनकी भावुक सहृदयता को निकट से परखा है। यह मेरा सौभाग्य ही रहा कि मैं पिछले १७ साल से निरन्तर उनके सान्निध्य में रहकर उनकी अनेक विशेषताओं का साक्षी रहा हूँ तथा उनके इस सुवासित व्यक्तित्व की गंध का रसास्वादन करता रहा हूँ। उनका मनोहारी सौष्ठवतापूर्ण मुखमण्डल तो ईश्वर प्रदत्त है ही पर उनकी सौम्यता, नम्रता, मधुरवाणी, भव्य भाव-भंगिमा, व्यवहार कुशलता तथा वाक्पटुता ने उनके व्यक्तित्व को निखारकर अभिनन्दनीय बना दिया है।

वे एक कुशल चिकित्सक के साथ साथ एक सहृदय तथा दयालु

इंसान भी हैं। अपने मरीज़ों के साथ उनका सुशील नम्र-व्यवहार भी प्रशंसा योग्य है, पर साथ ही अधिक प्रशंसनीय है उनका ग़रीबों का मुफ़्त निदान तथा अपनी ओर से मुफ़्त दवा देना।

यहाँ उनके सामाजिक कार्यों का उल्लेख करना भी मैं आवश्यक समझता हूँ। वे शहर की सामाजिक व साहित्यिक गतिविधियों से गहनता से जुड़े हैं। गायत्री परिवार का हिसार में विकास तथा कार्यकलाप सब उन्हीं के भरोसे चलता है। शहर के प्रतिष्ठित नागरिकों में उनका अपना स्थान है। ऐसे बहुप्रतिभाशाली चुम्बकीय व्यक्ति की षष्टिपूर्ति के अवसर पर मैं उनके स्वास्थ्य तथा सुखमय जीवन तथा शतायु होने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

✦ स्वर्ग और नरक दोनों अपने अन्दर हैं। यह अपने मन पर निर्भर है कि स्वर्ग प्राप्त करें या नरक।

— आचार्य श्रीराम शर्मा

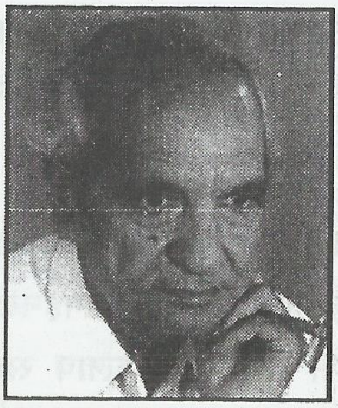

पूरन मुद्गल
वरिष्ठ साहित्यकार, सिरसा

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सारस्वत दिव्य गुणों से शोभित ऐसे मनुष्य हैं, जिन के सम्पर्क में एक बार भी आने वाला सदा-सदा के लिए उन के व्यक्तित्व का प्रशंसक बन जाता है। वे व्यवसाय से तो एक सफल और सुयोग्य डॉक्टर हैं, किन्तु उन की शालीनता, विनम्रता स्नेहिल व्यवहार और समाज सेवा के उत्साह ने उन्हें हिसार नगर की एक विशेष विभूति बना दिया है।

'साहित्य कला संगम' के प्रधान के रूप में उन्होंने सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं हरियाणा के प्रथम राज्यकवि उदयभानु हंस के मार्गदर्शन में पूरे प्रदेश में विशिष्ट कवियों-साहित्यकारों को सम्मानित करने की जो स्वस्थ परम्परा आरम्भ की है, वह निःसंदेह एक अनुपम उदाहरण है।

> ✦ वही उन्नति कर सकता है, जो अपने को उपदेश देता है।
>
> ✒ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

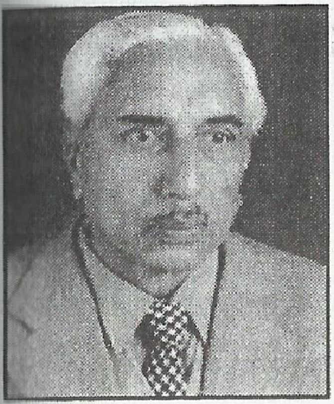

जयकुमार जैन
वरिष्ठ साहित्यकार–हिसार

विनम्रता है जिसकी पहचान

मधुरता, विनम्रता एवं उदारता किसी व्यक्ति की महानता का अधिकृत चिह्न माना गया है। ऐसा हमारे शास्त्रों में वर्णन आता है। जो व्यक्ति विनम्र होगा वह अवश्य ही सद्व्यवहार के गुण से अलंकृत होगा। जिस के हृदय में दूसरों के प्रति आदर भाव होगा वह व्यक्ति स्वयं आदर प्राप्त कर लेता है।

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत भी एक ऐसे ही व्यक्तित्व का नाम है। डा० सारस्वत से मेरा परिचय 'साहित्य कला संगम' के माध्यम में लगभग ५ वर्ष पूर्व ही हुआ था। डा० सारस्वत साहित्य कला संगम के गत कई वर्षों से अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। मैं भी तीन वर्ष तक इस संस्था का सचिव रहा। डा० सारस्वत की कार्य प्रणाली से व इन के व्यवहार से बहुत ही प्रभावित रहा हूँ। कला संगम के कार्य के विस्तार हेतु व गोष्ठियों के आयोजन के लिए उनसे विचार-विमर्श होता रहता था और यह सम्पर्क बढ़ता ही गया।

डा० सारस्वत व्यवहार-कुशल हैं। किसी की आलोचना करना उनके स्वभाव में नहीं अपितु दूसरों की कड़वी बात व दूसरों के अप्रिय व्यवहार को भी वह सहज लेते हैं और अपनी ओर से सज्जनता का ही परिचय देते हैं। वाणी व व्यवहार में अहंकार नहीं और न ही कभी क्रोध के भाव देखने को मिले। परोपकार की प्रवृति है। व्यवसाय से डॉक्टर तो हैं परन्तु इस व्यवसाय को कलंकित नहीं किया जब कि इस व्यवसाय में लोभ की प्रवृति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ग़रीबों को निःशुल्क दवाई देते हुए मैंने कई बार देखा है। यदि किसी रोगी

के पास कम पैसे होते है तो वे भी प्रसन्नता पूर्वक लेते हैं और कहते हुए सुना है 'कोई बात नहीं।'

डा० सारस्वत अनेक सामाजिक धार्मिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और सम्मानित हो चुके हैं। धार्मिक प्रवृति और सुसंस्कार इन्हें अपने पिता पं० सीताराम जी सारस्वत से ही मिले जिनका हिसार ज़िले के ग्रामीण क्षेत्र में बहुत आदर व सम्मान रहा है।

मैं यहाँ यह उल्लेख विशेष रूप से करना चाहूँगा कि डाक्टर साहब ने मुझे प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं वरिष्ठ साहित्यकार धर्मगुरु स्व० पं० श्रीराम आचार्य का साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी। वे शांतिकुज हरिद्वार के गायत्री परिवार से संबद्ध हैं।

डा० सारस्वत अपने जीवन के ६० मधुर वसंत देख चुके हैं। कहा तो जाता है कि यह काल सेवानिवृत्ति का है परन्तु डा० सारस्वत में आत्मविश्वास है और पूरी ऊर्जा है, और यह ऊर्जा परोपकार में ही लगे। आप में आत्मीयता है व परोपकार की भावना भी हैं।

व्यास जी ने कहा है :-

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्

अर्थात्ः परोपकार से पुण्य और परपीड़ा में पाप होता हैं।

मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि डा० साहब में आत्मविश्वास व ऊर्जा चिरकाल तक बनी रहे ताकि समाज, राष्ट्र व धर्म की सेवा करते रहें।

✦ राष्ट्र का उदय नारी जाति के उदय से होता है।

आचार्य श्रीराम शर्मा

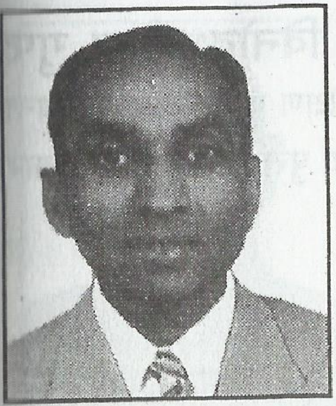

डा० राजकुमार निजात
वरिष्ठ साहित्यकार–सिरसा

मानव शिरोमणि–डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत

परम श्रद्धेय डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत के साठ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में उनके सम्मान में अभिनन्दन स्मारिका 'मंगल कलश' प्रकाशित करने का साधु प्रयास बेहद प्रसन्नता की बात है। धर्म, साहित्य, समाज-सेवा, मानव-सेवा, शिक्षा-प्रसार आदि विभिन्न माध्यमों से सारस्वत जी द्वारा जो अनेक सेवा कार्य किए गए हैं वे इन्हें मानव शिरोमणि बनाते हैं। जीवन को दूसरों के लिए समर्पित कर देना तथा दबे, कुचले दलित लोगों के लिए संघर्ष करने का जो निःस्वार्थ भाव इनमें है वह समाज में सभी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। मैं नहीं समझता मेरा स्तुति-गान सारस्वत सरीखे महापुरुष, सेवा-पुरुष और भाव-पुरुष के लिए अपेक्षित होगा लेकिन हम सभी भावी पीढ़ी के लोगों के लिए उनके द्वारा किए गए इन विविध महती कार्यों का गान करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि निःस्वार्थ भाव से उपजे कार्य मनुष्य को ईश्वर तुल्य बना देते हैं। अतः इस दृष्टि से मैं इनके महान् कार्यों को हृदय से, मन से, बुद्धि से व भावों से नमन करता हूँ। दरअसल आदरणीय सारस्वत जी सरीखे मानव-पुष्प समाज में बिरले ही मिलते हैं।

आज जबकि विश्व मानव समाज में कल्याणी भावों एवम् कल्याणी कार्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है और मानव छल, प्रपंच, कपट, लूट, धोखा, छीना-झपटी में मग्न है ऐसे में सारस्वत जी द्वारा ऐसा पथ चुनना निःसन्देह हम सबके लिए प्रेरणा एवम् सबक़ ग्रहण करने का सुअवसर है। इसके लिए हम जागरूक लोगों का यह नैतिक कर्त्तव्य भी बनता है कि हम इनके कार्यों का सम्मान करें।

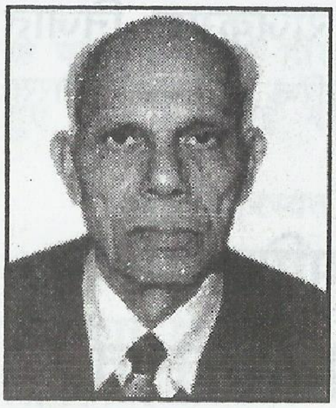

विनोद शंकर गुप्त
पूर्व उप–अधीक्षण पुरातात्विक अभियन्ता
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (हिसार)

साहित्यानुरागी : डा० एल० एन० सारस्वत

हिसार नगर बड़े-बड़े उद्योगों के लिए जाना जाता है। इसी तरह यहाँ अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ भी हैं। उन्हीं में से एक प्रमुख साहित्य संस्था है 'साहित्य कला संगम' और उसके प्रधान है डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी जो एक प्रतिष्ठित चिकित्सक ही नहीं हिन्दी-साहित्य अनुरागी भी हैं। एक व्यस्त प्रसिद्ध चिकित्सक होते हुए भी आप इस नगर की अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। सरल एवं विनम्र स्वभाव वाले डॉक्टर सारस्वत जी से मेरा परिचय अधिक पुराना न होते हुए भी लगता है कि वे मेरे निकटतम हैं। जब भी उनसे मुलाक़ात होती है वे बड़ी विनम्रता से मिलकर सम्मान देते हैं। यह उनकी विशेषता है।

जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि डा० सारस्वत जी की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में एक पुस्तक 'मंगल कलश' का प्रकाशन हो रहा है। वैसे तो वे अनेक संस्थाओं से पुरस्कृत व सम्मानित हो चुके हैं परन्तु अब उनकी षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में जो यह 'मंगल कलश' प्रकाशित कर अभिनन्दन किया जा रहा है, प्रसन्नता की बात है। मेरी मंगलकामनाएँ हैं।

✦ दाम्पत्य-जीवन चित्त की शान्ति का एक प्रधान साधन है।

— आचार्य श्रीराम शर्मा

प्रो० दर्शन सिंह ठाकुर
वरिष्ठ प्राध्यापक, दयानन्द कॉलेज,
हिसार

वर्तमान युग में मानव-रत्न

यह बड़े हर्ष का विषय है कि हिसार के प्रतिष्ठित समाज सेवी, सरल हृदय, मधुरभाषी, कर्मठ एवं विनम्र डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत का अभिनंदन किया जा रहा है। मैं डा० सारस्वत जी के सम्पर्क में लगभग छः वर्षों से हूँ और विश्वास से कह सकता हूँ कि डा० साहब एक योग्य चिकित्सक के रूप में ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के संरक्षक तथा ग़रीबों के मसीहा के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका सारा जीवन पुरुषार्थ तथा दलित वर्ग की सेवा में लीन रहा है। डा० साहब सदैव ही मानव विकास के कार्यों में जुटे रहे हैं। चिकित्सा क्षेत्र तथा सामाजिक क्षेत्र में उनके योगदान को देखते हुए भारत के राष्ट्रपति तथा कई अन्य संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया है। वर्तमान भौतिक युग में डाक्टर साहब एक मानव-रत्न हैं और हम उनकी दीर्घायु की प्रार्थना करते हैं।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी डाक्टर साहब की निःस्वार्थ सेवा-भावना, सज्जनता और मानव प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है। सौभाग्यवश मेरी माताजी जिनकी आयु ६० वर्ष के लगभग है, मेरे पास रहती हैं। इस वृद्धावस्था में मेरी माता जी को एक कुशल चिकित्सक की आवश्यकता अधिक रहती है। वे जब भी माता जी का निरीक्षण करने आते हैं तो उनसे बड़े आदर से मिलते हैं और चरण स्पर्श करके कहते हैं कि मैं तो आपका आशीर्वाद लेने आया हूँ। मैं उनको अपने पड़ौस में पा कर सौभाग्यशाली और गर्वित अनुभव करता हूँ। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ, कि डाक्टर साहब देदीप्यमान नक्षत्र के समान हमेशा प्रदीप्त रहें।

मैं अभिनन्दन समिति के आयोजकों का आभारी हूँ जिन्होंने डॉक्टर साहब जैसे श्रेष्ठ पुरुष का समाज में उनकी गरिमा और प्रतिष्ठा कायम रखने का निर्णय लेकर एक अनुपम उदाहरण पेश किया है।

डॉ० रमाकान्त शर्मा

एम.ए., पी.एच.डी,

वरिष्ठ साहित्यकार, भिवानी

सरस्वती पुत्र : डॉ० सारस्वत जी

डॉ० लक्ष्मीनारायण सारस्वत एक ऐसे सरलता सम्पन्न व्यक्तित्व के स्वामी हैं जो थोड़ी-सी बातचीत में ही अपना सहज परिचय प्रस्तुत कर देते हैं। उनकी सादगी, विनम्रता, आध्यात्मिकता ओढ़ी हुई नहीं लगती, वास्तव में ये सारे मानवीय गुण उनके व्यक्तित्व के सहज गुण हैं। मुझे लगता है कि सारस्वत जी ने आयुर्वेद की चिकित्सा द्वारा मानव देह के रोगों का निदान तो किया ही है, साथ ही भौतिक संसार में आधि-व्याधि से घिरे मनुष्य मन को आध्यात्मिकता का संस्पर्श भी प्रदान किया है। निश्चित अर्थों में व्यापक सोच वाले व्यक्तित्व ही ऐसा कर पाते हैं।

डॉ० सारस्वत की सेवाएँ अनेक क्षेत्रें को प्राप्त हुई हैं। प्रभु ने उन्हें सुन्दर स्वस्थ जीवन-व्यक्तित्व प्रदान किया है, तो उन्होंने प्रभु के इस वरदान को प्रभु के संसार को सुंदर बनाने में ही लगाया है। मनुष्य जीवन का परम ध्येय भी यही होना चाहिए। विद्यार्थी जीवन से आज तक सामाजिक-साहित्यिक कार्यों में उनकी सारस्वत भूमिका ने उन्हें ऐसा व्यक्तित्व प्रदान किया है, जहाँ निजता एवं परता की विभेदी पर्तें विलुप्त हो जाती हैं। मुझे लगता है कि बिना आध्यात्मिक संसर्ग के सहज साधना के इस सोपान पर आ पाना अत्यंत कठिन है। सिद्धांतों को मात्र वक्तव्यों तक सीमित रखकर आदर्श का बखान तो सर्वत्र ही हो रहा है। हम रोज़ ही देखते हैं कि आदर्शवाद के टूटे कनस्तरों की कनफोडू आवाज़ें बची खुची मानवता को मेटने पर तुली हुई हैं। ऐसी स्थिति में सिद्धांत और कर्म में अद्वैत के आग्रही बुद्धिजीवियों की आवश्यकता है। यद्यपि यह कार्य कठिनतर है, परन्तु यदि 'मानव सत्य' को जीवित रखना है तो बुद्धिमानों को अपने लोभ भरे अरमानों को ख़ारिज करना ही पड़ेगा। बाँग्ला के कवि चण्डीदास ने कहा है—

'सुनहु मानुस भाई!
सबार ऊपरे मानुष सत्य ताहार ऊपरे किछु नाईं!'

अर्थात् हे मनुष्य भाई सुनो, सबके ऊपर मानव सत्य है, उससे ऊपर कुछ नहीं।

मैं समझता हूँ इस मानव सत्य की रक्षा तभी हो सकती है जब हम व्यर्थ के मान-अभिमान, राग-द्वेष, स्वार्थ से ऊपर उठें, एक स्वस्थ सामाजिक संरचना के बारे में कृत-संकल्प हों।

डॉ॰ सारस्वत के सामाजिक अवदानों की सूची छोटी नहीं है, एक बात उनमें ऐसी है, जो उन्हें आध्यात्मिक पटल पर भी रेखांकित करती है। युगनिर्माण योजना में उनकी उपस्थिति मात्र सिद्धांत पक्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि कर्म के स्तर पर भी, व्यवहार में उन्होंने परमपूज्य श्रीराम शर्मा आचार्य के सिद्धांतों को जिया है। आदर्श विवाह की स्वस्थ परम्परा को क़ायम रखते हुए उन्होंने जिस प्रकार अपने इंजीनियर भाई का वैवाहिक अनुष्ठान शांतिकुंज हरिद्वार में पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य के सान्निध्य में सम्पन्न कराया, वह सिद्धांत को जीवन में उतारना ही है।

अनेक सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत डॉ॰ सारस्वत की सेवा-साधना प्रणम्य है। वे दलितों के हितचिंतक हैं। गायत्री मिशन के मौन सेवाभावी हैं। दहेज प्रथा, नशामुक्ति जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध उन्होंने सदैव सामाजिक जागरूकता का शंखनाद किया है। वृक्षारोपण में उनका योगदान उनकी पर्यावरण चिंता को दर्शाता है।

डॉ॰ सारस्वत स्वस्थ सानंद रहें। अपने शुभ संकल्पों, सुकृत्यों की मनोहारी सुगन्ध से वे इस समाज को सुगन्धित करते रहें। उनकी षष्ठिपूर्ति पर उन्हें सपरिवार कोटिशः प्रणाम।

✦ *सिर अनीति को नहीं झुकाएँ, चाहे प्राण भले ही जाएँ।*

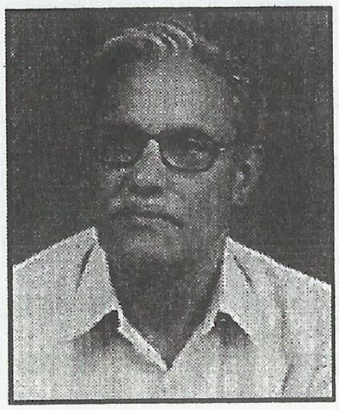

निहाल सिंह
कार्यकारी अधिकारी
नगर परिषद, हिसार

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत - एक व्यक्तित्व

गायत्री मिशन शान्तिकुंज हरिद्वार का ३ दिन का शिविर हिसार में डा०ओमप्रकाश जी के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस आयोजन में निमन्त्रण देने हेतु श्री डी० एम० लाल. ए०जी०एम० दूरभाष विभाग एवं कार्यवाहक गायत्री परिवार हिसार के साथ डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत से मेरा पहला परिचय हुआ। डा० सारस्वत का सौम्य, सरल, मधुर एवं मिलनसार स्वभाव देखकर मन को बहुत शान्ति हुई। सामान्य रूप से सुबह से लेकर सांय तक नगरपरिषद् के प्रशासनिक कार्यों के सन्दर्भ में अनेकानेक व्यक्तियों से सम्पर्क होता है। प्राय: सभी को कम और ज़्यादा नगरपरिषद् से सम्बन्धित कठिनाइयों के बारे में शिकायत या मांग होती है। इतने मिलने वालों में कुछ ही व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनसे दोबारा मिलने को मन करता है। डा० साहब ने अपने मधुर एवं हँसमुख स्वभाव से निमन्त्रण के साथ-साथ नगरपरिषद से सम्बन्धित कुछ कठिनाइयों के समाधान हेतु जिस सरलता से बात की, वह मन को गहरे तक छू गई। मन को लगा कि काश सभी आने वाले इसी प्रकार का सौम्य एवं हँसमुख स्वभाव रखें तो कार्य निपटाने में कितना आनन्द आए।

तत्पश्चात् कुछ मुलाक़ातें और भी हुई जिनमें डा० साहब के बहु-आयामी व्यक्तित्व के स्वामी होने की जानकारी प्राप्त हुई। संस्कारवश मैं भी गायत्री परिवार की विचारधारा रखता हूँ। बातचीत से पता चला कि आदरणीय डा० साहब का ग़रीबों एवं दलितों को मुफ्त दवाइयों का वितरण, गाँधी वादी विचार, तड़क भड़क से दूर, जनसेवा में लगे

रहने की भावना मुझे ओतप्रोत कर गई। आदरणीय डा० साहब धार्मिक विचारों के सहृदय, साहित्यिक रुचि वाले कर्मठ व्यक्ति हैं। उनका जीवन समाज सेवा एवं ग़रीब व दलितों की सेवा में रत् है।

एक विचार का उदय हुआ कि अगर सभी इसी प्रकार से इन्सान समाज में हों तो समाज कितना सुखमय हो। डा० सारस्वत अन्धेरी रात में दीपक के समान प्रकाश देने एवं जुही के फूल की तरह खुशबू देने वाले व्यक्ति हैं। मैं कामना करता हूँ कि डा० साहब सदा यह ख़ुशबू समाज में फैलाते रहें।

✦ आलस्य का अर्थ समय की चोरी है। यदि मनुष्य आज का काम कल पर न टाले तो बहुत सी बुराइयों से बच सकता है।

आचार्य श्रीराम शर्मा

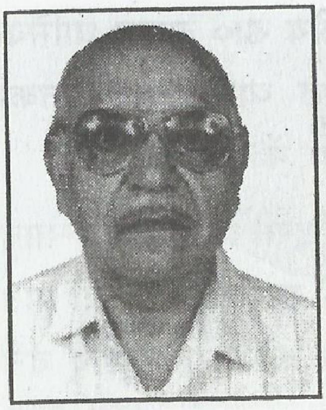

Prof. H. C. Nagpal
Ex. Dean, Extra Mural Department,
Dayanand College, Hisar

Dr. L.N.Sarswat :- A Multifaceted Personality

At the very first meeting, Dr. L.N. Sarswat strikes you as an embodiment of humility, culture and goodwill. The most recurring of his images, that comes to my mind is that of a saintly soul, greeting you with a smile and folded hands. He is a multi-faceted personality with sterling qualities of head and heart.

Despite a light frame, he is energetic and agile enough to attend to various activities with competence. His active presence and involvement in the social, religious and literary life of the city is remarkable. No doubt then that he is either an office-bearer or a valuable member and efficient worker of one or the other of various organisations, for which he has been rightly awarded and recognised by many distinguished personalities.

He has a vast circle of friends and acquaintances. He is good at not only establishing relationships but also maintaining and nourishing them painstakingly. He is generally the first person to wish you on a New Year Day. On Diwali his greeting card reaches you well in time without fail. I can never forget the way he regarded my ailing old mother as his own. He would touch her feet reverentially every time he visited and treated her with love and devotion,

free of cost despite my repeated requests for payment. How he values relations is evident from the fact that he extends similar regards to me as he does to his 'samdhi' Sh. A.L. Joshi, who happens to be brother-like to me.

As a physician, he is good not only at his job, but also committed to help the poor and needy. A good number of his free patients come from the down-trodden and low strata of society. The motto of his life seems to be 'Nishkam Karam' as propounded in the Gita. He is also a deeply religious and spiritual person. His participation in the activities of Arya Samaj and Gayatri Mission is commendable.

Completing 60 years of life is in itself touching an important milestone of life but doing so with such distinction is creditable. On this auspicious occasion, I heartily pray to God Almighlity to grant him many many more years of fruitful and selfless life.

✦ किसी के साथ उपकार किया है, तो उसे प्रसिद्ध करके लज्जित मत करो। — आचार्य श्रीराम शर्मा

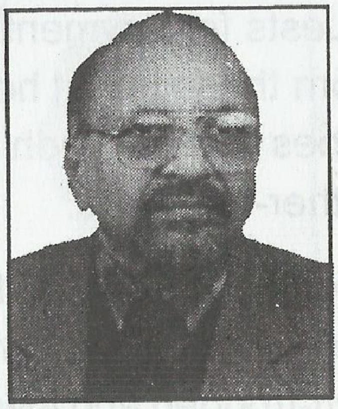

डा० इन्द्रजीत
अध्यक्ष, जन कल्याण मंच, हिसार

उच्च आदर्शों के प्रेणता : डा० सारस्वत

मैं सबसे पहले तो डा० लक्ष्मी नारायण 'सारस्वत' को उनकी षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में हार्दिक बधाई देता हुआ मंगलकामना करता हूँ कि परमात्मा ऐसे महान व्यक्ति को सौ वर्ष की दीर्घायु प्रदान करे।

इसके साथ ही मैं डा० लक्ष्मीनारायण 'सारस्वत' अभिनन्दन समिति का आभार प्रकट करते हुए बधाई देता हूँ कि उन्होंने ऐसे उच्च आदर्श व्यक्ति की षष्टिपूर्ति पर अभिनन्दन करने का पवित्र कार्य किया है।

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत की वैसे तो जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है लेकिन मेरे विचार से वे सही अर्थों में गीता में वर्णित एक स्थितप्रज्ञ व्यक्ति हैं क्योंकि उन्होंने अपनी सुपुत्री के आकस्मिक निधन पर जो असीम संयम एवं सहनशीलता का परिचय दिया, वह वास्तव में ही बहुत कम व्यक्तियों में मिलता है।

वे मृदुभाषी, श्रेष्ठ चिकित्सक तथा ग़रीबों की सहायता के लिए हमेशा सहयोग देते रहते हैं। नगर की प्रमुख साहित्यिक संस्था 'साहित्य कला संगम' के प्रधान के तौर पर उन्होंने हिसार में साहित्यकारों को जो आदर व भव्यता प्रदान की है, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। उनके कार्यकाल में हिसार में साहित्य की उन्नति हुई है, जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

वे उभरते हुए साहित्यकारों का न केवल सत्कार करते हैं बल्कि प्रोत्साहित भी करते हैं। परमात्मा उन्हें अच्छे स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु प्रदान करे।

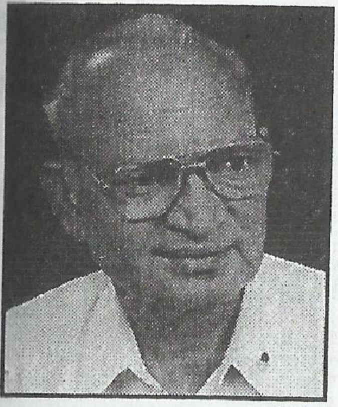

लॉयन डा० प्रताप सिंह सांगवान

ज़िला केबिनेट सचिव

लॉयन्स क्लब, सांगवान हस्पताल,

उकलाना मंडी (हिसार)

समाज उत्थान में अग्रणी

जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि ''साहित्य कला संगम'' द्वारा डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में पुस्तक ''मंगल कामना'' का प्रकाशन तथा उनका नागरिक अभिनन्दन भी किया जा रहा है।

पूज्य भ्राता लक्ष्मीनारायण जी से मेरा सम्बन्ध पिछले ३५ वर्षों से रहा है। उनके छोटे भाई डा० खुशीराम सारस्वत मैडिकल कॉलेज रोहतक में हमारे सहपाठी थे। उनसे मिलने लक्ष्मीनारायए जी अक्सर आते रहते थे और उच्च विचारों से हमें सदैव प्रभावित करते थे। सामाजिक उत्थान, ग़रीबों की निःशुल्क चिकित्सा व शिक्षा क्षेत्र में हर संभव प्रयास के लिये वे सदैव तत्पर रहते हैं। पारिवारिक व सामाजिक ज़िम्मेवारियों को वह बख़ूबी समझते हैं और उनका निर्वाह करते हैं। वह बहुत सी सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और अच्छे कार्यों के लिए समय-समय पर उन्हें सम्मानित किया गया है। वह सही अर्थों में इस सम्मान के हक़दार हैं।

मैं उनके नागरिक अभिनन्दन पर उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और दीर्घायु की कामना करता हूँ।

✦ *चित्र काव्य संगीत कला, रहे स्वस्थ, है तभी भला।*

डॉ० दलेल सिंह
पूर्व प्रधान,
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय–टीचर्स एसोसियेशन
(हौटा) हिसार

समाज की भलाई में तत्पर – डा० सारस्वत

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में 'मंगल-कलश' का प्रकाशन एक सरानहीय क़दम है। चिकित्सा से जुड़े डा० सारस्वत का समाज सेवा, साहित्य सेवा और धार्मिक कार्यों में भी योगदान महत्वपूर्ण है। समाज की भलाई में सदैव तत्पर रहते है, ग़रीबों की मदद करते हैं और साहित्य में भी समय देते हैं।

मैं 'साहित्य कला संगम' के 'कार्यक्रमों में प्रायः जाता रहता हूँ। वहाँ पर मैंने डॉ० सारस्वत की सक्रियता एवं तन्मयता को देखा है तथा उनके सात्विक विचारों को सुना है। मैं उनसे बहुत प्रभावित हूँ।

मैं उनकी विनम्रता, सरलता और मधुरवाणी से बड़ा प्रभावित हूँ। मैं उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों से प्रभावित हूँ। षष्टिपूर्ति के इस सुअवसर पर बधाई देता हूँ और उनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ।

✦ दुर्बल तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक नुक़्ताचीनी किया करते हैं। ✒ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

डॉ० डी. एन. शर्मा
वरिष्ठ चिकित्सक
हिसार

प्रतिष्ठित एवं समर्पित चिकित्सक

डा० एल. एन. सारस्वत केवल अत्यन्त सौम्य, मधुरभाषी, निष्ठावान, कर्मठ, कर्तव्यपरायण, विनम्र समाजसेवी ही नहीं, अपितु एक महान, योग्य, सफल, प्रतिष्ठित चिकित्सक, एक सरल हृदय के स्वामी, मिलनसार एवं साहित्य सेवी भी हैं। डा० सारस्वत वास्तव में अपने आप में एक पूर्ण ''प्रकाश स्तम्भ'' हैं।

डॉ॰ सारस्वत अनेक संस्थाओं के उच्च पद पर आसीन हैं। नीमा के संरक्षक पद को कई वर्षों से सुशोभित कर रहे हैं तथा चिकित्सकों की मीटिंग में उचित मार्ग-दर्शन भी देते रहते हैं।

मैं इनके लिए मंगलकामना करता हूँ। ईश्वर इन्हें समाज सेवा के लिए स्वास्थ्यमय दीर्घ आयु प्रदान करें, ताकि चिरकाल तक यह प्रकाशस्तम्भ समाज को अपनी सेवाओं का प्रकाश प्रदान कर सके।

✦ प्रसन्नता अच्छे स्वास्थ्य की आधारशिला है, जो सदैव मुस्कराते रहते हैं, वे अस्वस्थ नहीं रहते। ☛ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

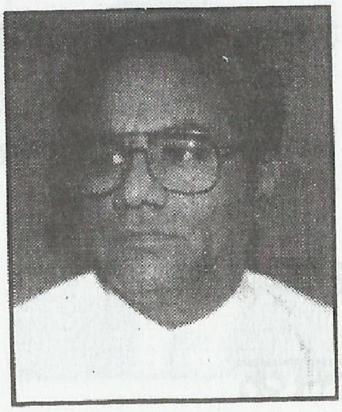

डॉ० वेद शर्मा

वरिष्ठ चिकित्सक–हिसार

गायत्री मिशन के समर्पित कार्यकर्ता

सम्माननीय डा० सारस्वत जी से मेरी पहली मुलाक़ात ८० के दशक में हुई। इनके गरिमामय व्यक्तित्व तथा गांभीर्य ने मुझे इनसे संबंध बनाने के लिए लालायित कर दिया। मेरी चाहना तो शुरु ही नहीं हुई थी कि डा० सारस्वत जी ने स्वयं मेरे जीवन में बड़े भाई की तरह प्रवेश कर लिया। यह भाव हमेशा क़ायम रहेगा।

सम्पन्न व्यक्तियों के जीवन में जिसका अक्सर अभाव देखा जाता है, वह गुण भी इनमें कूट-कूट कर भरा है, वह है - अध्यात्म। डा० सारस्वत जी व्यावहारिक रूप से आध्यात्मिक व्यक्ति हैं, जो माँ गायत्री की उपासना में निरन्तर लगे हुए हैं। अपने सद्गुरु के मार्ग पर जीवन चला रहे हैं तथा समाज में अपने सद्गुरुदेव के मिशन का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। माँ गायत्री की कृपा इन पर ऐसी निरन्तर बरसती रहे, यही मेरी प्रार्थना है।

इनकी धर्मपत्नी तो साक्षात् अन्नपूर्णा हैं। उनके घर जाने पर उनके द्वारा की गई आवभगत कोई भी नहीं भुला सकता। बहुत ही कुशल सद्गृहिणी है। उनका स्नेहिल ममतामयी व्यवहार मन को अभिभूत कर देता है।

एक बार पुनः भगवान के चरणों में इनकी दीर्घायु तथा स्वस्थ जीवन की मंगल-कामना करता हूँ ताकि इनका आशीर्वाद हमारे जीवन में बना रहे।

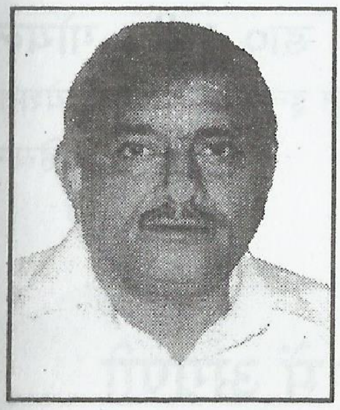

हरिकृष्ण शर्मा
प्राचार्य, वेद सी० सै० स्कूल,
हिसार

संस्कृति - पुरुष

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत के जीवन के साठ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में प्रकाशित होने वाली पुस्तक को लेकर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। नाम से संस्कृति पुरुष, पेशे से चिकित्सक, रूप से विनम्र, सरल, हंसमुख, वाणी से मधुर, व्यवहार से सौम्य, सोच से गांधीवादी, दिल से मानव हितैषी व अनुपम व्यक्तित्व वाले वे आधुनिक युग के अजातशत्रु हैं। ऐसे व्यक्ति के बारे में विस्तृत रूप से कहना भी *'ऊंट के मुंह में ज़ीरा'* वाली कहावत को चरितार्थ करना होगा। ग्रामीण पृष्ठभूमि में जन्में डा० सारस्वत को उनके विभिन्न क्षेत्रों में किए कामों को देखकर समाजसेवा के खेल का प्रमुख आलराऊन्डर कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। उन्होंने अपना कार्य कितनी कर्त्तव्यनिष्ठा से किया, इस बात के प्रमाण हैं - उनको मिले राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार।

इनके किए कामों पर दृष्टि दौड़ाएं तो वे वाणी से ही नहीं मन से भी पवित्र जान पड़ते हैं। आज चूंकि इस भटकाव के युग में ग्रामीण ही नहीं शहरी नवयुवकों के भी वे प्रेरणास्त्रोत साबित हो सकते हैं। मेरी नज़र में वे विभिन्न शाखाओं व एसोसिएशनों के प्रधान व संरक्षक ही नहीं अपितु पश्चिम की इस भेड़चाल में भारतीय संस्कृति के संरक्षकों में से एक हैं।

भारतीय संस्कृति के धरोहर पुरुष डा० सारस्वत जी के जीवन के उज्ज्वल पक्ष को प्रकाशित करने का 'अभिनन्दन समिति' ने जो बीड़ा उठाया है, इसमें वह बधाई के पात्र हैं। मुझे विश्वास है कि 'मंगल कलश' पत्रिका चिकित्सकीय पेशे व समाज सेवा के क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत साबित होगी।

डा० प्रदीप गोयल

प्रधान, नेशनल मेडिकल इन्टीग्रेटिड एसोसियेशन, हिसार

समाज सेवा में अग्रणी

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी के सम्बन्ध में जो अभिनन्दन समिति ने जीवनी प्रकाशन का निश्चय लिया है, यह एक बहुत ही प्रशंसनीय क़दम है। मैं नीमा हिसार ज़िला की तरफ से डा० लक्ष्मीनारायण जी सारस्वत, प्रधान साहित्य कला संगम को उनकी षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में छपने जा रही पुस्तक 'मंगल कलश' के प्रकाशन पर बहुत बहुत बधाई देता हूँ और मैं ऐसा करके खुद को गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि वे नीमा **(National Intergrated Medical Association)** के वरिष्ठ सदस्य के रूप में मेरी एसोसियेशन के एक वरिष्ठ सहयोगी भी हैं जिनके मार्ग दर्शन में हमें काम करने के सुअवसर प्राप्त होते रहते हैं। ये बहुत ही मृदुभाषी, शांत है एवं चिकित्सक के नाते भी इनकी छवि बहुत उज्ज्वल है। साहित्य कला संगम, नैशनल इंटीग्रेटिड मैडीकल ऐसोसियेशन हिसार, विद्या सैकेन्डरी स्कूल हिसार, अखिल भारतीय गायत्री परिवार शान्तिकुंज हरिद्वार, रसराज संस्था, आर्य समाज मॉडल टाउन इत्यादि अनेक संस्थाओं एवं एक नागरिक के नाते भी डा० सारस्वत जी का तन-मन व धन से योगदान रहता है। उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।

इतना मान सम्मान प्राप्त करके भी अपने आप में अहं भाव न लाकर परोपकार का जीवन बिताना, उस तरह से ही है जैसे कहते है कि:

तरुवर, सरवर, संतजन, चौथा बरसे मेह
परोपकार के कारणे चारों धारें देह।

आने वाला समय डा० सारस्वत जी के लिए तन मन धन से सुख शांति वाला हो। मैं एक बार पुनः नीमा हिसार शाखा की तरफ़ से डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत अभिनन्दन समिति को बधाई देता हूँ जिसने इस पुनीत कार्य को अपने हाथ में लिया।

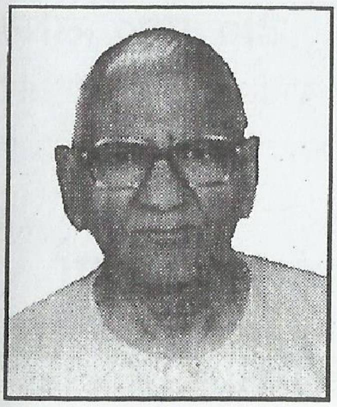

चेतराम रहबर

एच.ई.एस. (सेवानिवृत्त)

कथनी-करनी एक समान

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत केवल योग्य चिकित्सक ही नहीं अपितु एक अच्छे धार्मिक व्यक्ति भी हैं। शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता के नाते इन्होंने समाजसेवा में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राजस्थान की राजकीय सेवा में होते हुए अपना अमूल्य समय निकालकर शेरड़ा-गंगानगर से अपने मोटर साइकिल पर आकर मेरे साथ सैकड़ों गायत्री यज्ञों का सफल आयोजन करवाया। अपने छोटे भाई देवेन्द्र की शादी समाज में दहेज प्रथा के कलंक को दूर करने के लिये, आदर्श विवाह के रूप में गायत्री नगर, हरिद्वार जाकर की। अतः 'कथनी और करनी एक समान' का उदाहरण प्रस्तुत किया।

समाज सेवा एवं धर्म सेवा के लिये इन्होंने राजपत्रित पद छोड़कर, स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति ली और त्याग भावना का परिचय दिया। अनेक संस्थाओं के माध्यम से भी राष्ट्रसेवा में संलग्न है। अतः इनकी मंगलकामना में चार लाइनें लिख रहा हूँ :-

बहुत ख़ूबियों का स्वामी है वो,
शराफ़त का पुतला है दानी है वो।
यहां तक भी कहते हैं कुछ लोग तो,
फ़रिश्ता कोई आसमानी है वो।।

✦ फूहड़ गाने गंदे चित्र, इनसे दूर रहो हे मित्र।

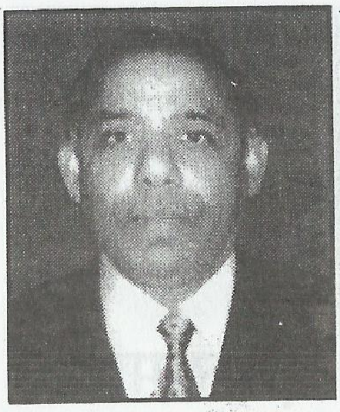

डी० एम० लाल

मण्डल अभियन्ता–हिसार

कार्यवाहक, गायत्री परिवार

ओजस्वी व्यक्तित्व–आदर्श चिकित्सक

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि, डा० लक्ष्मीनारायण 'सारस्वत' अभिनन्दन समिति हिसार द्वारा 'साहित्य कला संगम' के प्रधान एवं गायत्री परिवार की विभूति डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में 'मंगल कलश' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

डा० सारस्वत गायत्री परिवार हिसार के आधार स्तंभ हैं। अपने समयदान, अंशदान, ओजस्वी व्यक्तित्व एवं ज्ञानयज्ञ की मशाल से समाज को नई दिशा-धारा दिखाते रहे हैं। सत्तर के दशक में परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्री राम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा के सान्निध्य में गायत्री तीर्थ शान्ति कुंज में अपने अनुज श्री देवेन्द्र सारस्वत जी का विवाह कर एक आदर्श प्रस्तुत किया, जो अनुकरणीय है। अपने व्यस्त चिकित्सीय सेवा में रहते हुए भी सत् साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए एवं गायत्री परिवार के आयोजनों में अपना अमूल्य समय देते रहते हैं।

मैं 'मंगल कलश' पुस्तक के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ और इस पुस्तक के प्रकाशन से जुड़े सभी समाज-सेवियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

✦ *जीवन यज्ञ विश्व हित धर्म, आहुतियाँ दैनिक शुभ कर्म।*

डा० शमीम शर्मा
प्राचार्य हिन्दू गर्ल्ज़ कॉलेज
सोनीपत

एक सौम्य व्यक्तित्व

हिसार नगर में कोई भी कार्यक्रम हो-धार्मिक अनुष्ठान, सामाजिक आयोजन अथवा साहित्यिक समारोह-डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत अनिवार्यतः हाज़िर रहते हैं। इतना ही नहीं वे अपनी मधुर वाणी, शिष्ट व्यवहार तथा सौम्य व्यक्तित्व से हर मिलने वाले को इस क़द्र प्रभावित करते हैं कि उनकी शालीनता को भुलाया नहीं जा सकता।

'मंगल कलश' के माध्यम से उनकी विशेषताओं को रेखांकित करना एक स्तुत्य प्रयास है और सामाजिक दायित्व भी ! मेरी मंगल कामनाएँ भी उसमें शामिल हों, मेरे लिए यह गर्व का क्षण होगा।

✦ हँसी वह तेल है, जिसके बिना जीवन रूपी यन्त्र बिगड़ जाता है।
— आचार्य श्रीराम शर्मा

देवेन्द्र उप्पल

वरिष्ठ पत्रकार, हिसार

साहित्य-स्वास्थ्य जगत के नक्षत्र

लम्बे समय से साहित्यिक सेवाओं से जुड़े हुए डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सारस्वत ने सचमुच हिसार के साहित्य जगत को एक नई दिशा दी है। डा० सारस्वत ने साहित्य जगत के साथ-साथ स्वास्थ्य जगत को भी अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ दी हैं। इसके अलावा डा० सारस्वत समय-समय पर समाज को भी अपनी सेवाएँ देते रहते हैं।

डॉ० सारस्वत भारतीय संस्कृति के पोषक एवं समर्थक हैं। समय-समय पर गायत्री-यज्ञ के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के निवारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डा० सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे दीर्घायु हों ताकि समाज को अपनी सेवाएँ देते रहें।

✦ वास्तविक शिक्षा वह है, जो अपने को सुधारना और दूसरों को संभालना सिखाए। ➨ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

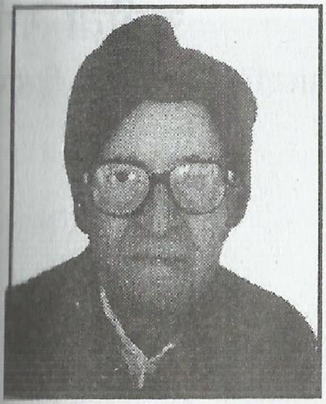

चन्द्र प्रकाश द्विवेदी
पूर्व मैनेजर, बिरला समूह
हिसार

एक श्रेष्ठ-सम्पूर्ण व्यक्तित्व

अत्यन्त प्रसन्ता का अनुभव हो रहा है कि नगर के सुप्रसिद्ध चिकित्सक की षष्टिपूर्ति पर 'मंगल कलश' पुस्तक अभिनन्दन के रूप में प्रकाशित हो रही है।

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत एक सम्पूर्ण, श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धनी हैं। इनका सामाजिक योगदान सब प्रकार से सर्वविदित है। डा० सारस्वत बहुत मधुरभाषी व सात्विक विचारों वाले हैं। अखण्ड ज्योति पत्रिका व गायत्री मिशन का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं। मैं लम्बे समय से इनकी योग्यता व सज्जनता से प्रभावित हूँ। आयुर्वेद विशेषज्ञ के रूप में सभी जानते हैं। इन पर प्रभु कृपा अपार है।

इनके अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ, ताकि समाज को लम्बे समय तक सेवाएं देते रहें।

✦ गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा, सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

सुनीता गर्ग
प्राचार्य, विद्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, हिसार

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

अधिकांश लोग बने बनाए रास्ते पर चलते हैं, किन्तु श्रेष्ठ पुरुष अपना पथ स्वयं निर्मित करते हैं। ऐसे लोग परिस्थितियों के दास नहीं होते, बल्कि अवसर उनके सम्मुख हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। इन्हीं श्रेष्ठ जनों में स्वनिर्मित पथ के पथिक डॉ. लक्ष्मी नारायण सारस्वत हैं, जिन्होंने समाज के लगभग सभी क्षेत्रों में कल्याणकारी कार्यों से अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की है।

डॉ. सारस्वत बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। एक श्रेष्ठ चिकित्सक के साथ-साथ ये महान समाजसेवी तथा उत्कृष्ठ साहित्यसेवी भी हैं। इन सब से बढ़कर ये सही अर्थों में महामानव हैं, क्योंकि इनके पास एक करुणा एवम् दया से परिपूर्ण ह्रदय है। जिन रोगियों के पास पैसे नहीं होते, उन्हें मुफ़्त दवा दे देते हैं। अपने सीमित साधनों के बावजूद समाज एवं साहित्य-सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं।

अनेक वर्षों तक गाँधीवादी विचारधारा को अपनाकर खादी का कुर्ता-धोती पहनकर सादा-सरल जीवन व्यतीत किया। बाह्य आडम्बरों से इन्हें कोई सरोकार नहीं। युग निर्माण योजना मथुरा की विचारधारा को अपनाकर आदर्श विवाह की परम्परा का पालन करते हुए अपने छोटे भाई देवेन्द्र का विवाह बिना दहेज के शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में सम्पन्न किया।

समाज-सुधार में ये सदैव अग्रणी रहते हैं। नशामुक्ति, दहेज उन्मूलन, वृक्षारोपण, बच्चों में नैतिक शिक्षा का बीजारोपण आदि अनेक सुधारवादी कार्यों में सदैव सक्रिय रहते हैं। वास्तव में डॉ. सारस्वत हम सब के लिए एक आदर्श हैं, जिन्होंने समाज की भलाई के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया है। इनका जन्म सफल तथा त्याग धन्य है :-

धन्य जन्म जगती-तल तासू
परहित सर्व निछावर जासू

षष्टि-पूर्ति के इस सुअवसर पर इन्हें कोटिशः बधाई तथा दीर्घायु की कामना करती हूँ।

डा० त्रिभुवन भारद्वाज

निदेशक शारदा पब्लिक स्कूल

हिसार

अध्यात्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रतीक

अनेक संस्थाओं से जुड़कर डा० लक्ष्मी नारयण सारस्वत जी ने समाज को भारतीय संस्कृति से जोड़ा है, अध्यात्म का प्रचार व प्रसार किया है, चिकित्सा कार्य से समाज सेवा कर रहे हैं व स्कूलों से जुड़ कर आर्थिक सहायता के द्वारा बच्चों के निर्माण कार्यों में भी विशेष रुचि लेते हैं।

राष्ट्र निर्माताओं व समाज सेवियों का अभिनन्दन होना एक गर्व की बात है।

संघर्ष करते हुए मुस्कराकर धैर्यपूर्वक आगे बढ़ जाना व विचलित न होना, ऐसी है जीवन शैली डा० सारस्वत की, जो प्रेरणादायक है।

मैं दीर्घायु एवं स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से शुभकामना एवं प्रार्थना करता हूँ ताकि समाज निर्माण-कार्य निरन्तर चलता रहे।

✦ नारी की मुस्कान में जीवन का स्रोत झरता है और अमृत बहता है।

✒ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

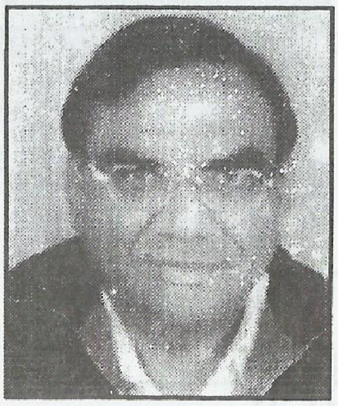

प्रो० देवेन्द्र कुमार जैन
वरिष्ठ प्राध्यापक–दयानन्द कॉलेज, हिसार

विनम्रता एवं सरलता के प्रतिरूप : डा० सारस्वत

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी को मैं लगभग २० वर्षों से जानता हूँ। मेरे पिताश्री स्व० राजेन्द्र प्रसाद जैन के घनिष्ठ दोस्तों में से एक रहे हैं। मेरे पिताश्री जी साहित्यिक कार्यक्रमों एवं सर्वोदय के कार्यक्रमों में नियमित जाया करते थे। डा० लक्ष्मी नारायण जी उनको घर से लेकर जाते थे और घर पर ही छोड़ कर जाते थे। हमेशा ही बाऊजी की सेवा करने के लिए तत्पर रहते थे।

डा० सारस्वत जी के पास मैं भी कई बार गया हूँ। हर बार अतिथि सत्कार में आगे रहे हैं और हर बार मुझे चाय व नाश्ता कराया है। आतिथ्य में इनका मुकाबला करना कठिन हैं। हमारे परिवार के अभिन्न अंग राज्यकवि श्री उदयभानु हंस जी को हर कार्य में पूरा सहयोग देते हैं। कहीं पर भी कोई कमी नहीं आने देते हैं। वे विनम्रता, सरलता एवं सौम्यता की मूर्ति हैं। चेहरे पर हर क्षण मुस्कराहट रहती है। प्रत्येक व्यक्ति से मीठा बोलते हैं। मैंने उन्हें बुरे से बुरे वक्त में भी गुस्से में नहीं देखा। इनका सन्त स्वभाव है। डा० सारस्वत पूरी तरह से भारतीय विचारों के है। घर पर भारतीय वातावरण, भारतीय भोजन तथा पहरावा देखने को मिला है। हिन्दी का ही प्रयोग करते है। मित्रों के दुःख में दुःखी होते हैं और उनको हर प्रकार से सहयोग देते हैं। जैन साधु-साध्वियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य मानते हैं। ऐसे विनम्र एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति समाज की धरोहर एवं अभिनन्दनीय हैं।

✦ *मन में दुर्गुण–कर में माला, भक्ति नहीं है गड़बल झाला।*

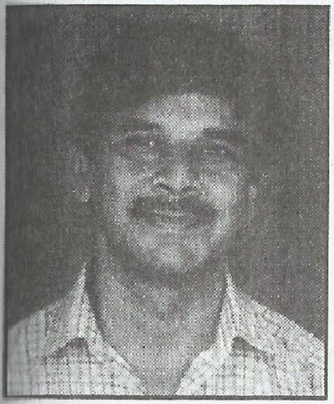

प्रो० एस० के० सिंगला

वरिष्ठ प्राध्यापक–दयानन्द कॉलेज, हिसार

सच्चे कर्मयोगी

आदरणीय डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत केवल एक उत्तम एवं कुशल चिकित्सक ही नहीं बल्कि एक अति उदार ह्रदय समाजसेवी भी हैं। आपका व्यक्तित्व बहुत से उत्तम गुणों को संजोकर बना एक परिपूर्ण एवं आदर्श महापुरुष का द्योतक है। आपका समाजसेवा, धर्म, शिक्षा एवं साहित्य में योगदान अद्वितीय है। आपका सरल स्वभाव सहज ही व्यक्ति को आकर्षित करता है। मैं व्यक्तिगत रूप से डा० साहब के, पिछले २० वर्षों से, सम्पर्क में हूँ, जो अपने कर्त्तव्यपरायणता के साथ-साथ समाज सेवा, धर्म, शिक्षा, साहित्य आदि सामाजिक दायित्वों को पूरा ध्यान एवं समय देते हैं। 'साहित्य कला संगम अभिनन्दन समिति' के तत्वावधान में प्रकाशित होने जा रही पुस्तक 'मंगल कलश' उनकी उत्कृष्ट समाज सेवा कार्यों के प्रति एक पुनीत कार्य है।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायु प्रदान करें ताकि समाज उनके कार्यों से अनन्त लाभान्वित होता रहे।

✦ असन्तुष्ट मनुय संसार में अधिक दिन तक जीवित नहीं रह सकते। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

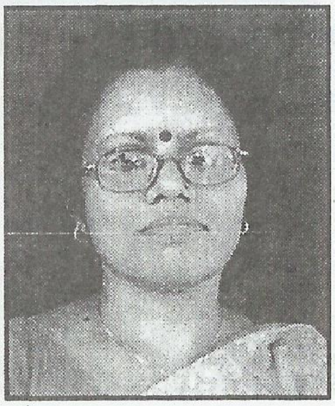

Neeta Aggarwal
Principal
Government Sr. Sec. School, Hansi

A Social Reformist

I am immensely pleased to learn that 'Abhinandan Granth' is being published by 'Abhinandan Samiti' Hisar in the honour of Dr. Luxmi Narayan Saraswat.

He is an active social worker of this region. He has a burning desire to serve the poor and needy people. He provides free medicine to those, who are unable to pay.

I convey my greetings, best wishes and congratulation for Dr. Luxmi Narayan Saraswat for the harmonious development, social work, religious and literary service.

I also appreciate and extend my gratitude for the enthusiastic contribution of all the members of publishing 'Mangal Kalash'.

✦ जिसकी देह और मन शुद्ध न हों, उसका मन्दिर में जाकर पूजा करना व्यर्थ है। ✒ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

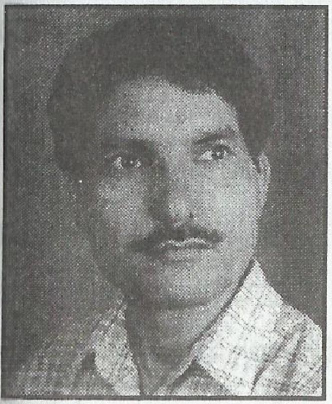

ओम्प्रकाश कादयान
छविकार, चित्रकार, साहित्यकार–हिसार

समाज व साहित्य को समर्पित व्यक्तित्व

जिस इन्सान की भावना अपने देश व समाज के प्रति कुछ करने की होती है, वह देश-सेवा अवश्य करता है, माध्यम चाहे कोई भी हो। साहित्यकार समाज व देश के प्रति समर्पित होकर सृजन के माध्यम से देश-सेवा करता है, कलाकार अपनी कला के माध्यम से। किन्तु आपको ऐसे बहुत कम इन्सान मिलेंगे जो साहित्य तथा साहित्यकारों को समर्पित हों। जो साहित्यकार अपने देश के लिये जीता है, देश के लिए लिखता है, उन साहित्यकारों के प्रति समर्पित होना छोटी बात नहीं। यह सेवा भी साहित्यकारों या अन्य महानुभावों की देशसेवा से कम नहीं है।

साहित्य तथा साहित्यकारों की सेवा केवल वही व्यक्ति कर सकता है जो एक तो साहित्य का महत्व, साहित्य की गरिमा व आवश्यकता को भली-भांति समझता हो, दूसरा उसके सीने में देश प्रेम की भावना भरी-पूरी हो, अपने देश को समर्पित लोगों के प्रति अति आदर-भावना हो। डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत ऐसे ही व्यक्ति हैं जिनमें ये सभी गुण विद्यमान हैं। डा० सारस्वत में साहित्य उत्थान व समाज सेवा के जो गुण है, उसके कारण ये साधारण इन्सान की पंक्ति से अलग हटकर ऊँचे क़द वाले व्यक्तित्व बन गये हैं। वह व्यक्ति जो एक परिवार का न रहकर पूरे समाज का बन जाता है, पूरा समाज उसका हो जाता है। डा० सारस्वत अपनी समर्पित सेवा-भाव से सबसे आदर पा रहे हैं तथा नई पीढ़ी के लिये आम आदमी की प्रेरणा बनते जा रहे हैं। ये हालांकि मूल रूप से कवि नहीं है, किन्तु कविता के माहौल में रहते रहते इनके अन्दर का कवित्व भी कभी-कभी मुखर हो उठता है। यही कारण है कि आप प्रायः कविता भी

लिख देते हैं। कवि मन वाले डा० सारस्वत को कई बार मैंने कवि-गोष्ठियों में कविता पाठ करते हुए भी देखा है।

डा० सारस्वत की ख़ास विशेषता यह है कि ये बड़े सहृदयी हैं। अपनी मधुर वाणी व अपनेपन से सबको अपना बना लेते हैं। विनम्रता, सहजता से भरे हुए सदैव परनिन्दा से दूर रहते हैं। सहयोगी तथा हँसमुख स्वभाव वाले हैं। यही कारण है कि ये तनाव व निराशा मुक्त हैं। ग़रीबों के प्रति मन में दया भाव के कारण ही ये ग़रीबों को मुफ़्त दवा देते हैं।

अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए डा० सारस्वत को उनके सुकर्म, समाज समर्पित भाव के कारण ही विभिन्न संस्थाओं/संगठनों ने इनको समय-समय पर पुरस्कृत किया है।

चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े हुए डा० सारस्वत साहित्य सेवा के अलावा गरीबों को मुफ़्त दवाइयां वितरित करना, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षाओं का आयोजन करवाना, विद्यालयों में जाकर बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाना आदि कार्य करते रहते हैं। 'गायत्री मिशन' के वरिष्ठ कार्यकर्ता के नाते घर-घर जाकर यज्ञ करवाना, नशा मुक्ति हेतु तथा दहेज प्रथा के ख़िलाफ कार्यक्रम आयोजित करवाना, वृक्षारोपण अभियान चलाना इनके स्वभाव का हिस्सा है।

डा० सारस्वत का सपना है कि हमारा समाज सुव्यवस्थित हो, बुराइयों से दूर कला-साहित्य-संस्कृति के प्रति आम लोगों की रुचि पैदा हो तथा गरीब लोगों को जीने का हक़ मिले। ऐसे सुसमाज का सपना देखने वाले व्यक्ति अपनी पहचान स्वयं बनाते हैं, समाज में आदर पाते हैं तथा आम आदमी के लिये पथ प्रदर्शन का काम करते हैं। इनके सुदीर्घ जीवन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

✦ *बहुत सरल उपदेश सुनाना, किन्तु कठिन करके दिखलाना।*

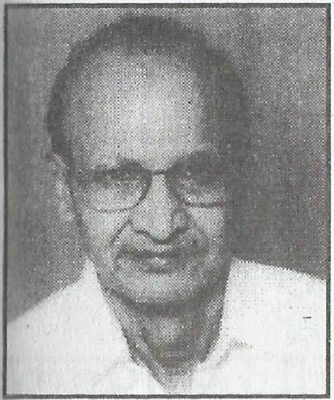

जगदीश चन्द्र आर्य

उद्योगपति – कलकत्ता
प्रधान, आर्य समाज, मॉडल टाउन, हिसार

"समाजसुधारक-श्रेष्ठ नागरिक"

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि डॉ. लक्ष्मीनारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर "मंगल कलश" पुस्तक का प्रकाशन अभिनन्दन ग्रंथ के रूप में किया जा रहा है।

डॉ. सारस्वत अच्छे चिकित्सक के साथ-साथ समाज सुधारक और ग़रीबों के हितैषी भी हैं। राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय शेरड़ा - श्री गंगानगर में बहुत लम्बे समय तक रहकर, लालमन आर्य से मिलकर जन सेवा के बहुत अच्छे कार्य किये। वहाँ के लोग मुझे प्रायः बताते रहते हैं।

माडल टाउन, आर्य समाज हिसार के उप-प्रधान पद पर भी आप रहे हैं, और अच्छा कार्य किया है। श्रेष्ठ नागरिक के नाते हमने आर्य समाज की ओर से सम्मानित किया। इसमें पूर्व मन्त्री हरिसिंह सैनी विशिष्ट अतिथि थे। समाज के वार्षिक उत्सव पर उपरोक्त कार्यक्रम किया जाता है।

इनके उज्ज्वल भविष्य और दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ।

✦ ज्ञानवान विवेक द्वारा कर्मों को पवित्र बना लेते हैं।

— आचार्य श्रीराम शर्मा

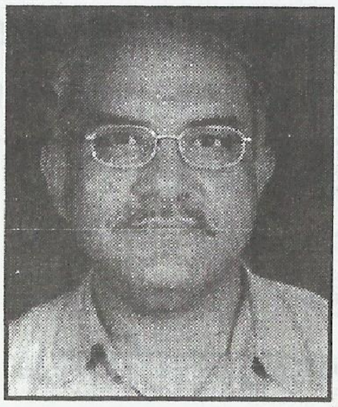

डा० राजेश मेहता
एम. डी.
निदेशक, साईं मैडिकेयर सैन्टर, हिसार

सौम्य एवम् शालीन व्यक्तित्व

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में प्रकाशित होने जा रही 'मंगल कलश' पुस्तक एक सराहनीय प्रयास है।

डॉ० साहब का जीवन समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। गरीबों तथा दलित वर्ग के प्रति उनके मन में विशेष सहानुभूति है।

डा० साहब का शालीन, सौम्य, सुसंस्कृत व्यक्तित्व व सरल व्यवहार उनकी लोकप्रियता का आधार है। लौकिक व पारलौकिक सिद्धान्तों के ज्ञान से परिपूर्ण डा० साहब के हम सब के साथ सहयोग व भाईचारा फलता फूलता रहे।

वे स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन जिएँ, यही मेरी शुभकामना है।

✦ जहाँ पुरुष से स्त्री और स्त्री से पुरुष संतुष्ट हों, उस घर में निश्चित ही कल्याण का निवास होता है।

आचार्य श्रीराम शर्मा

सन्तोष कुमार आर्य,
भारीवास–(हिसार)

वेद प्रकाश आर्य,
भारीवास–(हिसार)

अध्यात्म एवं भौतिकता के समन्वयक

''दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझा जिसने
रोगी को अपनी सेवा से सींचा जिसने
मुख पर अद्‌भुत ओज लिए, सम्पूर्ण मानव
राष्ट्र सेवा का बीड़ा उठाया जिसने
'कर्मण्येवाधिकारस्ते' को सार्थक कर दिखाया जिसने''

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी का व्यक्तित्व शब्दों का मोहताज नहीं है। हम दोनों भाइयों का परिचय सारस्वत जी से लगभग ३०-३५ साल पहले मौसा जी श्री लालमन जी आर्य के जीवनकाल में हुआ था। उनके साथ डा० साहब के काफी मधुर एवं घरेलू सम्बन्ध थे जबकि उस समय डा० साहब शेरड़ा में रहते थे। एक दिन लालमन जी ने ही डा० साहब से हमारा औपचारिक परिचय करवाया था।

डा० साहब अद्‌भुत व्यक्तित्व के धनी हैं जिसके कारण कोई भी व्यक्ति उनकी तरफ़ बरबस आकर्षित होता चला जाता है। डा० साहब का अपनी वाणी पर असाधारण अधिकार है। सदा नपा-तुला बोलते हैं, किसी की व्यर्थ व अनावश्यक बातों का कभी उत्तर ही नहीं देते तथा सदा मधुर और हितकर वचनों का प्रयोग करते हैं। वास्तव में यदि डा० साहब को

भारतीय संस्कृति की अनुपम प्रतिमूर्ति से अलंकृत करें तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। नम्रता व सहनशीलता तो डा० साहब में कूट-कूट कर भरी हुई है जिसके कारण हम इन्हें अनुकरणीय मानव तथा मानव जाति की बहुत बड़ी धरोहर कह सकते हैं क्योंकि किसी ने कहा भी है :-

"A man who is master of patience is the master of everything."

डा० साहब के बारे में कहने के लिए शायद मेरे शब्दकोश में भी इतने शब्द न हों। इन्होंने समाज के निचले तबके और निर्धन लोगों की अपने तन, मन तथा धन से भी सेवा की। इस भौतिकवादी युग में आपने कभी धन को प्रधानता नहीं दी। असहाय लोगों का निःशुल्क इलाज करते रहते हैं। इस प्रकार मानव जाति की सेवा करने वाले कुछ विरले व्यक्ति ही होते हैं।

हमारे स्व० पिता सेठ फूलचन्द जी आर्य को हर साल खुद अपने हाथों से स्पेशल तैयार किये गये चूर्ण की दो शीशियां लाकर देते थे। पिताजी की लाख कोशिश करने पर भी पैसे नहीं लेते थे। पिता जी से डा० साहब अक्सर मिलने आते रहते थे।

डा० साहब अत्यन्त मधुर भाषी, हँसमुख, शान्त तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्रतिमूर्ति हैं -

दिया कभी न बुझे, दिया तो जलता ही रहे,
अन्धेरा कभी न आये, प्रकाश तो बिखरता ही रहे।

हम दोनों भाई सचमुच में आपके कर्मठ-तेजस्वी जीवन से अत्यन्त प्रभावित हैं।

✦ *दुर्व्यसनों से पिण्ड छुड़ाओ, जीवन अपना सुखी बनाओ।*

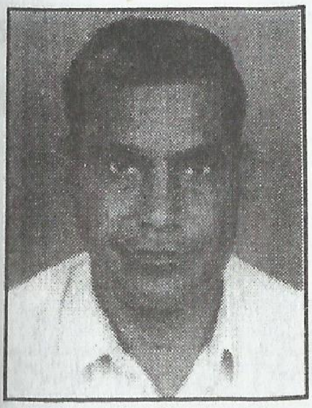

एस. पी. चौधरी
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी, हिसार

लोकप्रिय चिकित्सक : डा० सारस्वत

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों की स्मृति मन में एक नई उमंग व स्फूर्तिपूर्ण तरंग उद्वेलित करती है। विद्यार्थी जीवन में एक मेधावी छात्र रहे डा० सारस्वत ने एक सफल डॉक्टर के रूप में अपूर्व ख्याति अर्जित की है। आयुर्वेद चिकित्सस क्षेत्र में इनका अपना एक विशिष्ट स्थान है।

सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों में अति सराहनीय व प्रेरणादायक योगदान करने वाले अति विनम्र, मधुरभाषी, लोकप्रिय वरिष्ठ नागरिक का अभिनन्दन करना एक प्रकार से सुसभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का ही अभिनन्दन करना है। इस शुभ अवसर पर मैं साहित्य कला संगम व इस विशुद्ध साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष डा० सारस्वत को बधाई एवम् मंगल कामनाएँ अर्पित करता हूँ।

✦ जिस घड़े के पैंदे में छोटा-सा भी छेद हो जाता है, उसमें पानी नहीं ठहरता। जिस मनुष्य का आचरण बुरा है, उसमें सद्‌गुण नहीं ठहरते।
— आचार्य श्रीराम शर्मा

डा० अशोक यादव
हिसार

समाज सेवा को समर्पित : डा० सारस्वत

यह जानकर मुझे खुशी हुई कि हिसार में चिकित्सा सेवा में रत् डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी के विषय में एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है। ऐसे परमार्थी डाक्टरों को प्रकाश में लाना ही चाहिए, जिससे दूसरे डा० भी उनके जीवन से कुछ ग्रहण कर सकें।

मैं डा० सारस्वत जी को लगभग १५ वर्षों से जानता हूँ। प्रायः देखा जाता है कि डॉक्टरों और वकीलों का पेशा ऐसा है जिसमें सम्वेदना का भाव कम ही देखा जाता है, लेकिन डा० सारस्वत कुछ ऐसे निराले व्यक्ति हैं जिनके जीवन में शुरु से ही निर्धन व गरीब मरीज़ों के प्रति हृदय में सम्वेदना का भाव भरा रहता है। हमने सुना और देखा भी है कि जब दवा लेने के बाद किसी रोगी के पास पैसे नहीं होते तो डा० साहब उसका पूरा इलाज तो करते ही हैं बल्कि उससे पैसे भी नहीं लेते। समाज सेवा को समर्पित ऐसे व्यक्ति हमने बहुत कम देखे हैं।

डा० सारस्वत हँसमुख स्वभाव के कारण जहाँ भी रहे हैं, समाज और सरकार दोनों के हृदय में उनका आदरभाव रहा है। सरकार और समाज ने कई बार इनकी सेवा के लिए सम्मानित भी किया है। इस दृष्टि से कहूँगा कि आज के लोभ-लालच के युग में ऐसा समाजसेवी व्यक्ति देखने में नहीं आता। हमें उनके जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

मैं उनकी लम्बी आयु और स्वस्थ जीवन के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने दीर्घ जीवन में समाज की अधिक से अधिक सेवा करें।

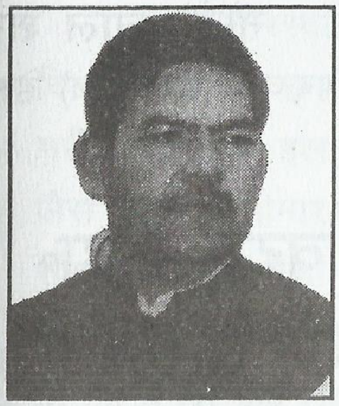

भगतसिंह राजोरिया
प्रधान हरियाणा, कुम्हार फैडरेशन, हिसार

नैतिक मूल्यों की जीवन्त मूर्ति डॉ० सारस्वत

डा० सारस्वत ने अपने नाम के अनुरूप अपनी अमर जनसेवा व सामाजिक कार्यों से अपने दिवंगत माता-पिता को अमर कर दिया है। आप जनहितैषी, सर्वहितकारी तथा परोपकार के कार्यों में सदा अग्रणी रहते हैं। आपकी मिलनसारिता, सरलता, सादगी, कर्त्तव्य-परायणता मृदुल स्वभाव तथा परोपकार आदि गुण अनायास ही सबको आपकी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। आपकी योग्यता एवं गुणों का वर्णन करना हमारी लेखनी की शक्ति से बाहर है। आरम्भ से ही आपका जीवन अनुकरणीय रहा है। आप विश्वविद्यालय स्तर पर एक मेधावी छात्र रहे हैं। आपने बी.ए.एम. एस. के पश्चात् राजस्थान के श्रीगंगानगर में बतौर वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी कार्यरत रहकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। आपकी राजकीय सेवा में सक्रिय भूमिका भी प्रंशसनीय एवं अनुकरणीय रही है। आपने अपनी नीति, कुशाग्र बुद्धि तथा निष्पक्ष भाव से परिवार कल्याण के राष्ट्रीय कार्यक्रम में विशेष सहयोग दिया है।

आपकी प्रतिभा न केवल चिकित्सा के क्षेत्र बल्कि सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में भी चमकी है। आप सदैव ग़रीबों एवं दलितों को निःशुल्क दवाइयां वितरित करते हैं तथा हर संभव सहायता के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक जीवन में भी आपका दृढ़ विश्वास एवं रुचि है। वर्तमान में आप साहित्य कला संगम, विद्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, नेशनल इन्टीग्रेटिड मेडिकल एसोसिएशन, हिसार तथा अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुज हरिद्वार से जुड़े हुए हैं। आपकी उपर्युक्त सफलताओं तथा अनेक क्षेत्रों में भरपूर योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

अन्त में परमात्मा से आपकी निरन्तर सफलता व सुखद दीर्घायु होने की कामना करते हैं, ताकि आप समाज और मानवजाति की दीर्घकाल तक सेवा करते रहें।

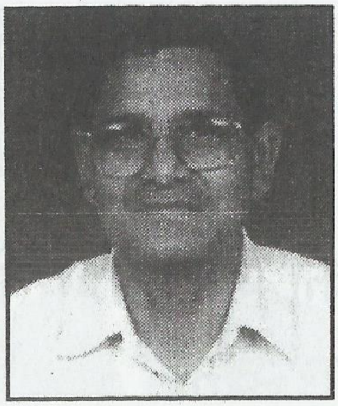

नौरंग लाल शर्मा
पूर्व प्रबन्धक, (शूगर मिल) हिसार

मानवता का वटवृक्ष-डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत एक ऐसे वटवृक्ष हैं जिनकी छाया में न जाने कितने पौधों को फलने-फूलने का अवसर मिला है। इनमें एक साहित्यकार एवं समाजसेवक के सभी गुण विद्यमान हैं। सरस्वती हमेशा इनकी वाणी पर निवास करती है और शब्दों में इतना सामर्थ्य नहीं है कि वे आपकी वंदना कर सकें। गांधीवादी विचारधारा से ओतप्रोत डा० सारस्वत ने २० वर्ष तक खादी का कुर्ता पहनकर राष्ट्रपिता महात्मागांधी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि दी है। इन्होंने हमेशा भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद और समाजवाद को अपने जीवन में ढाला है। धर्म को लेकर डा० सारस्वत हमेशा निरपेक्ष भावना से कार्य करते रहे हैं। इन्होंने हमेशा राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में योगदान दिया है। इन्होंने अपने पारिवारिक संस्कारों की हमेशा पूजा की है और उन्हें अपने कर्म का आधार बनाया है।

विद्यार्थी जीवन से ही श्री सारस्वत मेधावी रहे। इन्होंने उच्च शिक्षा में डिग्रियां तो प्राप्त की ही, साथ ही उनका व्यवहारिक व नैतिक प्रयोग भी किया। एक श्रेष्ट विद्यार्थी के रूप में इन्हें खुद महामहिम राज्यपाल ने सम्मानित भी किया। चिकित्सा को हमेशा अपना सेवा धर्म मानते हुए इन्होंने कभी भी व्यवसायिक मूल्यों को आड़े नही आने दिया। इन्होंने परिवार कल्याण के राष्ट्रीय कार्यक्रम में विशेष अभिरुचि ली। यह इनकी सक्रियता का ही नतीजा था कि इन्होंने अपने अस्पताल में समय-समय पर कैम्प लगवाकर २० हज़ार से अधिक नसबंदी और नलबंदी के ऑप्रेशन करवाए। इनकी सेवाओं के लिए स्वास्थ्य विभाग के सचिव और आयुर्वेद के निर्देशक ने इन्हें प्रमाण पत्र से सम्मानित किया।

श्री सारस्वत ने हमेशा ग़रीबों व दलितों को निःशुल्क दवाइयाँ वितरित की है। इन्होंने हमेशा चिकित्सा को सेवा का आधार मानते हुए ग़रीबों का मुफ़्त इलाज किया है। भारतीय संस्कृति और नैतिक शिक्षा तो जैसे डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत के ख़ून में रही हैं। इन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन करवाकर अपनी देशभक्ति का परिचय दिया है। श्री सारस्वत की नज़र में नैतिक शिक्षा बेहद ज़रूरी है। इनका मानना हैं कि जब तक नैतिकता हमारे जीवन का अभिन्न अंग नहीं बनेगी तब तक न तो देश का विकास हो सकता है और न ही मानव समाज का। इन्होंने हमेशा नैतिक शिक्षा के प्रचार को अपनी ज़िम्मेदारी माना है। यह नैतिकता का ही प्रताप हैं कि डा० सारस्वत नैतिक जीवन मूल्यों में विश्वास रखते हैं।

इन्होंने हमेशा गायत्री मंत्र और यज्ञ को हमारी संस्कृति का आधार माना है। गायत्री मिशन के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता के रूप में इन्होंने घर-घर जाकर यज्ञों का आयोजन करवाया। इन्होंने नशा मुक्ति और दहेज प्रथा के विरुद्ध हमेशा एक समाज सेवक के रूप में बढ़ चढ़कर कार्य किया है। दहेज रूपी दानव को समाप्त करने के लिए श्री सारस्वत हमेशा मानव समुदाय को समझााने का कार्य करते रहे हैं। इन्होंने नशा मुक्ति के लिए आंदोलन भी चलाए हैं।

डा० लक्ष्मीनारायण ने हमेशा प्राकृतिक असंतुलन पर चिंता जताई हैं। इनका मानना हैं कि धरती माता पर प्रदूषण एक अभिशाप है। प्रदूषण को एक प्राकृतिक आपदा मानते हुए हमेशा वृक्षारोपण मिशन को चलाए रखा है। इनकी देखरेख में अनेक वृक्षारोपण समारोह सफलतापूर्वक करवाए जा चुके हैं। आदर्श विवाह की स्वस्थ परम्परा को भी इन्होंने हमेशा प्राथमिकता दी है। इनके भाई इंजीनियर देवेन्द्र सारस्वत हरिद्वार में आचार्य श्रीराम शर्मा के सान्निध्य में ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं। इन्होंने युग निर्माण योजना मथुरा की परम्परा को हमेशा बनाए रखने का प्रयास किया है।

सामाजिक दायित्व के साथ-साथ श्री सारस्वत ने पारिवारिक दायित्व को बख़ूबी निभाया है। इनके परिवार के सभी सदस्य और बच्चे व्यवस्थित तरीक़े से सामाजिक व पारिवारिक जीवन जी रहे हैं। डा०

लक्ष्मीनारायण सारस्वत को राजकीय सेवा में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए दो बार पुरस्कार प्रदान किया गया है। समाजसेवा की भावना का पालन करते हुए इन्होंने वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी के पद से स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति ली।

ये अनेक संस्थाओं के वरिष्ठ पदाधिकारी हैं। डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत साहित्य कला संगम हिसार के प्रधान के रूप में हमेशा साहित्य को आगे बढ़ाते रहे हैं। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रवक्ता, विद्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के प्रधान, नेशनल इंटीग्रेटिड मेडिकल एसोसिएशन के संरक्षक, रसराज संस्था के पूर्व प्रधान, राजस्थान आयुर्वेद विभागीय चिकित्सक संघ के पूर्व उपप्रधान तथा आर्य समाज मॉडल टाउन के उपप्रधान हैं। इन्हें राजस्थान संस्कृति साहित्य सम्मेलन में माननीय राज्यपाल सम्पूर्णानंद जी ने सम्मानित किया। इन्हें १६८२ के गणतंत्र दिवस समारोह में भी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया था। भारत के वरिष्ठ साहित्यकार कमलेश्वर जी ने भी इन का सम्मान किया है। अमेरिका की एवीआई संस्था ने इन्हें 'मैन ऑफ द इयर' के अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया था। अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी, पंजाब नैशनल बैंक, साहित्य कला संगम, ब्राह्मण सभा जैसी न जाने कितनी ही संस्थाएं है जो हरियाणा के इस सपूत को सम्मानित कर चुकी हैं।

चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े डा० सारस्वत ने समाज सेवा, धर्मसेवा तथा साहित्य सेवा में जो योगदान दिया है, उसके लिए वे हमेशा साधुवाद के पात्र रहेंगें। मेरे लिए डा० लक्ष्मीनारायण का परिचय कोई नया नहीं है। ये सचमुच विनम्रता, सरलता और सौजन्य की मूर्ति हैं। इनका हँसमुख स्वभाव मरीज़ों को क्लीनिक आने से पहले ही भला चंगा कर देता है। थोड़े शब्दों में कहूं तो ऐसे धनी महापुरुष विरले ही मिलते हैं। मैं ऐसे व्यक्तित्व के दीर्घायु होने की भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

✦ *खोजें सभी जगह अच्छाई, ऐसी दृष्टि सदा सुखदायी।*

सत्यपाल शर्मा
महासचिव, अखिल भारतीय साहित्य परिषद
हिसार

मृदुभाषी व निष्ठावान

यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत के व्यक्तित्व पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

चिकित्सा व्यवसाय से जुड़े डा० सारस्वत का योगदान साहित्य सेवा व समाज सेवा में अद्वितीय हैं। डा० सारस्वत शान्त स्वभाव व मृदु व्यवहार के कारण समाज को पूर्ण रूप से श्रद्धा व सम्मान के साथ स्वीकार्य हैं। चिकित्सा व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी उनकी अनूठी विलक्षणता का परिचय देती है।

आप वर्तमान में अनेक संस्थाओं से सीधे रूप से जुड़े हुए हैं। आप 'साहित्य कला संगम' नेशनल इन्टीग्रेटिड मैडिकल एसोसिएशन, विद्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, आर्य समाज, माडल टाउन व अनेक जानी मानी संस्थाओं के विभिन्न पदों पर सुशोभित हैं। आपके कुशल व प्रगतिशील मार्गदर्शन में ये संस्थाएं अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। विभिन्न क्षेत्रों में आपकी उपलब्धियों से प्रभावित होकर आपको पुरस्कृत व सम्मानित भी किया जा चुका है।

आपकी उपलब्धियाँ मानवता के प्रति निश्चित तौर से मार्गदर्शक व प्रेरणा स्त्रोत हैं। ग़रीबों एवं दलितों में निःशुल्क दवाइयों का वितरण, गाँधीवादी विचारधारा को प्रोत्साहन, आदर्श विवाह की स्वस्थ परम्परा, नशा मुक्ति, दहेज प्रथा का उन्मूलन, वृक्षारोपण में योगदान, परिवार कल्याण के राष्ट्रीय कार्यक्रम में विशेष अभिरुचि व अनेक उपलब्धियाँ समाज को अत्यन्त लाभप्रद हैं।

मैं पूर्ण रूप से विश्वस्त हूँ कि षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में 'मंगल कलश' साहित्य व समाज के क्षेत्र में लाभपद्र व अद्वितीय प्रेरणा-स्त्रोत सिद्ध होगा।

नंदलाल तंवर
कार्यकारी अभियन्ता,
दूरसंचार विभाग, हिसार

माँ गायत्री के उपासक : डा० सारस्वत

यह जानकर हृदय गद्-गद् हुआ कि डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जैसे विद्वान, हँसमुख, मधुर, मृदुभाषी, सन्त स्वभाव, माँ गायत्री के उपासक, कर्म-काँड में निपुण, सुयोग्य चिकित्सक, अत्यन्त लोकप्रिय, विनम्रता, सरलता और सौजन्य की मूर्ति की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में एक पुस्तक ''मंगल कलश'' प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। यह कदम निश्चित रूप से सराहनीय है और मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि भावी पीढ़ी इस से लाभान्वित एवं प्रेरित होगी।

इस अवसर पर मेरी शुभकामनाएँ।

✦ जब अपने से कोई भूल हो जाए तो बहादुरी के साथ उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। सुधार और उन्नति का यही मार्ग है।

— आचार्य श्रीराम शर्मा

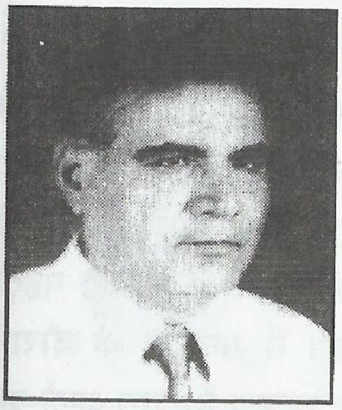

वैद्य शिव कुमार शर्मा
जिला आयुर्वेद अधिकारी (सेवानिवृत्त)
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

सहृदयता की साक्षात् मूर्ति

वैद्य श्री लक्ष्मी नारायण जी शर्मा के व्यक्तिव ओर उनके द्वारा दी गई आयुर्वेद की सेवाओं से सम्पूर्ण आयुर्वेद प्रेमी भली भांति परिचित हैं। इस धराधाम पर पावन एवं महान विभूतियां सदैव अवतरित होती रही हैं। प्रकृति के इस शाश्वत नियम की सम्पूर्ति हेतु आपने हरियाणा प्रान्त के सुविख्यात ग्राम सिवानी बोलान में दिनांक १८ सितम्बर १९४३ को स्वनामधन्य, सादगी एवं सज्जनता की मूर्ति कर्मयोगी श्री पं० सीताराम तथा लक्ष्मी रूपा माता श्रीमती सरस्वती देवी के यहां आपका जन्म हुआ।

''कुलं पवित्रं जननी कृतार्था''

अर्थात् आपने अपने जन्म से सम्पूर्ण सारस्वत समाज को गौरवान्वित एवं महिमा-मंडित किया है।

आपने हाई स्कूल परीक्षा पास कर आयुर्वेद के अध्ययन हेतु सन् १९६० में आयुर्वेद विश्व भारती गांधी विद्या मन्दिर, सरदार शहर में प्रवेश लेकर यहां से सन् १९६४ में भिषगाचार्य उपाधि सर्वोत्कृष्ट अंकों से उत्तीण कर रिकार्ड़ बनाया। यह उस समय की बात है जब यातायात के सीमित साधन हुआ करते थे। आयुर्वेद विश्व भारती महाविद्यालय शहर से दूर प्रकृति की गोद में शान्त वातावरण *''सोने ज्यूं चमक रेतड़ली रा ढेर''* ऐसे मरुप्रदेश में आपका अध्ययन हुआ। श्री सारस्वत मेरे से दो वर्ष पहले महाविद्यालय में प्रवेश ले चुके थे। मुझे आपसे बड़ा मार्गदर्शन मिला।

संसार में ऐसे व्यक्ति बहुत मिल जायेंगे जो विद्वान् हों राजनेता हों, धनवान हों, साधन सम्पन्न हों, किन्तु ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं जो मानवीय गुणों से सम्पन्न हों। श्री सारस्वत जी का व्यक्तिव भी ऐसे ही विरलों में एक है। अपनी सहृदयता के कारण ही आप सदैव दूसरों के दुःख में स्वयं को दुखी

अनुभव करने लगते थे।

अध्ययन काल में आप प्रतिभावान् विद्यार्थी के साथ-साथ अच्छे खिलाड़ी रहे तथा कॉलेज स्टाफ़ में आपका बड़ा सम्मान रहा। महाविद्यालय छात्रसंघ के आप अध्यक्ष रहे। व्यक्तिगत रूप से मुझे काफ़ी अच्छी तरह से आपको देखने व समझने का अवसर मिला। आपने जीवन में सादगी को महत्व दिया। अहंकार को आपने नज़दीक नहीं आने दिया। मैं अध्ययन के दौरान आपके सान्निध्य को अपने जीवन का स्वर्णिम अवसर मानता हूँ। उन क्षणों का स्मरण कर आज भी अभिभूत हो जाता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति से आपका व्यवहार इतना आत्मीय होता था कि सहज ही वह आपके स्नेह-बंधन में बंधा हुआ पाता और आपका स्नेह पात्र बन जाता।

आप आयुर्वेद की उपाधि भिषगाचार्य सन् १९६४ में लेकर आयुर्वेद विभाग में चिकित्सक पद पर नियुक्त हुए। आपकी योग्यता देखते हुए विभाग ने उस समय के श्रीगंगानगर ज़िले के महत्त्वपूर्ण चिकित्सालय शेरड़ा ग्राम में आपको नियुक्त किया। यहां रहते आपने अपनी मिलनसारिता, दक्षता, सज्जनता, व्यवहार कुशलता तथा सिद्धहस्त चिकित्सा से न केवल स्थानीय जनता में विश्वास पैदा किया बल्कि इस क्षेत्र के बड़े-२ राजनेताओं को भी आपसे चिकित्सा लाभ मिला। आपका यश सुदूर क्षेत्र में फैलता गया तथा आपने जनसहयोग से शेरड़ा में विशाल चिकित्सालय भवन बनाया। मुझे भी आपके पदस्थापन के समय तत्कालीन निदेशक आयुर्वेद विभाग राजस्थान के साथ शेरड़ा आने का मौका मिला। वहां आपके चिकित्सा-कौशल व स्थानीय जन समुदाय में आपके प्रभाव से प्रसन्न्ता हुई। आयुर्वेद विभाग में मेरा भी १९६७ में चिकित्सक पद पर पदस्थापन होने के बाद समय-समय पर गोष्ठियों सम्मेलनों, विभागीय बैठकों में आपसे मिलने का अवसर मिलता रहा तो मैंने पाया कि आपमें काम करने का एक विशेष जज़्बा रहा है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि आप एक सफल एवं सिद्धहस्त चिकित्सक हैं। व्यवहार कुशलता के कारण उच्चाधिकारियों व सहयोगी चिकित्सकों के आप प्रिय-भाजन रहे हैं।

आप जैसे सेवाभावी व्यक्ति का अभिनन्दन करना निश्चय हम सभी के लिए गौरवान्वित करने वाला सुकार्य होगा। मैं ऐसे मनीषी के दीर्घ जीवन की मंगलकामना करता हूँ।

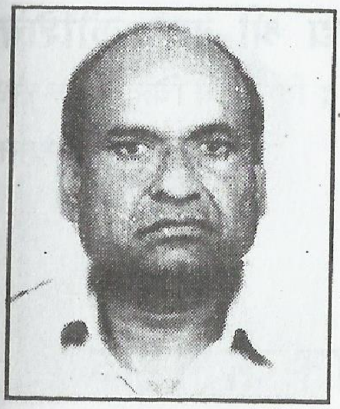

वैद्य महावीर प्रसाद इन्दोरिया
अध्यक्ष आयुर्वेद चिकित्सक वेलफेयर एसोसियेशन
जयपुर

अपार धैर्यवान : डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत

डा० सारस्वत के बारे में कुछ भी लिखें अधूरा रहेगा क्योंकि सारस्वत इन्सान के सच्चे अर्थ को अपने व्यक्तित्व में समाए हुए हैं। मैं समझता हूँ कि जो भी इन्हें जानता है, कन्हैया की तरह अपना मानता है। मैं जीवन में जब भी मिला हूँ ये हँसी के फुव्वारे छोड़ते दिखते है। ग़मगीन पलों में भी इनमें अपार धैर्य देखने को मिलता है। अधिकारियों के प्रति कृतज्ञ एवं अधीनस्थ के प्रति उदार देखा है। सामाजिक कार्यों में भी आगे रहते हैं। रोगी के प्रति भी उतने ही संवेदनशील है।

सामञ्जस्य इनका विशेष गुण है। जीवन के व्यस्त क्षणों में मेरा मन करता रहता है कि कुछ पल इनका सान्निध्य मिल जाए। मेरी यही चाह है कि ये स्वस्थ रहें और इसी प्रकार इनका साथ प्रियजनों को मिलता रहे।

✦ अपने आपको पहचान लेना ही सत्य को पहचान लेना है।

✒ आचार्य श्रीराम शर्मा

वैद्य श्री राम कौशिक
सभापति, राजस्थान आयुर्वेद विभागीय चिकित्सक संघ
सालासर (राजस्थान)

आयुर्वेद जगत के नक्षत्र

बड़ी प्रसनता का विषय है कि हमारे प्रिय अग्रज डा० सारस्वत का नागरिक अभिनन्दन किया जा रहा है। मुझे व्यक्तिशः गर्व है कि साहित्य कला संगम, चिकित्सा एवं परमार्थ कार्यों से जुड़े श्री सारस्वत हमारे लिये प्रेरणास्त्रोत हैं। आयुर्वेद विज्ञान तथा आयुर्वेद विभाग ही नहीं राजस्थान आयुर्वेद विभागीय चिकित्सक संघ के भी आप एक जुझारू प्रहरी रहे हैं। छात्र जीवन के संस्मरण सहज सौजन्य, मधुर व्यवहार कुशलता मुझे सुखानुभव प्रदान करते हैं। निस्पृह अर्थात बिन लाग लपेट के आपका जीवन एक सन्त महात्मा से कम नहीं है। परम मित्र होने से अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा नहीं अपितु यह अकाट्य सत्य है; जिसे समग्र आयुर्वेद जगत स्वीकारता है।

इनकी दीर्घायु की मंगलकामना करता हूँ।

✦ जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी दौलत, समय है।

➡ आचार्य श्रीराम शर्मा

वैद्य ताराचन्द भारद्वाज
पूर्व वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी (आयुर्वेद)
रतनगढ़ (राजस्थान)

अच्छे मित्र-अच्छे भाई - डा० सारस्वत

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के शुभ अवसर पर मंगलकलश पुस्तक का प्रकाशन उनके अभिनन्दन ग्रन्थ के रूप में किया जा रहा है।

पुरानी स्मृतियां इतनी मधुर होती है हैं कि मनुष्य को उनमें डूब जाने और खो जाने में आनन्द का अनुभव होता है। डा० सारस्वत से मेरा मिलना आयुर्वेद विश्व भारती सरदार शहर में हुआ। हमने पाँच वर्ष तक साथ-साथ रहकर अध्ययन किया। हम छात्रावास के एक ही कमरे में रहते थे। ये मेधावी छात्रों में थे, और कॉलेज में सर्वप्रथम रहते थे। सभी प्रोफेसर एवं प्रिंसिपल श्रेष्ठ छात्र के नाते इनसे बहुत स्नेह रखते थे। राजकीय सेवा में भी हम प्रायः मिलते रहते थे। इन्होंने अपनी योग्यता एवम् कार्यकुशलता के कारण चिकित्सा क्षेत्र में बहुत नाम कमाया। हिसार आने पर इनको और भी अधिक प्रसिद्धि मिली। इन्होंने अपने जीवन में बहुत संर्घष किया। विपरीत परिस्थितियों में भी ये खुश रहते हैं, यही इनकी विशेषता है। नित्य सन्ध्या हवन करना व आधुनिक जीवन जीना। अतः जितने आध्यात्मिक है, उतने भौतिकवादी भी हैं। आर्दश इन्सान होने के नाते मेरे अच्छे मित्र व बड़े भाई के समान हैं। संत तुलसी दास जी ने लिखा है :-

जे न मित्र दुःख होई दुखारी।
तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।।

हर सुख-दुःख में इन्होंने मेरा साथ दिया है। उपरोक्त चौपाई का पूर्णतया पालन करते हुए मित्रता निभाई है। अतः मैं इनके स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु की मंगलकामना करता हूँ और समिति के सभी सदस्यों को इस नेक कार्य के लिए धन्यवाद देता हूँ।

आशा कुन्दन
पत्रकार एवं साहित्यकार,
हिसार

सबके चहेते : डॉ० सारस्वत

डॉ. लक्ष्मी नारायण सारस्वत के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन हम सब साहित्य प्रेमियों के लिए एक ख़ुशी की बात है। समाज के लिए की गई इनकी सेवाओं को देखते हुए यह बहुत अच्छा क़दम है।

एक सदस्य के नाते मैंने 'रसराज केन्द्र' और 'साहित्य कला संगम' में डॉ. सारस्वत को प्रधान के रूप में काम करते देखा है। मैंने पाया कि ये सब को आदर देते हैं तथा सबकी बात सुनते हैं। अपनी कोई भी बात दूसरों पर थोंपते नहीं। बड़े ही लोकतान्त्रिक ढंग से सभी निर्णय लेते हैं। यही कारण है कि ये सबके चहेते बन गए हैं और अपने मित्रों तथा शुभचिन्तकों में लोकप्रिय हैं। मैंने इन्हें कभी किसी विवाद में पड़े या घिरे नहीं देखा। सबका भला चाहते हैं और यथासम्भव सब की मदद करते हैं।

जब भी मैं इनके क्लीनिक पर जाती हूँ बड़ी आत्मीयता से आवभगत एवं सत्कार करते हैं। रोगियों से भी इनका व्यवहार बहुत अच्छा है। कम से कम पैसों में अच्छे से अच्छा इलाज करने का प्रयास करते हैं। इसीलिए रोगी भी इनसे बहुत खुश रहते हैं।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि डॉ सारस्वत को लम्बी आयु प्रदान करें, ताकि वे समाज की इसी तरह सेवा करते रहें।

✦ *वही दिखाते सच्ची राह, जिन्हें न पद-पैसे की चाह।*

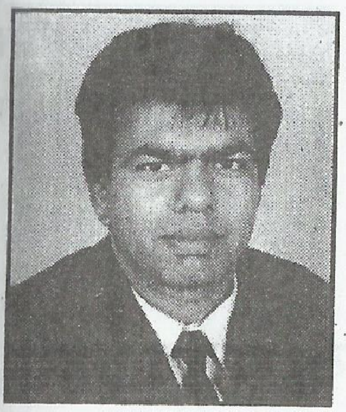

वीरेन्द्र कौशल
वरिष्ठ कवि–हिसार

पथ प्रदर्शक : डा० सारस्वत

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी से मेरा परिचय लगभग २० वर्ष पूर्व हुआ जब साहित्य के क्षेत्र में मैंने अपना पहला क़दम रखा। तब से आज तक डा० सारस्वत जी के साथ यह रिश्ता दिन प्रतिदिन और प्रगाढ़ होता गया। वे चाहे कम ही लिख पाते है परन्तु नये साहित्यकारों को उत्साहित करना, अपने नेक सुझावों से उन्हें साहित्य के सागर में ज्ञान की सरिता से जोड़ना ही इनका मुख्य ध्येय है। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से आप प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। आपने मुझे सदैव बड़े भाई का प्यार दिया है।

रचनाओं को सुनकर अपने उच्चकोटि के सुझावों से रचना को और सशक्त करना इनकी अच्छी आदतों में शुमार है। साहित्य के प्रति अपने आप को समर्पित कर हिसार के साहित्य जगत में अनेक नवोदित रचनाकारों को प्रोत्साहन दिया।

पेशे से चिकित्सक डा० सारस्वत जी पर लक्ष्मी जी की असीम कृपा है तथा नारायण-सेवा और सारस्वत जैसे अच्छे संस्कार पाकर अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं। अच्छे संस्कारों की सौग़ात जो इन्होंने हमें सौपी है, हमारी कोशिश है कि इस बगिया में इसी तरह के और पौधे लगा सारी फुलवारी से अच्छे संस्कारों की श्रृंखला से समाज को नई दिशा और स्फूर्ति मिले और जीवन को सार्थक रूप से जीने की प्ररेणा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आदरणीय डा० सारस्वत जी के अथक प्रयासों से आने वाले समय में हिसार, साहित्य जगत में और सशक्त रूप से उभरेगा और नये सशक्त हस्ताक्षरों की क़लम को मज़बूत करेगा।

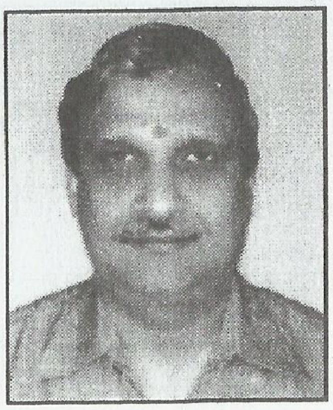

डा० सुभाष शर्मा
आयुर्वेदाचार्य, हिसार

सुषुप्त समाज के सजग प्रहरी

डा० सारस्वत के सतत् धर्म, समाज एवं परिवार हेतु संघर्षमय जीवन पर मंगलकलश के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

इन्होंने शेरड़ा (राज.) में रहकर 'ए' श्रेणी चिकित्सालय का निर्माण करवाया, पूर्व ज़िला आयुर्वेद अधिकारी श्री दूनीचन्द शर्मा प्रायः इनकी योग्यता एवं कार्यकुशलता की प्रशंसा करते रहते थे।

डा० सारस्वत सरस्वती नदी की भाँति अपने जीवन में सरस एवम् सजल बनकर सदैव बुझे मनों एवं सुषुप्त समाज की जड़ों में अपने अनुपम कार्यों एवम् श्रम से पोषण देते रहें हैं। मैं सर्वशक्तिमान से इनके स्वस्थ एवम् दीर्घ जीवन की कामना भी करता हूँ।

✦ मनुष्य का अपने आप से बढ़कर न कोई शत्रु है, न मित्र।

— आचार्य श्रीराम शर्मा

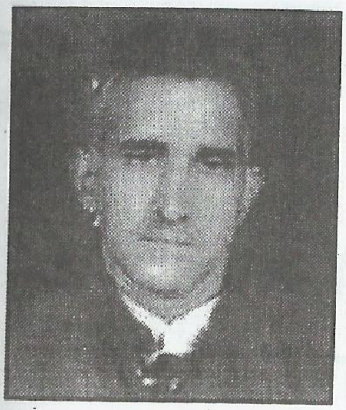

आर. के. शर्मा
मुख्य सलाहकार, नेहरू युवा संगठन केन्द्र
सातरोड (हिसार)

नैतिक मूल्यों के संवाहक - डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत

कुछ लोग अपने सद्‌गुणों के माध्यम से समाज में अपना एक विशेष स्थान बना लेते हैं। ऐसे विरले व्यक्तियों में एक नाम हैं-डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत। कवि के शब्दों में :-

है समय नदी की धारा जिसमें सब बह जाया करते हैं
कुछ जन ऐसे भी होते है, जो इतिहास बनाया करते हैं।

इन्होंने अपना जीवन समाज की सेवा, मानवता के कल्याण, गायत्री प्रसार और सम्पूर्ण युवा पीढ़ी के विकास के लिए नि:स्वार्थ समर्पित कर दिया है। अपने अस्पताल में हज़ारों निर्धन परिवारों का इलाज किया है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।

इनकी वाणी में इतनी मिठास है कि हर कोई इनसे प्रभावित होकर इनकी ओर खिंचा चला जाता है।

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह इन्हें समाज और राष्ट्र की सेवा करने की ताक़त प्रदान करे ताकि इस नगर की अधिक से अधिक सेवा कर सकें।

अन्त में-

तुम जिओ हज़ारों साल
साल के दिन हों पचास हज़ार

✦ उसी धर्म का है सम्मान, जिसका सहयोगी विज्ञान।

गोबिन्द राम बंसल
अध्यक्ष, गायत्री चेतना ट्रस्ट, हिसार

समाज सुधार में अग्रणी : डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत

डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत इस नगर में महान समाजसेवी, धर्मसेवी, साहित्यसेवी के रूप में जाने जाते हैं। ये विनम्रता, सरलता और सज्जनता की मूर्ति हैं। इनका सारा जीवन समाज सेवा में समर्पित है।

इन पर आचार्य श्री राम शर्मा जी की गतिविधियों का विशेष प्रभाव पड़ा। जिससे यह युग निर्माण योजना के प्रति समर्पित हो गए। इस योजना के अन्तर्गत इन्होंने परिवार निर्माण, समाज निर्माण, ग़रीबों की निःशुल्क सेवा, आदर्श विवाह करवाना, गायत्री अनुष्ठान आदि कार्यों में विशेष योगदान दिया। नैतिक शिक्षा का प्रचार किया तथा दहेज विरोधी अभियान छेड़ा।

चिकित्सा क्षेत्र में भी इनका योगदान महत्वपूर्ण है। अनेक संस्थाओं से जुड़े है तथा इन्हें बहुत से पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। परिवार निर्माण के अन्तर्गत बच्चों की शिक्षा तथा आदर्श विवाह पर ज़ोर देते है। प्रति वर्ष भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन करवाते हैं। ग़रीब तथा दलित वर्ग का सदैव निःशुल्क उपचार करते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में इनका समाज सेवा में कोई जवाब नहीं -

चिकित्सा जगत में भी ख्याति पाई
समाज सेवा में कभी कमी न आई
तुमने धरा पर मनुष्य जन्म जो पाया
नेक कर्मों से उसे तूने महान बनाया।

अन्त में माँ गायत्री से प्रार्थना करते हैं कि डा० सारस्वत चिरकाल तक समाज सेवा में कार्यरत् रहें।

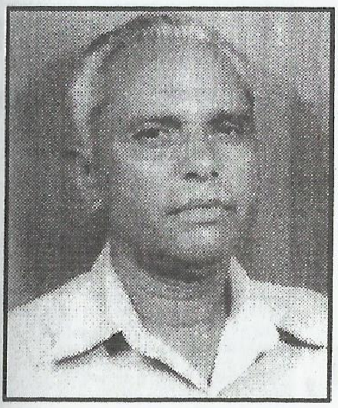

दर्शनानन्द सारस्वत
चिकित्सा प्रभारी अधिकारी
राजस्थान आयुर्वेद औषधालय,
झांसल (राजस्थान)

मानवतावादी एवं राष्ट्रवादी-डा॰ सारस्वत

आपका नाम हिसार नगर में श्रेष्ठ चिकित्सक के रूप जाना जाता है। ये एक अच्छे आयुर्वेद चिकित्सक के रुप में जाने जाते है। इनका दृष्टिकोण सर्वथा राष्ट्रवादी, मानवतावादी रहा है। ग़रीबों के प्रति दयावान रहे हैं एवं ग़रीब रोगियों की सेवा करने में इनका मन प्रसन्न रहता है।

परिवार में ज्येष्ठ सन्तान होने के कारण सभी बहन-भाइयों को उच्च शिक्षा दिलाई है। बड़े दायित्व के साथ कर्त्तव्य निभाया है। ये धुन के धनी एवं हँसमुख प्रकृति के व्यक्ति हैं।

मैं इनके स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ ताकि समाज एवं राष्ट्र की और अधिक सेवा कर सकें। इनकी धारणा सदैव पूरे समाज के लिए मंगलमय रही है।

✦ हमारे जीवन का व्यवहार ही हमारे हृदय की सच्चाई का प्रमाण है। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

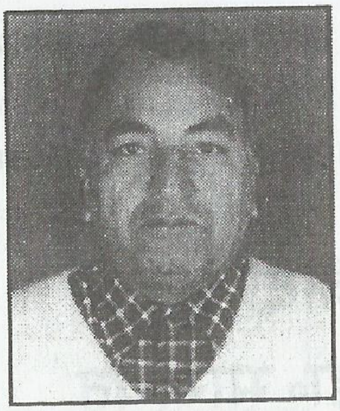

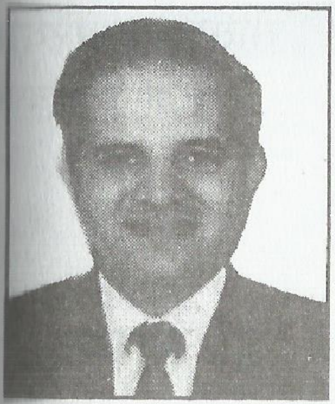

डा० महिपाल मुंजाल
महाप्रबन्धक,
ओम्नी पोटेंस, हिसार

विनम्रता एवं सौम्यता की प्रतिमूर्ति

हमारे आदरणीय डा० लक्ष्मीनारायण जी सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर 'मंगल कलश' नामक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। आपका यह प्रयास स्तुत्य एवं अनुकरणीय है। डा० सारस्वत विद्वत्ता, विनम्रता एवं सौम्यता की प्रतिमूर्ति हैं। इनकी जिह्वा पर माँ सरस्वती विराजमान रहती है। डा० सारस्वत हमारे गायत्री परिवार हिसार के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। अभी पिछले वर्ष शान्तिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में हिसार में लगी प्रदर्शनी का अवलोकन करने यहां की डिप्टी कमिश्नर श्रीमती दीप्ति उमाशंकर पधारी थीं तो उन्होंने प्रभावित होकर डा० सारस्वत की भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

मैं माँ गायत्री से इनकी दीर्घ आयु की प्रार्थना करते हुए इस शुभ अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ।

✦ जीना उसी का सफल है, जो गुणी और धर्मात्मा हो।

— आचार्य श्रीराम शर्मा

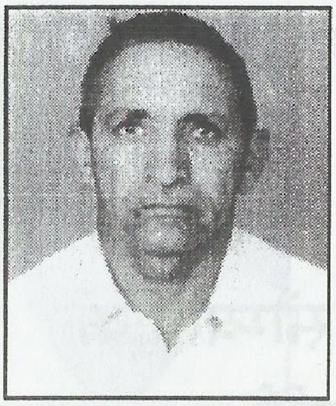

सीताराम बेरवाल
शेरड़ा (हनुमानगढ़)

मृदुभाषी-हँसमुख-'डॉ॰ सारस्वत'

है समय नदी की बाढ़ कि जिसमें सब बह जाया करते हैं।
है समय बड़ा तूफ़ान, प्रबल पर्वत झुक जाया करते हैं।।
अक्सर दुनिया के लोग, समय में चक्कर खाया करते हैं।
लेकिन कुछ ऐसे होते हैं, इतिहास बनाया करते हैं।।

डॉ. लक्ष्मीनारायण सारस्वत शेरड़ा (श्री गंगानगर) में तबदील होकर आये तो लोग प्रायः यह कह रहे थे कि कोट-पैन्ट और टाई वाला शहरी बाबू डॉक्टर तो गाँव में कुछ दिन ही रुक पाएगा। किन्तु कुछ दिनों बाद इनकी योग्यता, सज्जनता और श्रेष्ठ चिकित्सा सेवा से आस-पास के लगभग दस गाँवों के लोग इतने प्रभावित हुए कि पाँच-छः बार तबादला होने पर इनको बीस वर्ष तक अन्यत्र कहीं जाने ही नहीं दिया।

सरपंच लालमन आर्य और उच्चाधिकारियों से मिलकर हस्पताल, कन्या पाठशाला, आर्य सरोवर, उच्च विद्यालय, बिजली और पानी की व्यवस्था में भरपूर सहयोग एवं मार्गदर्शन करके शेरड़ा का नाम रोशन किया। दिन-रात ग़रीबों की सेवा में लगे रहते थे, कभी इलाज का पैसा नहीं लिया। गाँधीवादी और भारतीय संस्कृति को अपनाकर देशभक्ति से ओत-प्रोत ऐसे कर्मठ अधिकारी बहुत विरले ही होते हैं। सदा दूसरों की सहायता करने में इनको आनन्द आता है। मानवीय गुणों से युक्त डॉ. सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर इनके दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ।

✦ *माता में यदि हो अज्ञान, बच्चे कैसे बनें महान्।*

4

अक्षत चन्दन

विषय सूची

1	बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी	:	डॉ० ओ.पी. शर्मा सारस्वत	133
2	उदारता और स्नेह की प्रतिमूर्ति - मेरे भैया	:	डॉ० प्रेमलता सारस्वत	134
3	समाजसेवा व्रती	:	प्रो० देवकृष्ण सारस्वत	135
4	समाजसेवी एवं धर्मप्रेमी	:	घनश्याम ओझा	137
5	सच्चे कर्मयोगी	:	वैद्य आत्माराम शर्मा	138
6	A Selfless Servant of the Society	:	A.L. Joshi	139
7	सरल, सौम्य, सादगीयुक्त	:	डॉ० श्याम बिहारी लाल शर्मा	141
8	आदर्श चिकित्सक	:	सी.डी. शर्मा	142
9	परिवार एवं समाज के पथ प्रदर्शक	:	डॉ० ओ.पी. गोस्वामी	143
10	मधुरभाषी एवं विनम्र प्रकृति	:	आर.के. ओझा	144
11	एक कर्मयोगी का ज्योतिर्मय जीवन	:	भारतभूषण शर्मा	145
12	निर्मल जीवन- दिव्य चरित्र	:	डॉ० सुशीला शर्मा	146
13	रोगियों के हृदय सम्राट	:	अतुल जोशी	147
14	सबसे न्यारे, सबे प्यारे - मेरे डैडी	:	सुनीता जोशी	149
15	दीनों के मसीहा, आयुर्वेद के ज्ञाता	:	डॉ० सुरेश शर्मा	151
16	माता पिता का परम भक्त	:	पं० अमीचन्द शर्मा	152
17	निष्काम साधक	:	मनीराम सारस्वत	153
18	त्याग सेवा में अग्रणी	:	वैद्य ओम प्रकाश सारस्वत	154
19	कभी शहद से प्यारे, कभी नीम से खारे	:	परमेश्वरी शर्मा	155
20	मेरे अग्रज - मेरे प्रेरणा स्रोत	:	देवेन्द्र सारस्वत	156
21	एक शुभ चिन्तक	:	आभा शर्मा	158
22	मेरे पथ प्रदर्शक एवं सर्वगुण सम्पन्न पिताजी	:	डॉ० विजय शर्मा	160
23	प्यार और सुधार के प्रतीक	:	डॉ० सुनीता सारस्वत	161
24	धर्मपरायण डॉ० लक्ष्मी नारायण सारस्वत	:	पं० रामनरेश शर्मा	162
25	समाज के सच्चे हितैषी	:	डॉ० विवेक शर्मा	164
26	नई पीढ़ी के आदर्श	:	वन्दना सारस्वत	165
27	मेने नाना जी : आदर्श पुरुष	:	सर्वेश सारस्वत	166
28	दया-करुणा के सागर-मेरे नानाजी	:	प्रणव शर्मा	168
29	My Tauji-A dedicated personality	:	Saurabh Sharma	170

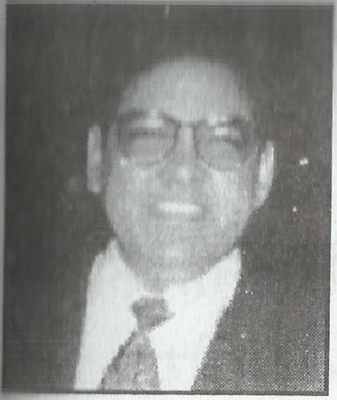

डा० ओ. पी. शर्मा सारस्वत

एल.एल.बी., पी.एच.डी.

सेशन जज (सेवा निवृत्त)

(बहनोई – जयपुर)

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

यह जानकर अपार प्रसन्नता हुई कि हिसार शहर की सुप्रसिद्ध संस्था ''साहित्य कला संगम'' ने डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में 'मंगल-कलश' प्रकाशित करने का निश्चय किया है। डा० सारस्वत वस्तुतः एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिखा है कि आनन्दानुभूत जीवन ही एक सच्चा और सफल जीवन है। डा० सारस्वत ने स्वयं समुदाय के साथ हर पल और हर क्षण आनन्द और संतोष के साथ बिताना सीखा है और बिताया है। स्वाभिमान इनके जीवन की शैली रही है। राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण एक प्रतिष्ठित राजपत्रित पद से स्वेच्छया सेवानिवृत्ति लेकर समाजसेवा में जुट जाना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। ये जहां भी रहे, जिस काम को हाथ में लिया, वहां सफलता हासिल कर के रहे। स्वजनों के साथ इनका स्नेह और परिजनों तथा परजनों के साथ इनका परोपकारिक आचरण उच्च स्तर की मानवीयता की मिसाल है। इनकी जीवन-शैली के बारे में कहा जा सकता है -

माना कि इस जहां को न गुलज़ार कर सके हम।
कुछ ख़ार कम किए ही गुज़रे जहां-जहां से।

इसी के साथ हमारी ओर से डा० सारस्वत को उनकी षष्टिपूर्ति के सुअवसर पर असंख्य सादर शुभकामनाएँ एवं संयोजकों को कोटिशः धन्यवाद स्वीकार करें।

डॉ० प्रेमलता 'सारस्वत'
(बहन–जयपुर)

उदारता और स्नेह की प्रतिमूर्ति-मेरे भैया

हम चार भाई और एक बहन हैं। सबसे बड़े मेरे भैया ने बहुत नाम कमाया है। इनकी परोपकार की भावना सदैव बनी रहती है। दूसरों के दुःख-कष्ट को देखकर स्वयं द्रवित हो जाते हैं और बीमारों की तो इतनी तन्मयता से सेवा करते हैं कि वे स्वस्थ हो कर ख़ुशी-ख़ुशी इन्हें दुआएं देते हैं।

परिवार के उत्थान में, हमारे माता-पिता जी के सान्निध्य में, हमारे बड़े भैया का विशेष योगदान रहा है। यद्यपि इनका निजी जीवन बहुत संघर्षमय रहा है, परन्तु इन्होंने हर कठिनाई का सामना अति धैर्य और साहस से किया है।

इन्होंने गायत्री मिशन में अत्याधिक निष्ठा रखकर, घर-घर जाकर यज्ञ-हवन करके दहेज तथा नशा जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई है। इनका व्यक्तित्व इतना विशाल है कि उसको शब्दों का रूप देना कठिन है। इनके रोम-रोम में आत्मीयता झलकती है और जो भी व्यक्ति एक बार इनके सम्पर्क में आ जाता है, इनसे प्रभावित हो जाता है। जो भी श्रेष्ठ कार्य करने की मन में ठान लेते हैं, उसे पूरा करके ही चैन लेते हैं। मुझे इनके जीवन मूल्यों से विशेष प्रेरणा मिली है। हमारी भाभी परमेश्वरी देवी का योगदान एवं त्याग भी सराहनीय रहा है।

मेरी प्रभु से यही कामना है कि हमारे बड़े भाई साहब दीर्घ जीवन प्राप्त करें, ताकि इनका आर्शीवाद एवम् मार्गदर्शन हमें लम्बे समय तक मिलता रहे।

यशस्वी बनें, नाम सार्थक रहे,
नज़र न किसी की जगत में लगे।
आपकी षष्टिपूर्ति के पर्व पर,
दुआ मांगते हम "शतायु" बनें।

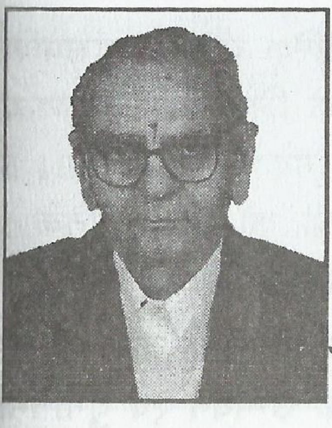

प्रो. देवकृष्ण सारस्वत
साहित्यचार्य, सांख्य योगाचार्य,
वेदान्ताचार्य, एम. ए.
(समधी–सीकर (राज.))

समाज सेवाव्रती - डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। आपका जन्म हरियाणा के सिवानी बोलान (हिसार) ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा हरियाणा एवं राजस्थान में हुई। सन् १६६४ में भिषगाचार्य परीक्षा उत्तीण करने के बाद आप राजस्थान के आयुर्वेद विभाग में चिकित्सक पद पर नियुक्त हुए। २८ वर्ष तक राजकीय सेवा करके आप स्वेच्छा से 'अ' श्रेणी के राजकीय चिकित्सालय शेरड़ा (श्री गंगानगर) में वरिष्ठ चिकित्साधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए तथा अपने जन्मक्षेत्र हिसार को ही अपना कर्मक्षेत्र बनाया। सम्प्रति आप सारस्वत हस्पताल डाबड़ा चौक, हिसार के निदेशक के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं।

आपका चिकित्साकर्म व्यवसाय मात्र न होकर जन-जन को पूर्ण स्वस्थ बनाने के महाव्रत का अंग है। आयुर्वेद की मान्यतानुसार केवल किसी व्याधि विशेष का निवारण 'स्वस्थता' का परिचायक नहीं होता। 'स्वस्थ' व्यक्ति की परिभाषा करते हुए बताया गया है कि

समदोषः समाग्निश्च, समधातुमल क्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमना, स्वस्थ इत्यभिधीयते।।

अर्थात त्रिदोषों का सन्तुलन, अग्नियों का सामञ्जस्य तथा धातु, मल, एवं क्रियाओं की समस्थिति शरीर को निरोग बनाते हैं किन्तु पूर्ण स्वस्थता के लिए मन, इन्द्रियाँ तथा आत्मा की प्रसन्नता आवश्यक होती है। अन्य चिकित्सा पद्धतियां रोगजन्य पीड़ा को दबाने का प्रयास करती हैं किन्तु आयुर्वेद रोग के कारणों को हटाकर स्थायी नैरुज्य प्रदान करता है।

श्री सारस्वत आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के साथ प्राकृतिक चिकित्सा

एवं योगचिकित्सा के समन्वय के पक्षधर हैं। शारीरिक व्यायाम मांसपेशियों को दृढ़ बनाता है किन्तु प्राणशक्ति की दृढ़ता के लिए प्राणों के व्यायाम या प्राणायाम की महत्ता एवं उपयोगिता को नहीं नकारा जा सकता। इसे ध्यान में रखकर आपने अपने पुत्र एवं एक पुत्री को भी प्राकृतिक एवं योगचिकित्सा पद्धति में पारंगत बनाने का प्रशंसनीय प्रयास किया।

आपकी प्रारम्भ से ही मान्यता रही है कि मानसिक दृष्टि से रुग्ण समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता। आध्यात्मिक उन्नयन एवं युगनिर्माण के लिए स्वस्थ मनोवृत्ति-सम्पन्न साधकों का दृढ़संकल्प एवं तप आवश्यक होता है। इसी दृष्टि से प्रेरित होकर आप युगपुरुष मनीषी पं. श्रीराम शर्मा के गायत्री मिशन से जुड़े और आज भी धर्म प्रचार, कुरीति निवारण एवं लोक जागरण जैसी प्रवृत्तियों में सहयोग कर रहे हैं। दहेज प्रथा के विरोधी होने के नाते आपने अपने अनुज का विवाह आचार्यश्री के सान्निध्य में उनके ही परिवार की सुशील कन्या के साथ सात्विक विधि से सम्पन्न कराकर कथनी एवं करनी की एकरूपता का परिचय दिया।

आप अनेक धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं शैक्षिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। आर्य परिवार को प्रेरित करके शेरड़ा में दस लाख रुपयों की लागत से नवीन अस्पताल भवन के निर्माण में आपका सराहनीय सहयोग रहा है। आपकी ही सत्प्रेरणा से आपके एक अनुज स्वर्गीय डॉ. खुशीराम निःशुल्क चिकित्सा शिविरों के संचालन जैसे सेवा प्रकल्पों से जुड़े रहे।

आपके चिन्तन में आर्ष प्रज्ञा, पौराणिक समन्वयशीलता, गायत्री परिवार की ऊर्ध्वमुखी चेतना, आर्य समाज की सुधारवादी दृष्टि एवं समतावादी गान्धीवादी विचारधारा का प्रभूत प्रभाव परिलक्षित होता है।

साहित्यिक अभिरुचि आपके व्यक्तित्व को अनुपम आभा प्रदान करती है। 'साहित्य कला संगम' जैसी साहित्यिक संस्थायें आप जैसे मनीषी का सहयोग पाकर गौरव का अनुभव करती हैं। आपकी सहज सरलता एवं स्मितभाषिता तो प्रथम दर्शन में ही आपके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करती है। ऐसे तपः पूत एवं सौजन्यमूर्ति महामनीषी की सेवामयी जीवन साधना का अभिनन्दन करते हुए हम उनके दीर्घायुष्य की मंगलकामना करते हैं। ऐसे प्रज्ञापुरूष की जीवनपुष्प की सुगन्ध से जनमानस निरन्तर सुवासित एवं प्रेरित होता रहे -यही प्रभु से प्रार्थना है।

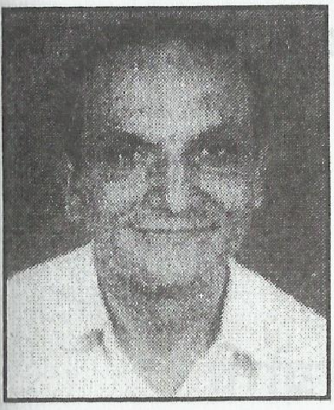

घनश्याम ओझा
अध्यक्ष ब्राह्मण समाज
(समधी–जोधपुर)

समाजसेवी एवं धर्मप्रेमी : डा० सारस्वत

''साहित्य कला संगम'' के प्रधान डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में प्रकाशित होने वाली पुस्तक 'मंगल कलश' के लिए सारस्वत समाज जोधपुर की ओर से ढेरों कामनाएँ।

डा० लक्ष्मीनारायणजी सारस्वत एक प्रमुख समाज-सेवी, धर्म-प्रेमी, साहित्यिक, चिंतक व मनीषी हैं। आपने एक डॉक्टर के रूप में पीड़ित मानवता की सेवा का अनुपम उदाहरण पेश किया है। आप कई संस्थाओं से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहे हैं। सरकार व सामाजिक संगठनों ने समय समय पर आपको कई पुरस्कारों से नवाज़ा है। आप जन्म के साथ कर्म से भी 'सारस्वत' है। हम इनके दीर्घायु व उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। आपकी संस्था भी इस कार्य के लिए बधाई की पात्र है।

✦ जो सही सोचता और सही करता है, वही इस धरती पर सबसे बड़ा खिलाड़ी है। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

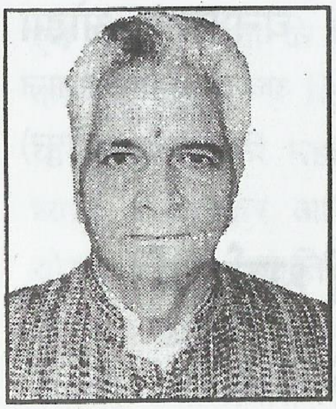

वैद्य आत्माराम शर्मा
आयुर्वेदाचार्य
(समधी – रतनगढ़)

सच्चे कर्मयोगी

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।।

इस उक्ति का अक्षरशः पालन करने वाले परम स्नेही डॉ. लक्ष्मी नारायण सारस्वत को इनकी षष्टि-पूर्ति पर हार्दिक बधाई।

पहली बार जब डॉ. सारस्वत जी अपनी सुपुत्री का विवाह-सम्बन्ध मेरे पुत्र चिरंजीव भारतभूषण से स्थापित करने मेरे पास आए तो भारतीय वेशभूषा - धोती-कुर्ता पहने सौम्य एवं मधुभाषी व्यक्ति को अपने सम्मुख देखकर इनके प्रति आकर्षित हुए बिना नहीं रह सका। इस आकर्षण का प्रभाव यह पड़ा कि तुरन्त मैने हाँ कर दी, क्योंकि मैं इनके आग्रह को टाल ही न सका। इसके पश्चात तो हमारे सम्बन्ध उत्तरोतर घनिष्ठ होते गए।

प्रियवर सारस्वत जी मुझे अत्यन्त प्रिय इसलिए भी लगते हैं कि ये संस्कारों और विचारों की दृष्टि से शुद्ध भारतीय हैं। आतिथ्य-सत्कार में अग्रणी हैं तथा मुझे बार-बार हिसार आने का निमन्त्रण देते रहते हैं। एक बार इनके अस्वस्थ होने पर मुझे इनका क्लीनिक संभालने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इनका सान्निध्य अत्यन्त आनन्ददायक तथा स्मृतिदायक रहा। इनका मृदुल व्यवहार तथा आदरभाव मैं कभी नहीं भूल सकता।

एक बार डॉ. साहब ने साहित्यिक-सामाजिक संस्था 'रसराजकेन्द्र' के अन्तर्गत विराट संगीत सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें संगीत सम्राट पं. जसराज जी को आमन्त्रित किया गया। डॉ. सारस्वत इस संस्था के प्रधान-पद पर आसीन थे। सौभाग्यवश मुझे भी इन्होंने आमन्त्रित किया, पूरा सम्मान दिया और सबसे बढ़कर मुझे इस अवसर पर अपना गायन प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हुआ। ये मेरे जीवन के मधुरतम क्षण थे, जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकता। ये सब कुछ डॉ. साहब की उदारता के ही कारण सम्भव हुआ।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि सारस्वत जी इसी प्रकार रोगियों की सेवा में तत्पर रहें तथा दीर्घायु हों।

A.L. Joshi
Media Person
(Samdhi - (Hisar))

A selfless Servant of the Society

It was about a decade back that I first met Dr. L.N. Saraswat. I had heard a lot about his good nature but never seen him before. To be honest, at first sight, his clinic did not impress me very much. However, the time went on, the frequency of our interaction increased and so also the visits to his clinic. The more I came into contact, the more I was impressed by his polite manners. I found in him a multi-faceted personality-a doctor, a poet, a social worker, rolled in one.

I discovered that he is associated with a number of social and educational organizations. His devotion and selfless services were recognized by the high and low alike. He was honoured by His Excellency, the Governor of Rajasthan; Collector, Sriganganagar (Rajasthan); Director, Ayurvedic Department, Rajasthan; Director General, Doordarshan, New Delhi.

He took voluntary retirement and established his own clinic in pursuit of his urge to serve the poor and Dalits. Therefore, a good percentage of his clientele is the poor and Dalits whom he treats free or at a very nominal cost. It has become a passion for him, more than a profession, to provide medical aid to the needy and poor. This won him Dr. Ambedkar national award from the All India Dalit

Sahitya Academy.

Dr. Saraswat's interest in education, literature, art and culture is no less than his medical profession. He is the chairman of a leading educational institution. He may not have many published works to his credit, but he participates in almost all the literary forums, poetic symposia, etc. Here again he was honoured by the Sahitya Kala Sangam, Hisar. Subsequently, he was nominated its President which position he holds even today.

He is an active and devoted member of Gayatari Pariwar, a reformist organization engaged in eradicating social evils like dowry, and preaching equality and brotherhood.

In short, it can be said that Dr. Saraswat is a very humble, humane and sweet tongued person who never offends anybody. He has a burning desire to serve with whatever resources he commands. He is always at the beck and call of everyone who needs his services. The cause of service is so dear to him that sometimes it causes neglect to his family. I wish him a long, happy and prosperous life.

✦ जो सद्‌गुणी है, वही बुद्धिमान है, वही सज्जन है। जो सज्जन है, वही सदा सुखी है। — आचार्य श्रीराम शर्मा

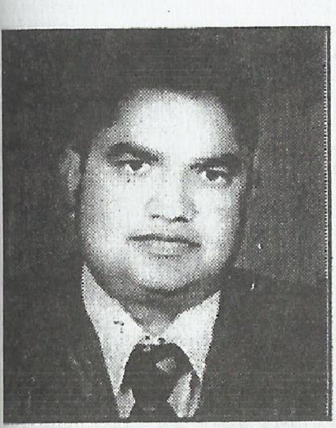

डा० श्याम बिहारी लाल शर्मा
डिप्टी डायरेक्टर पशुपालन विभाग (से० नि०)
(मौसा जी – आगरा (उ० प्र०)

सरल, सौम्य, सादगीयुक्त - डा० सारस्वत

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत जी के विषय में मेरा अनुभव नितान्त व्यक्तिगत है, और वह है - उदधि के समान लहराते, निश्छल, निस्वार्थ प्यार का अनुभव। बड़े भाई होने के कारण इन्होंने अपने पिता की ज़िम्मेदारियों को अपने कंधों पर डाला। मेरी बेटी के साथ अपने भाई देवेन्द्र का रिश्ता करने जब वे मेरे घर सहारनपुर पहुँचे तो मैं धोती-कुर्ते में सजे भारतीय संस्कृति में ढले रूप और सरल, सौम्य, सादगी-युक्त व्यवहार से प्रभावित हुए बिना न रह सका। ये अपने इंजीनियर भाई का विवाह बिना दान-दहेज के, सादगी के साथ वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्री राम शर्मा के सान्निध्य में शांतिकुंज हरिद्वार में करने के इच्छुक थे। प्रभु कृपा से इनकी यह इच्छा पूर्ण हुई।

गायत्री-मिशन के प्रति निष्ठावान लोग तो बहुत मिलेंगे लेकिन ऐसी महान विभूतियाँ कम ही होंगी, जिनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर न हो। डॉ० साहब के षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में इनके जीवन पर प्रकाश डालता 'मंगलकलश' ग्रन्थ अवश्य ही भावी पीढ़ी को ज्ञान रूपी अमृतपान कराकर सद्मार्ग पर ले जाएगा। 'साहित्य कला संगम' संस्था तथा इस पुण्य-कार्य से जुड़े सहयोगी-जन बधाई के पात्र हैं।

षष्टिपूर्ति के इस शुभ अवसर पर मैं इनके प्रति अपनी शुभकामनाएँ प्रस्तुत करते हुए इनके उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

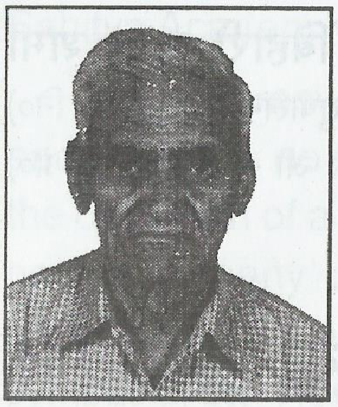

सी० डी० शर्मा
निजी सचिव, (पूर्व केन्द्रीय मन्त्री)
(फूफाजी—हिसार)

आदर्श चिकित्सक

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत की षष्टिपूर्ति पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन स्वागत समिति द्वारा किया जा रहा है।

डा० सारस्वत सुयोग्य, सज्जन एवं आदर्श चिकित्सक के साथ-साथ अनेक सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं में भी अपना अमूल्य योगदान देकर जन सेवा में लगे रहते हैं। केन्द्रीय राज्यमंत्री आयुष्मती सैलजा भी इनकी सज्जनता और योग्यता से प्रभावित हैं।

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री चौधरी दलबीर सिंह जी किसी कार्यक्रम में हिसार आये हुए थे। डा० सारस्वत के सद्विचार एवं सेवाभावना से विशेष प्रभावित होकर मेरे सामने इनकी प्रशंसा की थी।

इनके स्वस्थ जीवन एवं दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ ताकि अपने बीमारों की व जनता की सेवा और अधिक समय तक करते रहें।

✦ मन को हर्ष और उल्लासमय बनाओ, इससे हज़ारों हानियों से बचोगे और लम्बी उम्र पाओगे। — *आचार्य श्रीराम शर्मा*

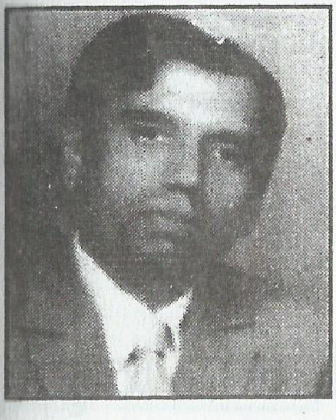

डा० ओ. पी. गोस्वामी
राजकीय वरिष्ठ चिकित्सक
(समधी – श्रीगंगानगर)

परिवार एवं समाज के पथ प्रदर्शक

डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत त्याग एवम् सेवा में सदैव अग्रणी रहे। इन्होंने परिवार के प्रत्येक बन्धु-बान्धव को शिक्षित कर प्रगति-पथ पर अग्रसर किया। इस प्रकार ये पारिवारिक नभ में ओजस्वी प्रकाशमय तारा मण्डल बन गये हैं।

परिवार की शिक्षा के साथ-साथ नम्रता इनका आभूषण रहा है। विभिन्न संस्थाओं से जुड़कर ग़रीब, असहाय, निर्धन लोगों की सहायता में सदैव आगे रहते हैं। ग़रीब रोगियों को निःशुल्क दवाई देते हैं। यह भावना इनमें शैशवकाल से ही बनी हुई है।

आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा संचालित शांतिकुञ्ज से जुड़े हुए हैं तथा पूरे परिवार एवं समाज को इस ओर प्रेरित कर रहे हैं।

मृदुभाषी, साहसी, धैर्यवान, समाजसेवी, तपस्वी, कीर्तिपुंज, त्यागी, धर्मपरायण डा० सारस्वत का अभिनन्दन निस्सन्देह स्वागत योग्य है। मैं इनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ।

✦ यदि हम प्रसन्न रहेंगे तो अज्ञात रूप से संसार की बहुत भलाई करेंगे। ✒ *आचार्य श्रीराम शर्मा*

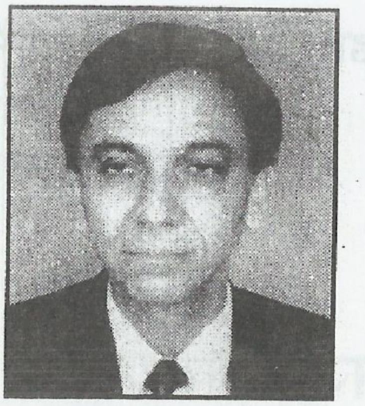

आर. के. ओझा
निदेशक लक्ष्मी उद्योग
(समधी–जोधपुर)

ममधुरभा एवं विनम्र प्रकृति

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपकी षष्टिपूर्ति के उपलक्ष्य में मंगल-कलश के नाम से पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

आपने जीवन में अनेक उपलब्धियां अर्जित की हैं। आपने स्वास्थ्य, शिक्षा व समाज सेवा के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। आपके कार्य अनुकरणीय हैं। आपका व्यवहार हर व्यक्ति का मन मोह लेता है।

आपने सदैव लक्ष्य प्राप्ति के लिये अथक व अनवरत प्रयास किये हैं। आपका संघर्षमय जीवन हम सबके लिये प्रेरक है। आपके समाजसेवी कार्य वंदनीय हैं, साहित्य सेवा स्तुत्य तथा धर्म सेवा पूज्य है। आपकी मधुरवाणी, विनम्रता, सरलता व सज्जनता व्यक्ति को आपकी ओर चुंबकीय शक्ति के सदृश आकर्षित करती है। आप सन्त स्वभाव के हैं तथा सौजन्य की मूर्ति हैं।

मैं ईश्वर से आपके दीर्घ, स्वस्थ, वैभवशाली व ऐश्वर्ययुक्त यशस्वी जीवन की कामना करता हूँ जिसे आप लम्बे समय तक समाज को अपने कार्यों से उपकृत करते रहें।

✦ *गंदे फूहड़ गीत न गाओ, मर्यादा को शरमाओ।*

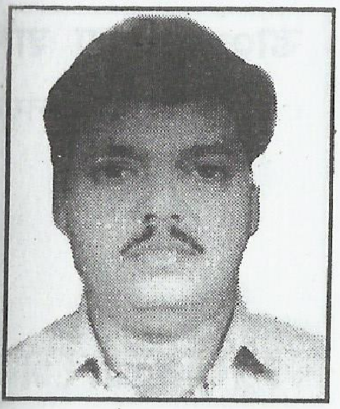

भारतभूषण शर्मा

एम.ए., एल.एल.बी.,

(दामाद – रतनगढ़)

एक कर्मयोगी का ज्योतिर्मय जीवन

परम् श्रद्धेय पिता जी को जीवन-यात्रा की सफलतम चुनौतीपूर्ण समस्त बाधाओं को चीरकर परिपूर्ण परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करते हुए एक कर्मयोगी की तरह साठ वर्ष की पूर्णता पर हम सब की हार्दिक बधाई।

वास्तव में ऐसा महसूस नहीं हो रहा है कि आपने साठ श्रावण व्यतीत कर लिए हैं। आपके कार्य करने की गति, लगन, स्फूर्ति और व्यक्तित्व इस बात की पुष्टि करते हैं कि आपकी मित्र-मण्डली दस वर्ष पहले ही षष्टिपूर्ति मना रही है।

माह अप्रैल सन् १६८३ को जब मेरा प्रथम बार डा० साहब से साक्षातकार व वार्तालाप हुआ, तब से आज तक इनके व्यक्तित्व से हम परिवार के सभी व्यक्तियों को बहुत कुछ सीखने को मिला है।

लगभग २०-२१ वर्षों से में इनके सतत् सम्पर्क में हूँ। मैंने इनको इतना क़रीब से जानने की कोशिश की है, लेकिन आकाश की ऊँचाई क्या कोई नाप पाया है? फिर भी इनके जीने का अन्दाज़, कार्य करने की अपरिमित क्षमता, विपरीत परिस्थितियों में भी साहित्य एवम् काव्य रचना करते रहना तथा मधुर व्यवहार एवं अतिथि-सेवा आदि बहुत गुणों से भरा इनका जीवन है।

जो व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपने परिवार के सभी सदस्यों की उन्नति के साथ-साथ जीवन के इस मुक़ाम पर हँसतें-हँसतें पहुँचा है, ऐसे प्ररेणा पुरुष, जो निर्बाधगति से समस्त बाधाओं का सीना चीरकर चलते हैं, सफलताएँ उन्हीं के कदमों पर शीश झुकाती हैं। ऐसे व्यक्तित्व के धनी डा० साहब का दामाद होने का सौभाग्य पाकर मैं ईश्वर एवं समाज का धन्यवादी हूँ, तथा साथ ही इनके स्वास्थ्य, दीर्घायु की ऊचाँइयां उसी कक्ष को छूते रहें, इस मंगलकामना के साथ मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि हमें जीवन पर्यन्त इनका सान्निध्य इसी तरह मिलता रहे।

डा० सुशीला शर्मा
(पुत्री–रतनगढ़)

निर्मल जीवन - दिव्य चरित्र

मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यःपश्यति सः पण्डितः।।

शास्त्र में लिखा है कि दूसरों की स्त्री को माता समान, दूसरों के धन को पत्थर के समान व सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान देखता है, वही व्यक्ति पण्डित है। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर सही चलने वाले मेरे पूज्य पिता जी एक आदर्श इन्सान हैं। इनका निर्मल जीवन व दिव्य चरित्र है।

लड़के और लड़कियों में किसी प्रकार का भेदभाव न रखकर हमें अच्छी शिक्षा एवं विद्याध्ययन करने का सुअवसर प्रदान किया। ये प्रायः हमें निम्न श्लोक सुनाकर विद्या पढ़ने की प्ररेणा देते रहते थे :-

विद्यानाम नरस्य रूपर्माधकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्याभोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।।

शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा एवं माता भगवती देवी शर्मा के निर्देशानुसार इन्होंने अपना जीवन-क्रम अपनाया। गायत्री मंत्र की साधना करते रहते हैं। मुझे भी अच्छे संस्कार पाने के लिए एक वर्ष तक माता जी के चरणों में देवकन्या के रूप में रहने का सौभाग्य मिला। गोरखपुर गुरुकुल खानपुर में मुझे पढ़ाया व प्राकृतिक चिकित्सा की डिग्री करवाई। चिकित्सा क्षेत्र में तो मेरे पिता जी सिद्धहस्त चिकित्सक माने जाते हैं। मेरे रक्तप्रदर की बीमारी में हिसार की चार महिला डॉक्टरों से इलाज नहीं हुआ। हस्पताल में भी पन्द्रह दिनों तक भर्ती रही। डॉक्टरों ने आप्रेशन कह दिया था। इनके आयुर्वेदिक इलाज से मुझे जीवन दान मिला। डॉक्टरों ने तो यहां तक भी कह दिया था कि इसका गर्भाशय निकालना पड़ेगा और बच्चे भी नहीं हो सकेंगे। इनके आशीर्वाद से तीन बच्चे हैं। भगवान से प्रार्थना है कि इनको लम्बी आयु मिले और इसी प्रकार समाज की सेवा व दीन-दुखियों का इलाज करते रहें।

अतुल जोशी
क्षेत्रीय प्रबंधक, जे.एस. ऑटो,
(दामाद–दिल्ली)

रोगियों के हृदय-सम्राट – डा० सारस्वत

जीवन जीना भी एक कला है। जो इस कला को जानता है और सदुपयोग कर सकता है, निश्चित रूप से उसका नाम सदैव शीर्ष पर अंकित हो जाता है। ऐसे ही महान व्यक्तियों में एक हैं :- डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत।

किसी भी व्यक्ति का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होना अपने आप में गौरवपूर्ण बात है। हमें बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि हमारे परिवार के किसी सदस्य के सम्मान में ''मंगल-कलश'' का प्रकाशन हो रहा है।

डा० सारस्वत सम्पूर्ण समाज को अपना परिवार समझते हैं तथा निःस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं। अपने रोगियों से कम से कम पैसे लेकर उनका उपचार करते हैं। इनके मरीज़ जानते हैं कि डा० सारस्वत के पास कम से कम पैसों में बड़े से बड़े रोग का इलाज है। वे इन्हें भगवान तुल्य मानते हैं और इन पर विश्वास करते हैं। वास्तव में डॉक्टर साहब उनके दिलों पर राज करते हैं। दूर-दराज़ से मरीज़ इनके पास आते हैं।

डा० सारस्वत एक कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति हैं। सब काम छोड़कर सबसे पहले अपने दायित्वों का निर्वाह करते हैं। यहां ये किसी से समझौता नहीं करते। जहां-जहां भी ये रहे, अपनी अमिट छाप छोड़कर आए हैं। शेरड़ा (राजस्थान) में हस्पताल की सूरत ही बदल कर रख दी। अनेक मेडिकल शिविर आयेजित किए, आस-पास पेड़-पौधे लगवाए तथा हस्पताल को 'ए' श्रेणी का दर्जा दिलवाया।

इनकी वाणी में मिठास है। ये सहनशील तथा हँसमुख हैं। इनमें लगन भी ग़ज़ब की है। जिस काम में जुट जाएं, उसे पूरा करके ही दम

लेते हैं। बड़ों में बैठते हैं तो बड़प्पन दिखाई देता है और बच्चों में बच्चों की तरह बात करते हैं। इनसे बच्चे बड़े खुश रहते हैं क्योंकि ये बच्चों के मनोविज्ञान को अच्छी तरह जानते हैं। अत्यन्त उत्साही तथा साहसी हैं। हिसार से गाड़ी चलाते-चलाते बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे टेढ़े, मेढ़े पर्वतीय क्षेत्रों की यात्रा बड़ी आसानी से कर आए।

वास्तव में ये कर्मठ, धैर्यवान तथा सहनशील हैं। इन्हें नमन करने को जी चाहता है। हम भी प्रयास करेंगे कि यदि आप जैसा नहीं, तो थोड़ा-बहुत आपके पदचिह्नों पर चलकर समाज की सेवा करें।

अन्त में शुभकामनाओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों तथा आपमें सामर्थ्य एवम् स्फूर्ति इसी प्रकार बनी रहे ताकि परिवार तथा समाज को अपना प्यार और मार्गदर्शन देते रहें।

✦ गायत्री उपासना से अन्तः करण में विवेक उत्पन्न होता है और जिसे विवेक प्राप्त हो गया, उसके लिए न कोई शोक है, न दुःख।

आचार्य श्रीराम शर्मा

सुनीता जोशी
एम.ए.; एल.एल.बी.
एडवोकेट
(सुपुत्री–दिल्ली)

सबसे न्यारे–सबके प्यारे : मेरे डैडी

एक गाँव से जीवन का सफ़र शुरूकर, छोटे से शहर में अध्ययन करके आज हिसार जैसे बड़े शहर में प्रतिष्ठा पाने वाले एवं अनेक पुरस्कारों से सम्मानित मेरे परमादरणीय पिता जी के जीवन, उनके कार्य एवं सूझ-बूझ का वर्णन किन शब्दों में करूं ? ये मेरे लिये प्रेरणा के प्रतीक हैं।

इन्होंने परिवार में सबसे बड़े बनकर अपना बड़प्पन दिखाया, बड़ों से ढेर सारा प्यार पाया तथा बच्चों के प्यारे नाना जी-दादा जी बनकर बच्चों पर ख़ूब स्नेह, आर्शीवाद लुटाया। इनके जीवन के किसी भी पहलू को उठा कर देखें तो उसी में सम्पूर्ण व्यक्तित्व नज़र आता है।

शिशु के पालन-पोषण में ज़रूरत होती है - ढेर सारा प्यार, अटूट विश्वास, स्वतंत्रता, भौतिक सुविधाएँ, उत्तम रहन-सहन एवं थोड़ी सी डाँट की। ये सब मेरे पापा ने मुझे दिया। मेरे पापा मेरी प्ररेणा के स्त्रोत हैं। इन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में बिना किसी लालच के कड़ी मेहनत एवं श्रद्धा से महत्वपूर्ण स्थान पाया है। ये मेरे ही नहीं समस्त उन नागरिकों के लिए प्ररेणा-स्त्रोत हैं जो जीवन में कुछ करना चाहते हैं। जीवन के एक-एक पल का कैसे सदुपयोग किया जाए, इनसे अच्छा कोई नहीं जानता।

अपने डॉक्टरी व्यवसाय को इन्होंने समाज सेवा के रूप में अपनाया है। चाहे वे कितने ही बीमार-परेशान रहे लेकिन कभी क्लीनिक नहीं छोड़ा। अपने कार्य से इतना लगाव है कि वे अपने मरीज़ों के लिए सब काम छोड़ देते हैं। डॉक्टर बहुत है लेकिन जितनी प्यार-श्रद्धा से मेरे पापा ने अपनी ज़िम्मेदारी निभाई है, वैसे कोई विरला ही निभाता होगा। डॉक्टरी की डिग्री तो बहुतों के पास होगी, लेकिन उनकी सोच एवं काम

करने का तरीक़ा बिल्कुल अलग है। ये समाज के लोगों को अपने परिवार की दृष्टि से देखतें हैं, और यही दृष्टिकोण इनको सबसे अलग बनाता है। अपने परिवार का पालन सभी करते है, लेकिन इन्होंने समाज को परिवार की तरह स्नेह एवं सेवाएँ दी हैं। यही वजह है कि ये जिस जगह पर जाते हैं वहाँ एक अमिट छाप छोड़ते हैं। जिस जगह को ये बीस वर्ष पहले छोड़ चुके, वहां के लोग आज भी इन पर विश्वास करते हैं और इतनी दूर अपना इलाज कराने आते हैं।

अगर पारिवारिक दृष्टिकोण से देखें, तो जो प्रतिष्ठा एवं पहचान समाज में इन्होंने दिलाई है, और कोई नहीं दिला सका। इनकी सूझ-बूझ एवं काम करने का तरीक़ा बिल्कुल अलग है। इसीलिए ये परिवार में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते है। हमारे परिवार में इनकी इतनी रौनक है कि घर भरा-पूरा लगता है। *''अतिथि देवोभव''* परम्परा का पूरा पालन करते हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र में भी ये किसी से कम नहीं हैं। नित्य सन्ध्या, साधना, स्वाध्याय एवं दीपयज्ञ करना इनकी दिनचर्या है। समय-समय पर हवन व वर्ष में दो बार नवरात्र करते हैं। शन्तिकुञ्ज, गायत्री तीर्थ हरिद्वार में आचार्य श्री राम शर्मा के शिष्य के रूप में ये गायत्री परिवार के जाने माने कार्यकर्ता हैं।

मेरे तो अच्छे पापा हैं ही, किसी के अच्छे भाई, अच्छे भानजे, अच्छे ताऊजी, अच्छे मामा जी, नाना जी, व दादा जी हैं। इससे भी बढ़कर ये एक अच्छे एवं लोकप्रिय चिकित्सक हैं, क्योंकि इनकी मान्यता है कि :-

जिन्हें शक हो वे करें खुदाओं की तलाश।
हम तो इन्सान को दुनिया का खुदा कहते हैं।।

अन्त में ढेर सारी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इनकी बेटी होने का गर्व करते हुए इतना ही कहूँगी कि हमारी अगामी पीढ़ी भी डा० सारस्वत जैसी निःस्वार्थ भाव से सेवा करे, समाज को स्नेह एवं सेवाएँ दे तथा इन जैसा श्रेष्ठ नागरिक बन सके। ''सुखी, सम्पन्न, स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों, दुनिया भर की सैर करें'', यही मेरी दुआ है। हिसार में ही नहीं, दुनिया भर में आपका नाम रहे।

डा० सुरेश शर्मा
बी.ए., एम.एस
(दामाद – मूनक), (पंजाब)

दीनों के मसीहा, आयुर्वेद के ज्ञाता

महान विभूतियों की कर्मभूमि रही हिसार शहर में एक और नाम उभरकर आया है, वह है डॉक्टर लक्ष्मीनारायण सारस्वत जी का। आयुर्वेद के प्रकाण्ड वैद्यराज जी ने समाज सुधारक, कवि, मधुरभाषी और दानी गुणों के कारण लोगों के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ रखी है।

आदरणीय डा० साहब ने जब पहली बार मेरे विवाह के सम्बन्ध में दूरभाष द्वारा बात की तो उनकी दिव्य आवाज़ मेरे हृदय को छू गई। विवाह के पश्चात जब मैंने उनके जीवन-झरोखे में झांका तो प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। आज के युग में ऐसे कर्मठ पुरुष कम ही मिलते हैं जो अपने भौतिक सुख की कामना छोड़, दु:खी रोगियों के स्वस्थ जीवन की कामना भगवान से करते हों। विवाह के पश्चात मेरा जब उनसे साक्षात्कार हुआ तो तब उनके चरित्र एवं कोमल स्वभाव के बारे में जैसा सुना, उससे कहीं अधिक उनसे मिलने पर अनुभव किया। डा० साहब आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान, त्याग एवं साधना की मूर्ति हैं जो कि बड़ी कार्यकुशलता से अपने मरीज़ों पर योग एवं आयुर्वेद की वर्षा करते रहते हैं। अनेक शिविरों, संस्थाओं के साधकों की लगातार मांग की पूर्ति हेतु वैद्यराज जी ने महती कृपा कर अपने अनुभूत प्रयोगों को लोक-हितार्थ प्रकट किया है, ताकि अधिकतम रोगी इनके प्रयोग का सेवन व अभ्यास कर अपना शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास करके आनन्द से भरपूर सुखदायी, शान्तिप्रद व प्रसन्न जीवन जी सकें।

ऐसे पितृ-तुल्य श्वसुर जी की स्नेह-छाया एवं अनुभव पाकर मैं अपने आप को धन्य समझता हूँ तथा इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ। उनके जीवन चरित पर छपी यह पुस्तक आगामी पीढ़ी को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

पं० अमीचन्द शर्मा

(चाचा–सिवानी बोलान)

माता-पिता का परम भक्त

हमारे परिवार और गाँव के लिए बहुत ही खुशी और गौरव की बात है कि ऐसी योग्य सन्तान उत्पन्न हुई है। जन्म के बाद ज्योतिषी ने बताया था कि यह आपका बेटा बहुत होनहार बनेगा और ख़ानदान का नाम रोशन करेगा।

बचपन में डा० सारस्वत बहुत शरारती और नटखट था तथा पढ़ाई में भी कुछ कमज़ोर था। हमने सोचा कि ज्योतिषी की बात झूठी है। आयुर्वेद कालेज सरदार शहर में दाख़िले के बाद, वहाँ धार्मिक वातावरण होने के कारण इसके जीवन में बदलाव आने लगा। वहाँ इसने बहुत इनाम लिए। हमारे हलके में यह पहला डॉक्टर बना था, और बहुत अच्छा इलाज करता था। सरकारी नौकरी में रहकर भी इसने जनता की बहुत सेवा की। माता-पिता का परमभक्त है तथा बहुत योग्य सन्तान है। अन्त में एक कवि की चार लाइनों में शुभकामना व आर्शीवाद व्यक्त कर रहा हूँ -

यशस्वी बनें, नाम सार्थक रहे,
नज़र न किसी की जगत में लगे।
सारस्वत की षष्टिपूर्ति-पर्व पर,
दुआ माँगते हम 'शतायु' बनें।।

✦ जहाँ नहीं है सत्य विचार, वहाँ व्यर्थ धन का भण्डार।

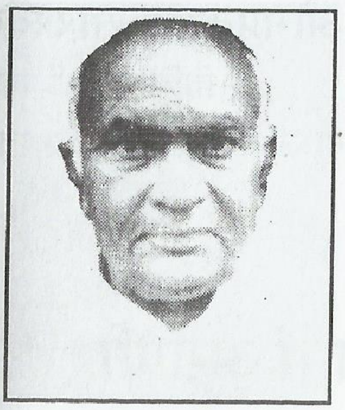

मनीराम सारस्वत
अध्यापक (सेवानिवृत्त)
(भाई – चुरू (राजस्थान))

निष्काम साधक

डा० सारस्वत के उत्तम चारित्रिक गुण सभी को अभिभूत करते हैं। इन्होंने दादा जी की निष्काम सेवा की है। इसी कारण ये उनके प्यारे पौत्र रहे तथा माता-पिता की अनन्य सेवा के कारण सपूत कहलाए। भाई-बहनों के लिए त्याग किया जो आज उच्च पदों पर आसीन हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन भी सफल है। पति-पत्नी दोनों ने आदर्श माता-पिता के कर्त्तव्यों का निर्वहन किया है। इन्होंने कुल के पुनीत यश को सर्वत्र फैलाया है। सेवा भाव के कारण महामहिम राष्ट्रपति ने इन्हें सम्मानित एवम् अलंकृत किया है।

गायत्री मिशन के प्रति इनमें गहरी निष्ठा एवम् आस्था है। इसी कारण इनका जीवन आद्योपान्त प्रखर एवम् ज्योतिर्मय रहा है। स्वाभिमान तथा स्वावलम्बन का इनका जीवन प्रशंसनीय है। ध्येय-निष्ठा, विनम्रता, सहृदयता, मिलनसारिता इत्यादि उच्च चारित्रिक-सात्विक गुणों से ओत-प्रोत इनका सेवा भावी जीवन निरन्तर प्रखर होता रहे, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

✦ *मनुष्य और कुछ नहीं, मात्र भटका हुआ देवता है।*

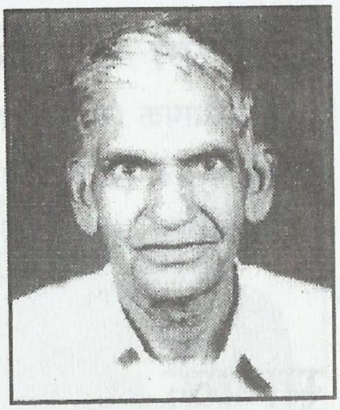

वैद्य ओमप्रकाश सारस्वत
चिकित्सा अधिकारी
(मामा जी–धीरवास (राजस्थान))

त्याग-सेवा में अग्रणी

सन्त स्वभाव के डॉक्टर सारस्वत की चिकित्सक के रूप में प्रथम नियुक्ति गांव परलीका नोहर (हनुमानगढ़) में हुई। वहां इन्होंने दीन-दुखियों की सेवा करके बड़ा मान-यश कमाया। इनका यश सुनकर ग्राम शेरड़ा के उद्योगपति श्री लालमन जी आर्य ने इनका स्थानान्तरण परलीका से शेरड़ा करवा दिया। इन्होंने शेरड़ा में भी रोगियों की सेवा कर मान-यश प्राप्त किया। यहां आप लम्बे समय तक रहे। जेठ की तपती गर्मी और माघ की कम्पकपाती सर्दी की परवाह न करते हुए रोगियों की पूर्ण मनोयोग से सेवा की। इसी कार्यकाल में इन्होंने अपने पिता जी को पूर्ण विश्राम देकर अपने छोटे भाई-बहनों को उच्च शिक्षा दिलवाई तथा उनका विवाह किया।

गांव वालों के न चाहते हुए भी घरेलू कारणों से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर सन् १६६२ से अपना स्वतन्त्र अस्पताल हिसार में चला रहे हैं तथा अपने स्वभाव अनुसार रोगियों और निराश्रितों की सेवा कर रहे हैं। यहां भी साहित्य और समाज की सेवा में लीन हैं।

मैं डा० सारस्वत की शतायु की मंगलकामना करता हूँ ताकि समाज की अधिक से अधिक सेवा कर सकें।

✦ *करो नहीं ऐसा व्यवहार, जो न स्वयं को हो स्वीकार।*

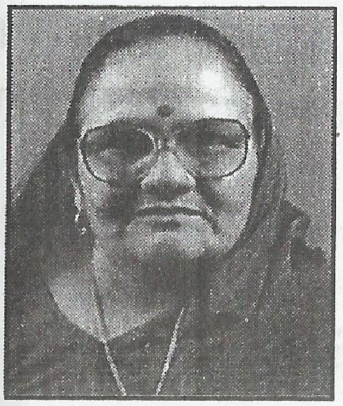

परमेश्वरी शर्मा
(पत्नी)

कभी शहद से प्यारे, कभी नीम से खारे

डॉ० लक्ष्मी नारायाण सारस्वत जैसे सुयोग्य एवं श्रेष्ठ व्यक्ति की धर्मपत्नी होने का गर्व मुझे मिला है। हमारी शादी के बाद कुछ व्यक्ति यह कहते थे कि इनका जीवन में तालमेल कम रहेगा, क्योंकि मेरी शिक्षा कम थी। परन्तु मैने सदैव इन पक्तियों को अपनाया :-

''गृहस्थ एक तपोवन है, इसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।''

उपरोक्त आदर्श वाक्य को मैं सदैव घ्यान में रखती थी। हमारा गृहस्थ जीवन बहुत आनन्दमय व्यतीत हुआ। मेरे पति ने अपने माता-पिता की सदैव ही सेवा की। अपनी बुद्धि के अनुसार परिवार को आगे बढ़ाने में हर तरह से सहयोग किया।

सेवा भावना इनके रोम-रोम में समाई हुई है। बहुत ही कृपालु एवं दयालु हैं। रोगियों की सेवा ही भगवान की असली पूजा - सेवा मानते हैं। एक बार भंयकर महामारी इलाके में फैली, तो चार दिन-रात तक एक मिनट भी नहीं सोए। ऐसी अद्‌भुत कार्य-दक्षता एवं निष्ठा भगवान ने इनको दी है। इन्होंने ग़रीबों से कभी पैसा नहीं लिया, बल्कि असहाय रोगियों का जेब से पैसा देकर इलाज करते हुए मैंने देखा है।

पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा के आदर्शो को मानते हुए सबसे बड़े होने के नाते सभी भाइयों व बच्चों की शादी साधारण रूप से बिना दहेज के करवाई व सभी को अच्छी शिक्षा भी दिलवाई।

इनकी षष्टिपूर्ति पर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि ये स्वस्थ रहें और दीर्घायु हों।

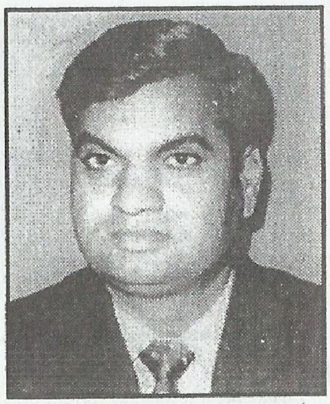

देवेन्द्र सारस्वत
(भाई–हिसार)

मेरे अग्रज–मेरे प्रेरणा स्त्रोत

अपने बड़े भ्राता डा० लक्ष्मीनारायण जी के विषय में कुछ लिखना मानो सागर को गागर में समेटने जैसा होगा। हिसार ज़िले के छोटे से गांव सिवानी से संघर्ष करते हुए वे सरदार शहर (राजस्थान) से एक सफल चिकित्सक बन गए। अपने नाम के अनुरूप ही उनके ऊपर 'लक्ष्मी' तथा 'नारायण' दोनों की ही अनुकंपा रही है। हम चारों भाइयों, एक बहन में वे सबसे बड़े हैं। वहीं अपने कर्त्तव्य-पालन में भी बड़े रहे हैं। पिताजी अक्सर खाँसी-दमा से पीड़ित रहने के कारण आराम ही करते थे। भाईजी ने पिता के भार को अल्पायु में ही अपने कंधों पर उठा लिया था। हम तीनों भाइयों को पढ़ा-लिखाकर आपने उच्च पदों तक पहुँचा दिया। मुझे याद है हरियाणा की सीमा से सटा शेरड़ा गांव में जब आप नियुक्त थे, वहाँ से हर हफ़्ते हिसार आकर माता-पिता तथा परिजनों को संभालते थे तथा देर रात्रि तक माताजी के चरण दबाते रहते थे। इन्हीं पारिवारिक दायित्वों के बीच वे सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहे तथा धार्मिक गोष्ठियों तथा विद्यालयों में उद्‌बोधन से वे ज्ञान के प्रकाश को फैलाते रहे।

भाई जी प्रारम्भ से ही गायत्री परिवार के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा, आचार्य, मथुरा और उसके बाद शान्तिकुञ्ज हरिद्वार, से बड़े प्रभावित हैं तथा जुड़े रहे हैं।

''औरों के हित जो जीता हैं, औरों के हित जो मरता है,
उसका हर आँसू रामायण प्रत्येक कर्म ही गीता है।''

इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए वे शेरड़ा गांव में निर्धनों तथा दलितों की दिन-रात सेवा कर ग्रामीणों के मसीहा के रूप में उभरे। उनकी

आरम्भ से ही हार्दिक अभिलाषा रही थी कि दहेज-प्रथा का विरोधी बनकर मैं आदर्श-विवाह करूं। मैंने भी उनकी भावनाओं का पूरा सम्मान करते हुए आदर्श-विवाह हरिद्वार से ही करने की स्वीकृति दे दी। विवाह करने के बाद माँ गायत्री की कृपा तथा पूजनीय भाई ज़ी के आशीर्वाद से हम दम्पति ने भी बड़ा आदर्श जीवन जिया।

अनेक सामाजिक कार्यों को पूर्णता दिलाने के कारण माननीय राष्ट्रपति द्वारा आपको साहित्य अकादमी सम्मान से नवाज़ा गया।

वृक्षारोपण करना, स्वयं ही घर गमलों का रखरखाव करना, मित्रों तथा संबंधियों को पौधे तथा गमले भेंट करना आपका शौक़ रहा है। सुबह ४ बजे से रात्रि ११ बजे तक उनकी संघर्षी दिनचर्या, साधारण जनमानस को तो सोचने पर विवश कर देती है। वास्तविकता तो यह है कि मैंने तथा मेरी धर्मपत्नी ने संघर्षों से जूझना उन्हीं के जीवन से सीखा। बड़े भाई के साथ-साथ वे हमारे गुरु भी रहे हैं। उन्हीं से प्रेरणा लेकर मैंने सन् १६६४ में सरकारी नौकरी से अवकाश लेकर (बिना वेतन के) तीन वर्ष कुरुक्षेत्र बैचलर ऑफ़ इंजीनियरिंग (बी० ई०) का अध्ययन किया। उस समय बेटा-बेटी पाँचवी तथा आठवीं में पढ़ रहे थे तो धर्मपत्नी एम० ए० (हिन्दी) के साथ-२ एक निजी विद्यालय में अध्यापन-कार्य कर रहीं थीं। इसी बीच माताजी का एक दुर्घटना में देहांत हो गया। मैं, पत्नी और बच्चे भी एक दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गए। इन मानसिक और आर्थिक कठिनाई के दिनों में भी, वे ही हमारे संबल बने रहे।

जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है-*''मुखिया मुख सों चाहिए, खान-पान में एक''* ऐसे ही मुखिया बनकर भाई जी ने भी अपने तीनों भाइयों पर अपना समान स्नेह बरसाया। राम जैसे आदर्श भाई के सघन-स्नेह संबंध को मैं ईश्वर का दिया अमूल्य उपहार तथा अपना परम सौभाग्य मानता हूँ। मैं उनकी षष्टिपूर्ति समारोह पर मंगलकामना और माँ गायत्री से प्रार्थना करता हूँ कि भाईजी शतायु हों। पूर्ण शक्ति- सम्पन्न और स्वस्थ रहकर समाज, साहित्य और मानवता की सेवा करते रहें। हमारे भाईजी तो समकालीन और आगत पीढ़ी के प्रेरणा-स्रोत हैं।

आभा शर्मा
एम. ए.
अध्यापिका, न्यू यशोदा स्कूल
(अनुजवधू–हिसार)

एक शुभचिंतक

"बादल कहाँ से उठा ? किस रास्ते से आया ? बरखा की बूँदें कहती हैं, तुम्हें इससे क्या ? तुम अपने खेत की सिंचाई कर लो, सूखी खेतियाँ हरी-भरी बना लो, रीते तालाब भर लो।"

यह उत्तर कितना निःस्वार्थपूर्ण और सही है। इन्हीं बादलों की श्रेणी में अगर मैं अपने जेठजी को भी रखूँ तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वे निःस्वार्थ सेवा के लिए यश और धन को ठुकराते हैं फिर भी धन और यश उनका दामन नहीं छोड़ते। उनका सिद्धान्त है - *'नेकी कर कुएँ में डाल'*। वे सामाजिक बुराइयों के विरोधी तथा नैतिक मूल्यों के समर्थक रहे हैं। दहेज प्रथा जैसी बुराई को आपने कोरे नारों से ही नहीं अपितु अपने घर से ही उखाड़ फेंकने का शुभ-संकल्प लिया। उन्होंने हमारा आदर्श-विवाह गायत्री परिवार के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के सान्निध्य में शन्तिकुञ्ज हरिद्वार में कराया। उसके बाद अपने पुत्र विजय सारस्वत का विवाह भी उसी सादगी से किया। आपने अपने परिवार से ही पर्दा-प्रथा जैसी कुरीतियों का विरोध कर स्त्री-शिक्षा तथा उनके उत्थान पर बल दिया। आप अपने निवास स्थान पर समय-समय पर अनेक काव्य गोष्ठियों का आयोजन कराकर कवियों तथा साहित्यकारों को सम्मानित करते रहते हैं। निर्धनों तथा दलितों की निःशुल्क सेवा सहायता करना मेरे जेठजी को असीम संतोष प्रदान करता है।

विवाह के पश्चात मैंने इण्टरमीडिएट से आगे की पढ़ाई अपने जेठजी के प्रोत्साहन से ही पूरी की है। उनके द्वारा बढ़ाए हौसले से ही आज मैं प्रभाकर, साहित्यरत्न तथा एम० ए० (हिन्दी) पास कर हिसार के एक

प्रतिष्ठित विद्यालय में हिन्दी शिक्षिका के पद पर हूँ। जब भी मेरी कोई रचना पत्र-पत्रिका में प्रकाशित होती है तो सबसे पहले बधाई उन्हीं की ओर से ही आती है। हर परिजन का जन्मदिवस हो या विवाह की वर्षगाँठ, वे अवश्य याद रखते हैं और हवन-पूजा तथा आशीष-वर्षा करने पहुँच जाते हैं। मुझे याद है जब २७ मई को मेरा ३२ वाँ जन्मदिन था, उसी दिन जेठजी को एक कार्यकर्ता गोष्ठी में शान्तिकुञ्ज जाना था। २७ मई को सुबह ५ बजे वे मुझे १०१ रु० तथा मिठाई का डिब्बा देकर ही शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार गए। उनके इतने संवेदनशील हृदय को देखकर मैं तो अवाक् रह गई। शुभकामना देने में ऐसी तत्परता तो मेरे जन्मदाताओं ने भी न दिखाई थी। किसी की भावनाओं का सम्मान करना तो जैसे कोई उनसे सीखे।

अनुज-वधु के नाते जेठजी के षष्टिपूर्ति समारोह के उपलक्ष्य में प्रकाशित इस पुस्तिका के लिए मुझे अपने भावों को प्रकट करने का सौभाग्य मिला। इसके लिए मैं आयोजन समिति का आभार व्यक्त करती हूँ। मेरी माँ गायत्री से प्रार्थना है कि मेरे जेठजी, जेठानी जी स्वस्थ-सुदीर्घ जीवन जिएँ ताकि वे समाज की और अधिक सेवा कर सकें। हम परिजनों को माताजी-पिताजी की रिक्तता के बाद उनकी स्नेहपूर्ण छत्र-छाया मिलती रहे।

अन्त में भाई जी जैसे श्रेष्ठ मानव को इन काव्यमयी पंक्तियों के माध्यम से नमन करती हूँ :

मुश्किल में जब हम घिर जाते,
उलझन का कोई छोर न पाते।
तब पहुँचें ''शान्ति कुञ्ज'' तुम्हारे,
देते अनमोल शिक्षा बिन दाम।
भाई जी आपको करें प्रणाम।।

''षष्टिपूर्ति'' पर यही है इच्छा,
ईश्वर करे आपकी रक्षा,
वात्सल्य बरसे सुबह-शाम,
भाई जी आपको करें प्रणाम।।

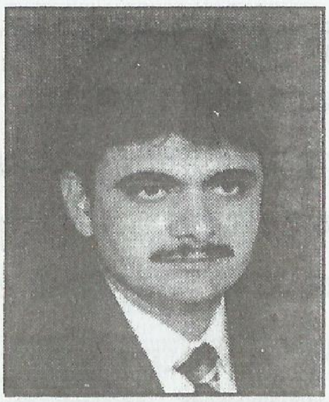

डा० विजय सारस्वत
(सुपुत्र–हिसार)

मेरे पथप्रदर्शक एवं सर्वगुण सम्पन्न–पिताजी

मेरे दादा जी के अन्दर देशप्रेम व देश की सेवा करने की भावना थी, इसी वजह से वे सेना में कार्यरत थे। दादी जी घरेलु महिला थीं, लेकिन दोनों मेहनती थे। इनकी मेहनत का ही परिणाम है कि मेरे पिता जी एक सफल चिकित्सक तथा सुसंस्कारी बने। ये एक कर्त्तव्यपरायण पुरुष हैं। इन्होंने अपने माता-पिता की सेवा श्रवण कुमार की तरह की, तथा अपने छोटे भाई बहनों के लिए अपना फ़र्ज़ बड़े भाई राम की तरह निभाया। मेरे पिता जी इतने व्यवहार-कुशल हैं कि कोई इनसे एक बार मिलले तो इनकी प्रशंसा करते नहीं थकता है। मेरे पिता जी उस दीपक के समान हैं जो जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। इन्होंने हम सभी के जीवन को प्रकाशमय बनाया है। ऐसे पिता जी के चरणों में शत्-शत् नमन करता हूँ। हर जन्म में इन्हीं का पुत्र बनूँ, ऐसी भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

पूज्य पिता जी की अनुपम वत्सलता का मैं भाजन हूँ।
हैं अनेक त्रुटियाँ मुझमें, फिर भी कृपापात्र-जन हूँ।।
पदे-पदे शिक्षा देने की, इनकी अभिलाषा रहती।
पर मैं अल्हड़पन दिखलाता, ऐसा अज्ञ अकिञ्चन हूँ।।

इनकी पावन षष्टिपूर्ति है, यह मुझको वरदान बनी।
इनके गुण-गौरव दर्शन की, इच्छा मुझको बहुत बनी।।
पूज्य पिता जी शत्-शत् मधुमासों को देखें हर्षाएं।
इनका ज्योतित जीवन शत्-शत् शरच्चन्द्रिका छिटकाए।।

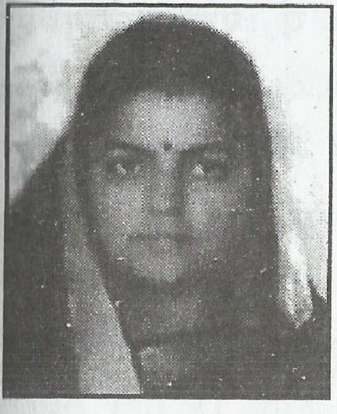

डॉ० सुनीता सारस्वत
(पुत्रवधू – हिसार)

प्यार और सुधार के प्रतीक

जब से मैं इस घर में पुत्रवधू (लगभग छः वर्ष से) के रूप में आई हूँ, मुझे अपने पिता तुल्य ससुर डा० सारस्वत जी से व माता-तुल्य सास से भरपूर प्यार मिला है। वस्तुतः ये प्यार के सागर हैं। हम सभी को प्यार करते हैं और जब कभी डांटतें हैं तो उसमें भी प्यार और सुधार का पुट होता है। इनके प्यार और दुलार के कारण मैं अपनी ससुराल में पूरी तरह से रच-बस गई हूँ। इनके बारे में कुछ कहना शायद सूरज को दीपक दिखाने के बराबर होगा।

ये एक आदर्श चिकित्सक के साथ-साथ धार्मिक व्यक्ति हैं। समय-समय पर गायत्री यज्ञ के माध्यम से हमें जीवन जीने की कला सिखाते रहते हैं। प्ररेणादायक भजनों से सद्गृहस्थ बनने की शिक्षा भी देते रहते हैं। इन्होंने अपने परिवार को योग्य बनाने में सारा जीवन लगा दिया। इनके क़रीब रहने से मैं जान गई हूँ कि ये सहनशील, मधुरभाषी और स्नेह के सागर हैं। इन्हें अपने सुखों से ज़्यादा दूसरों के दुःखों की चिन्ता रहती है। अपनी नेक कमाई से समय-समय पर कई संस्थाओं को दान भी देते रहते हैं। मितव्ययता और सदाचार के कारण इनका जीवन आदर्श रहा है। इनका व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्ररेणा का स्त्रोत है और हम सभी परिवार के सदस्य आज इस षष्टिपूर्ति समारोह पर इनके पद-चिह्नों पर चलने की क़सम खाते हैं और प्रभु से इनकी दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं। हमें भी इनका प्यार व आशीर्वाद हमेशा मिलता रहे।

पं. राम नरेश शर्मा
ज्योतिष मार्तण्ड, आयुर्वेद रत्न, रतनगढ़

धर्मपरायण : डॉ. लक्ष्मीनारायण सारस्वत

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' के सद्वाक्य को चरितार्थ करते हुए डॉ. सारस्वत ने पूर्व कर्मक्षेत्र शेरड़ा का तो सचमुच ही कायाकल्प कर दिया। प्रथम श्रेणी के इस आर्युवेदिक चिकित्सालय में कार्यरत रहकर पूरे ग्राम की सेवा की। चौबीस घंटों की यह सेवा घर से दूर रहकर भी पूरी तत्परता से की। इस ग्राम में विभूतियों को प्रेरित कर वहाँ माध्यमिक विद्यालय, सरोवर, कन्या पाठशाला, धर्मशाला, औषधालय आदि बनाने में अपूर्व सहयोग दिया। अपना अमूल्य समय देकर इस गाँव को मानो स्वर्ग ही बना दिया।

इनके व्यक्तित्व में मिलनसारिता एवम् नैतिक उत्कृष्टता का एक अद्‌भुत समन्वय देखने का मिलता है, क्योंकि सबके सुख-दुःख की बात सुनते हैं, इसलिए सबके दिलों में समाए हुए हैं। क्षेत्रीय जनता में भी इनकी लोकप्रियता अद्वितीय है।

इन्हें समाज से बहुत प्रेम है। ग़रीबों को पहले सम्भालते हैं। निःशुल्क महँगी-महँगी दवाइयाँ उन्हें दे देते हैं। स्कूलों में तो होनहार बच्चों को पुरस्कार देकर उनको प्रोत्साहित करते रहते हैं। संस्कारों से और विचारों से उन्हें ऊपर उठाने का प्रयास करते हैं।

परिवार में हर जन के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभाते हैं। दूर-नज़दीक के सभी सगे-सम्बन्धियों को जैसा बन पड़े सहयोग एवं सहायता करते हैं। उन्हें अपने से ऊँचा देखना चाहते हैं।

इनमें ग़ज़ब की दूरदर्शिता है। समयानुसार आगे की सोचकर कार्य करते हैं, जिससे जीवन आनन्दमय हो और सुगमता से उन्नति के

पथ पर बढ़ता चला जाए। हर किसी को राय भी सूझबूझ वाली देते हैं। इसी वजह से हर कोई इनकी राय लेना चाहता है। घर के लोग, सम्बन्धी तथा मित्र भी इनकी कुशाग्र बुद्धि की दाद देते हैं।

ईश्वर में इनकी गहरी आस्था है। प्रतिदिन प्रातः ब्रह्म-वेला में उठकर भगवान को याद करते हैं। फिर पेड़-पौधों को समय देते हैं, संभालते हैं, संवारते हैं, दुलारते हैं। गायत्री मन्त्र का जाप तो ये अहर्निष जपते रहते हैं। अपनी सन्तान को भी इन्होंने ईश्वर से प्रगाढ़ प्रेम करना सिखाया है। वे सब बचपन से ही गायत्री परिवार की विचारधारा से ओत-प्रोत हैं।

ऐसे प्रेरणादायक व्यक्तित्व से सबको प्रेरणा लेनी चाहिए। भगवान इनके जीवन को सुखमय बनाए तथा हर वर्ष इनका जन्म-महोत्सव मनता रहे। ईश्वर इन्हें शतायु प्रदान करे।

✦ हँसेंगे तो सफल समझे जाएंगे और लोगों का सम्मान पाएंगे। रोएंगे तो साथ देने वाले बिरले ही होंगे।

— आचार्य श्रीराम शर्मा

डा० विवेक शर्मा
एम. बी. बी. एस. एम. एस.
(भतीजा – दिल्ली)

समाज के सच्चे हितैषी

मेरे ताऊजी डा० लक्ष्मीनारायण 'सारस्वत' की षष्टिपूर्ति पर इनका अभिनन्दन शहर के प्रबुद्धजन कर रहे हैं, यह जानकर बहुत ही खुशी हो रही है।

डा० सारस्वत ने अपनी योग्यता एवं कार्यकुशलता से समाज में बहुत नाम कमाया है। जो भी इनसे एक बार मिल लेता है वह सदा के लिए इनका हो जाता है। इनकी वाणी में बहुत मिठास है। अतः कवि ने लिखा है कि :-

वाणी ऐसी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरों को शीतल करे, आप भी शीतल होय।।

मेरे पापा कहते हैं कि तेरे ताऊ जी बहुत नेक इन्सान हैं। मुझे एम.बी.बी.एस. की शिक्षा दिलवाई, व समस्त परिवार को शिक्षा दिलवाकर बहुत आगे ले गये। मुझे भी बचपन में बहुत अच्छी-अच्छी शिक्षाप्रद बातें बताया करते थे। इनकी प्रेरणा से ही मैंने भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर ली है। हम सभी इनके दीर्घायु की मंगलकामना करते हैं।

✦ *करते वही राष्ट्र उत्थान, जिनको है चरित्र का ध्यान।*

वन्दना सारस्वत एल. एल. बी.

(भान्जी – सीकर)

नई पीढ़ी के आदर्श

सभी परिवारजनों की तरफ़ से समाजोत्सर्ग जीवन व्यतीत करते हुए ६० वर्ष पूर्ण करने पर बहुत-बहुत बधाई।

आपका कृतित्व एवं व्यक्तित्व हम आने वाली पीढ़ी के लिए एक प्ररेणा-स्रोत के रूप में है। आपने अपने जीवन को जिन उच्च आदर्शों एवं नैतिकता में पिरोया है, वह हमारे लिए एक मिसाल है।

परिवार में आपका ह्दय बड़ों के प्रति सम्मान व छोटों के प्रति स्नेह से परिपूर्ण रहा है और आपने समाज में चिकित्सा के क्षेत्र में योदान देते हुए हर रोगी को एक नया जीवनदान दिया है, जिससे आपके प्रति हमारा मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। आप तन-मन से मानव सेवा के प्रति समर्पित प्रेरक व्यक्तित्व हैं।

आपने अपने जीवन में जिस प्रकार अनेक बाधाओं को अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से पार करके एक संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत किया है और कर्म की महत्ता पर बल देते हुए दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाया है, ऐसे व्यक्तित्व के चरणों में मेरा सादर नमन।

मामाश्री की दीर्घायु की कामना करते हुए ६० वर्ष पूर्ण करने पर सादर चरण स्पर्श।

✦ *जिसने बेच दिया ईमान, करो नहीं उसका गुणगान।*

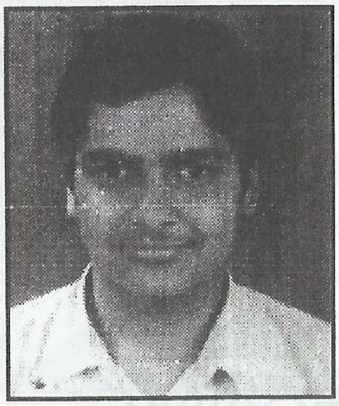

सर्वेश सारस्वत
(दौहित्र – रतनगढ़)

मेरे नाना जी– 'आदर्श पुरुष'

सर्वप्रथम आदरणीय नाना जी को साठ वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर हार्दिक बधाई एवं शांति व उन्नतिपूर्ण उज्ज्वल भविष्य की कामना।

इस संसार में भगवान सभी को जन्म देता है, परन्तु कुछ जीवों को ऐसी अनूठी प्रतिभा देकर भेजता है, जिससे वे समस्त मानव जाति के लिए आदर्श पुरुष बनकर मार्गदर्शन करते हैं। ऐसे ही एक आदर्श पुरुष हैं, मेरे 'नाना जी' डा० लक्ष्मीनारायण सारस्वत। इनमें वे सभी गुण विद्यमान हैं जिससे इन्हे आदर्श कह सकते हैं। इनका जीवन समस्त मानव जाति के लिए प्रेरणादायक हैं।

वे परिजनों में अत्यधिक प्रिय हैं। इसका कारण यह है कि वे सदा से ही वृद्धों के प्रति सेवाभाव व आदरभाव रखते हैं। अपने मधुर व्यवहार के कारण वे अपने सभी साथियों में सर्वप्रिय व सर्वोपरि हैं और बच्चों से तो इनका अत्यधिक लगाव है। इनका हमारे प्रति सदा से ही विशेष प्रेम रहा हैं, जिसके कारण इनका सान्निध्य हमें बहुत पसंद हैं। इनके सान्निध्य से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला, जैसे सर्वप्रथम सुबह ब्रहममुहूर्त में उठना, भगवान की पूजा, विद्या अध्ययन आदि अनेक बातें इन्होंने हमें अपने सान्निध्य में सिखाई।

अध्ययन के क्षेत्र में आप स्वयं सदा अग्रणी रहे और हमें भी शिक्षा के प्रति उत्साहित व मार्गदर्शित करते हैं। नौजवानों के लिए इनका जीवन आदर्श हैं क्योंकि आप अपने जीवन में बहुत सी चुनौतियों का सामना करते हुए आज उस मुक़ाम पर पहुँचें हैं जिससे मानव जाति इन पर गर्व कर सके। एक साधारण परिवार में जन्मे और बहुत छोटी उम्र में अपनी शिक्षा-दीक्षा पूर्ण कर अपने परिवार की ज़िम्मेवारियां संभाली तथा अपनी समस्त इच्छाओं, कामनाओं, आवश्यकताओं की परवाह न

करते हुए उनका त्याग कर आपने भाइयों को सशक्त बनाया। जीवन में आई समस्त समस्याओं को चीरते हुए अपने सभी कर्त्तव्यों को कुशलतापूर्वक निभाया। अतः इनके लिए कहा जा सकता है कि :-

लक्ष्य प्रेरित बाण हैं ये, ठहरने का काम कैसा?
लक्ष्य तक पहुँचें बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा?

न केवल अपने परिवार के लिए वरन् राष्ट्र व समाज के प्रति भी निरंतर अपना योगदान देते रहतें हैं। अनेक संस्थाओं तथा स्कूलों में यदा कदा अपना अमूल्य समय देते रहते हैं। अनेक सांस्कृतिक, साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करवाते रहते हैं।

परोपकारी भावना होने के कारण सदा से ही लोगों की सेवा करते है और अपने जीवन का अधिकतम समय परोपकार में ही समर्पित करते हैं। डॉक्टर होने के कारण इनकी परोपकार की प्रवृति और अधिक प्रबल हुई। दीनों, ग़रीबों को निःशुल्क चिकित्सा देते है। चिकित्सा क्षेत्र में भी इन्होंने अपना सिक्का सभी अन्य चिकित्सकों में जमा लिया है। इसी क्षेत्र में इनकी 'अमेरिकन अवार्ड' से अलंकृत किया गया है। इनकी प्रसिद्धि इनकी श्रमशील प्रवृति के कारण है

तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पानि
कहि रहीम पर काज हित, संपत्ति संचहिं सुजान।।

ऐसे परोपकारी, दानी क्षमाशील, सहिष्णु, उदार होने के कारण इन्हे 'हरफ़नमौला' कहना अतिश्योकित न होगी। इनके उक्त सभी गुण संस्कार, शिक्षा, सिद्धांत अपनाकर तथा इनका मार्गदर्शन पाकर, इनके पदचिह्नों पर चलकर अपना जीवन उज्ज्वल बना सकते हैं।

इतने गुणों के धनी हरफ़नमौला मेरे नाना जी हैं। यह बात हमेशा मुझे गौरवान्वित और साथ ही प्रोत्साहित करती है कि मैं भी इनके पदचिह्नों पर चलकर इनके आशीर्वाद से अपने परिवार का नाम रोशन करूं। अतः इनके गुणी, संस्कारी, नियमित, सैद्धांतिक महापुरुष पर मुझे ही नहीं वरन् संपूर्ण मानवजाति को गर्व है।

–इसी के साथ इनके शतायु, दीर्घायु, स्वस्थ शरीर व शान्तिपूर्ण जीवन की कामना करता हूँ।

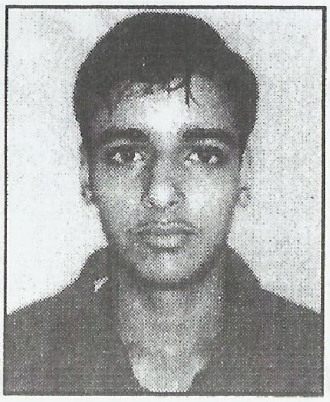

प्रणव शर्मा
(दौहित्र – रतनगढ़)

दया-करुणा के सागर-मेरे नाना जी

सर्वप्रथम मैं अपने परम श्रद्धेय नाना जी को उनके साठ वर्ष पूरे करने पर सहर्ष बधाई देता हूँ। इसके साथ ही मैं उनके लम्बे जीवन तथा इनकी प्रतिष्ठा इसी तरह बनी रहे, इसकी कामना करता हूँ।

''परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीड़नम्'' की धारणा के साथ अपने जीवन के साठ वर्षों को अनन्त ऊँचाइयों के साथ सभी बाधाओं से संघर्ष करते हुए पूरे किए। इन्होंने एक साधारण परिवार में जन्म लिया जो पूर्ण समृद्ध नहीं था। परन्तु बड़े ही श्रम के साथ इन्होंने अपने ये कष्टमय क्षण व्यतीत किए। इन्होंने अकेले ही अपने परिवार को सम्भाला तथा अपने छोटे भाइयों को कुछ न कुछ बना ही दिया तथा इस बात को झुठला दिया कि *''अकेला चना भट्टी में नहीं सिक सकता''* अर्थात अकेला व्यक्ति शक्ति-हीन होता है। अपने गांव शेरड़ा से प्रतिष्ठित होकर ये हिसार जैसे बड़े शहर में भी प्रतिष्ठित हो गए।

परोपकारी, यशवान तथा क्षमावान डा० लक्ष्मी नारायाण सारस्वत गायत्री परिवार के भी भाग हैं। *''परोपकारार्थमिदम् शरीरम्''* अर्थात यह शरीर परोपकार के लिए ही है यह मानते हुए इन्होंने हमेशा सभी का उपकार किया है।

संकट में धैर्य रखना, उन्नति होने पर क्षमा भाव, सभा में वाणी का चातुर्य, युद्ध में पराक्रम, यश की प्राप्ति में लालसा रखना तथा वेदाभ्यास में रुचि, यह गुण महात्माओं में होते हैं तथा यह सभी गुण परम श्रद्धेय 'साहित्य कला संगम' के अध्यक्ष डा० लक्ष्मी नारायण सारस्वत में प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं।

इनके जीवन की ऊँचाइयाँ देखने से हमें भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। इन्होंने सदा हमें परामर्शों से बहुत कुछ सिखाया है। इन्होंने हमेशा विद्या को महत्व दिया और जब जब हम विद्या अध्ययन में पिछड़ते तब तब इन्होंने हमें विद्या का महत्व बताया। मैंने कक्षा आठ में कम अंक प्राप्त किए तब नाना जी ने मुझे विद्या का महत्व बताकर मेरे दिमाग़ में यह बैठा दिया कि विद्या के बिना कुछ नहीं है और मैंने उनकी प्रेरणा के बाद कभी ८५ प्रतिशत अंक से कम अंक प्राप्त नहीं किए।

जब हम ग्रीष्मावकाश में इनके पास जाते हैं तो हमें इनकी दैनिक दिनचर्या देखने को मिलती है। कल जल्दी उठकर - *''उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है''* के गुंजार से पूरे घर को गुंजाएमान रखते हैं। हमें यह भी बताया कि प्रत्येक रात को एक मृत्यु है तथा प्रत्येक सुबह एक नया जीवन शुरू होता है जिसके कारण हम नई ताज़गी से प्रत्येक कार्य पूर्ण लगन से करते हैं।

अन्त में मैं इनकी लम्बी उम्र की कामना के साथ ही यह प्रार्थना भी करता हूँ कि इनकी प्रसिद्धि समस्त विश्व में फैले।

✦ गायत्री वेदों की जननी है, गायत्री पापों का नाश करने वाली है।

आचार्य श्रीराम शर्मा

Saurabh Sharma
(Nephew - Hisar)

My Tau ji - A dedicated personality

It is really a source of joy for all of us that a book - **'MANGAL-KALASH'** is being published by 'A bhinandan Samiti' on the occasion of 60th birthday of my TauJi- Dr.Luxmi Narayan Saraswat. Certainly, we will get inspiration from this book.

My Tau Ji is the dearest and nearest to me in the world. He is a dedicated doctor and a Karam Yogi. In our family, he is the first to get up in the morning and the last to go to bed at night. He provids free medicine to the poor and needy pepole. He has a lot of patience and never angry with anybody.

He is a pillar of the society. He always thinks for the welfare of the downtrodden people. He is broad minided and cares for whole family.

He is a very talented man. He always follows the path of truth. He has suffered a lot bu never compromised with his principles. He believes in simple living and high thinking.

I pray for Tauji's good health and a long life.

✦ *अब तक का इतिहास बताता, मानव है निज भाग्य विधाता।*

5

कविताञ्जलि

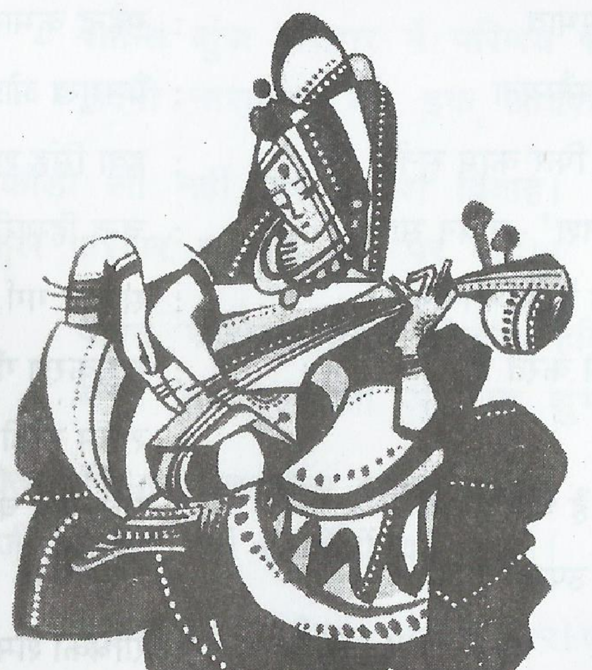

विषय सूची

1	सचमुच धन्य हिसार	:	डॉ० सारस्वत मोहन मनीषी	173
2	सारस्वत-स्तवन	:	डॉ० विद्यासागर शर्मा	175
3	मंगल-कलश	:	रघुनाथ प्रियदर्शी	176
4	सबको दें सम्मान	:	सतीश कौशिक	177
5	एक परिचय	:	डॉ० वन्दना पाण्डेय	178
6	विरला ही कर पाता है	:	भीष्म पितामह	179
7	श्रेष्ठ मानव	:	चन्दनबाला जैन	180
8	अपर्याप्त 'एक मंगल कलश'	:	राजेन्द्र शर्मा 'विकल'	181
9	सारी दुनिया कहती है	:	नन्द किशोर शर्मा	182
10	आरोग्य अवदानी हे!	:	सुशील बुड़ाकोटी शैलाचंली	183
11	रखते हैं समभाव	:	महेन्द्र कुमार जैन	184
12	चन्द्रमा सी सौम्यता	:	प्रेमसुख ओझा	185
13	खूब किया फिर काम सुनो	:	हवा सिंह शर्मा	186
14	'मंगल कलश' -पावन साजे	:	चन्द्र हिसारी	187
15	उनका होता है अभिनन्दन	:	सन्तोष गर्ग	188
16	प्रेम सभी से करते हैं	:	शुभकरण गौड़	189
17	समर्पित	:	श्याम स्नेही गौड	190
18	धन्य-धन्य है भाग हमारे	:	राधेश्याम चतुर्वेदी	191
19	हर तन का उपचार किया	:	शिप्रा शर्मा	192
20	बहुत बधाई	:	राधिका शर्मा	193
21	चाहते हैं तुमको हम सारे	:	भव्य जोशी	193
22	यही दुआ इस दिल की है	:	निखिल राजोरिया	194
23	You love us very much	:	Sahil Rajoria	194

डॉ॰ सारस्वत मोहन मनीषी
वरिष्ठ कवि, वरिष्ठ रीडर
रामलाल आनंद कॉलेज (सांध्य), दिल्ली।

सचमुच धन्य हिसार

सरस्वती सुत 'लक्ष्मी नारायण' शुभ नाम।
सारस्वत 'मंगल-कलश' पौष-माघ के धाम।।

अनथक सेवा-भाव से जुटे रहें दिन-रात।
सारस्वत की बात में हैं सौ-सौ जलजात।।

तन कैरट चौबीस का मन हीरक की आभ।
शब्द-शब्द समिधा सरिस ज्वलित ज्येष्ठ में डाभ।।

शान्ति कुंज हरिद्वार में परिणय रच देवेन्द्र।
लक्ष्मी नारायण, बने इक आदर्श नरेन्द्र।।

कानी कौड़ी ली नहीं रच आदर्श विवाह।
बाँधा कुल परिवार को हुई वाह पर वाह।।

पावन 'सारस्वत सदन' नित साहित्यिक कुंभ।
बनते आकर देवता अगणित शुंभ-निशुंभ।।

नशामुक्ति असिधार व्रत होना सतत सतेज।
खाला जी का घर नहीं है काँटों की सेज।।

मूलोच्छेद दहेज का वृक्षारोपण-चाह।
'सारस्वत' नित जूझकर रचते अपनी राह।।

मन 'शत सूत्री योजना' से पूरा अभिभूत।
छूता कभी न संत को अहंकार का भूत।।

सारस्वत चिन्तन-मनन शुभ आचार-विचार।
'लक्ष्मी नारायण' बसें सचमुच धन्य हिसार।।

ख़ुद गायत्री हो गये जप गायत्री मन्त्र।
'सारस्वत' के हाथ में सिद्धि-साधना-यन्त्र।।

प्यार भरी चितवन सजल मीठे-मीठे बोल।
मिलते हैं सबसे सदा 'सारस्वत' दिल खोल।।

स्वैच्छिक सेवा मुक्ति ले जुट समाज के कार्य।
सरकारी सेवक हुआ जन-मन का आचार्य।।

नैतिकता की राह पर उत्तमता के कार्य।
रहे शीर्ष पर ही सदा अनुपम भिषगाचार्य।।

दे निःशुल्क दवाइयाँ रच सेवा-सोपान।
अभिशापों को स्पर्श से बना दिया वरदान।।

तन देना मुश्किल बहुत मन देना आसान।
तन-मन-धन दे राष्ट्र को होता वही महान।।

भारतीयता के सजग प्रहरी तनकर आप।
बनकर सैनिक हर रहे पाप-ताप-अभिशाप।।

आडम्बर आता नहीं भाता राग न द्वेष।
इसीलिए तो आप पर प्रभु की कृपा विशेष।।

सारस्वत में सन्निहित संस्कृति का मधुमास।
एक साथ लो देख लो यमक-श्लेष-अनुप्रास।।

भाषा-भूषा वेदना चिन्तन-मनन स्वदेश।
'सारस्वत' कटिबद्ध हैं नित अर्जुन के वेश।।

साठा अब पाठा हुआ असिया रसिया होय।
'सारस्वत-शुभ कामना' सारस्वत हित जोय।।

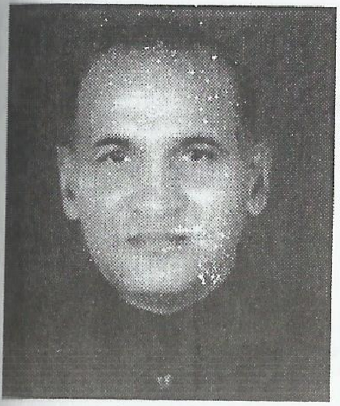

डॉ॰ विद्या सागर शर्मा
एम.ए., एल.एल.बी., पी.एच.डी.
श्री गंगानगर

सारस्वत-स्तवन

संस्कारशील परिवार रहा, मेधावी थे तुम छात्र बड़े।
नित परिश्रमी अध्यवसायी, जीवन के अनुभव रहे कड़े।।

बचपन से लेकर आज तलक, सम्मान मिले बहुआयामी।
प्लेयर वक्ता अरु प्रतियोगी, तुम समाजसेवी हो नामी।।

तुम राजवैद्य पीयूषपाणि, शास्त्रीय ज्ञान है अति गहरा।
कैम्पों शिविरों अधिवेशन में, सारस्वत तेरा ध्वज फहरा।

तुम ज़िला कलेक्टर, राज्यपाल, से हुए पुरस्कृत बार-बार।
तुम धर्मनिष्ठ अरु जनसेवी, लेखक कवि वर साहित्यकार।।

दलितोद्धारक निर्धनसेवी, युगनिर्माणक, गांधीवादी।
गायत्री-अनुष्ठान-प्रेरक, सादगीयुक्त, पहनी खादी।।

कितनी ही संस्थाएं पनपीं, सान्निध्य तुम्हारा पाकर के।
'डाबड़ा चौक' है तीर्थ बना, चमके हिसार में आकर के।।

'साहित्य कला संगम' प्रधान, वन्दन करते तुमको शत-शत।
है 'मंगल-कलश' तुम्हें अर्पित, लक्ष्मीनारायण सारस्वत।।

सद्‌गुणयुत जीवन श्रेष्ठ रहा, आयी अब शुभषष्टिपूर्ति।
ईश्वर से विनय-हों दीर्घायु, शाश्वत ऐसी ही हो स्फूर्ति।।

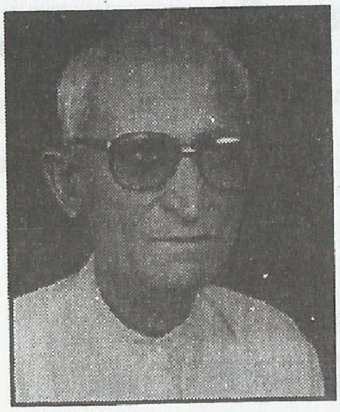

रघुनाथ 'प्रियदर्शी'
वरिष्ठ साहित्यकार– हिसार।

'मंगल-कलश'

लक्ष्मी नारयण सुधी, हरते सब का ताप।
निस-दिन सेवा-मंत्र का, करते रहते जाप।।
आयुर्वेद के सिंधु हैं, औषधि-गुण भरपूर।
कुशल चिकित्सक वैद्य ये, जनता में मशहूर।।

आयुर्वेदाचार्य की, उपाधि से भूषित।
जहाँ रहे सम्मान से, पुरस्कृत औ' पूजित।।
सद्गृहस्थी, कर्मठी, आदर्शों के पुंज।
अनुरागी साहित्य के, सदाचार के कुंज।।

जीवन-मूल्यों में रमे गायत्री के भक्त।
भारतीय सुसंस्कृति में, रहते हैं अनुरक्त।।
सीधे, सरल स्वभाव के, विनय, समर्पण भाव।
तन, मन, धन से खेलते, परोपकार का दाव।।

शीतल, निर्मल नीर-से, बाहर-भीतर एक।
त्याग भाव से है शुभी, जीवन इनका नेक।।
स्नेह, सरसता, शिष्टता, मृदुभाषी संवाद।
इनके मिश्रण से बने, सारस्वत दिलशाद।।

सद्भावी, निश्छल ह्रदय, मानवता के दूत।
'अजात शत्रु' सब के सखा, भारत माँ के पूत।।
स्वस्थ रहें दीर्घायु हों, सुख-समृद्धि के साथ।
सब की मंगल कामना, नाव प्रभु के हाथ।।

इनकी 'षष्टि पूर्ति' पर, अर्पित 'मंगल-कलश'।
'प्रियदर्शी' बन कर करें, सेवा ये शत वर्ष।।

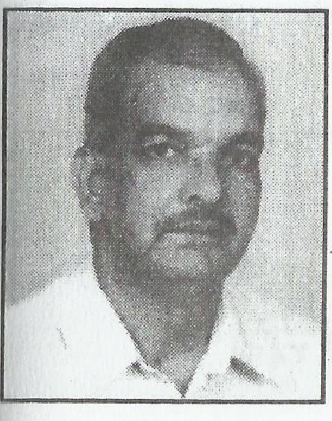

सतीश कौशिक

वरिष्ठ कवि, हिसार।

सबको दें सम्मान

अभिनन्दन के योग्य है, सारस्वत-परिवार।
''लक्ष्मी-नारायण'' मिले, जिसको कुल-उपहार।।
मूर्धन्य विद्वान थे, बन्सीधर-श्रीमान।
''लक्ष्मी नारायण'' उसी कुल की हैं सन्तान।।
पं० सीता राम जी, कर्मठ सैनिक-वीर।
''सारस्वत'' जी के पिता, हुए धीर-गम्भीर।।
मानव-सेवा-भाव से, लिया चिकित्सा-ज्ञान।
सेवा करें समाज की, पाते सुख-सम्मान।।
सब जन-हित की भावना, सब जन-सुख का ध्यान।
नित सबकी सेवा करें, सब को दें सम्मान।।
मन में मानव-प्रेम की बहती धार-अपार।
इनका श्रद्धा-केन्द्र है, गायत्री-परिवार।।
जीवन की कठिनाइयाँ, प्रभु के आशीर्वाद।
ग्रहण करें सम-भाव से, सारे हर्ष-विषाद।।
धर्म और साहित्य के, मन में सुन्दर भाव।
विद्वज्जन-हित मान का इनमें नहीं अभाव।।
अपनों की अनदेखियाँ, ग़ैरों के आघात।
सदा झेलते धैर्य से, अच्छी-औछी बात।।
भक्ति-भाव मन में लिये, श्री हरिपद आसीन।
मनसा-वाचा-कर्मणा, सदा धर्म में लीन।।
सत्संगत की सम्पदा, सेवा की जागीर।
कहें ''डॉक्टर'' आपको या फिर सन्त-फ़कीर।।

डॉ. वन्दना पाण्डेय
वरिष्ठ प्रवक्ता
गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

एक परिचय

आप ऐसे व्यक्ति हैं, परमार्थ जिसका काम है।
शांत चित्त, उदार, सरल स्वभाव भी अभिराम है।।
नेक राह पर बढ़ चले यह संकल्प पूजा-धाम है।
एक परिचय, लक्ष्मीनारायण सारस्वत नाम है।।

जब कभी कोई दुखी दिखता इन्हें है राह में।
पोंछ लेते उसके आँसू थाम लेते बांह में।।
ना हो तकलीफें कहीं - शामिल है इनकी चाह में।
आप जीवन जी रहे सम्मान की मृदु छाँह में।।

धर्म के सन्मार्ग पर चलने का प्रण है ले लिया।
इस जगत में दान-सेवा को ही हर क्षण है जिया।।
आचमन के घूँट में संकल्प जनहित का किया।
नेकदिल इन्सान बनकर, सीख सारस्वत दिया।।

कर लिया अध्ययन अपने वेद और साहित्य का।
कुशल और प्रकाण्ड ज्ञानी आप हैं विज्ञान का।।
है नहीं अब मोल कोई आपके सद्‌भाव का।
हर जगह संचार करते आप हैं बंधुत्व का।।

चंद शब्दों में समर्पित है यही अब भावना।
आपके यश कीर्ति की फहरे ध्वजा - यह कामना।।
आपके हाथों जगत-परमार्थ की हो पालना।
एक सुन्दर स्वस्थ्य, निर्मल विश्व की हो सर्जना।।

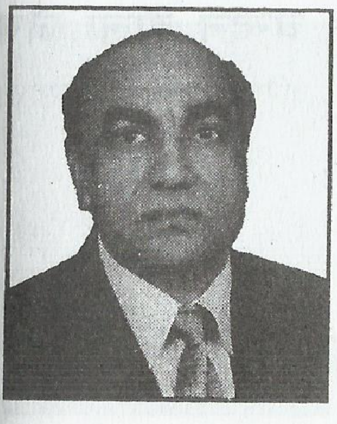

भीष्म पितामह
साहित्यकार
उप आबकारी एवम् कराधान आयुक्त
हरियाणा सरकार, चण्डीगढ

विरला ही कर पाता है

जैसा नाम वैसा काम कोई, विरला ही कर पाता है,
युग-युगों तक सौरभ रहता, सच्चा नर कहलाता है।
मृदु सौम्य व्यवहार है इनका, उतनी ही मीठी वाणी है,
मुस्काएं तो फूल से बरसें, स्वनाम-धन्य यह प्राणी है।
सान्निध्य में जो इनके रहता, हर्ष अपार वह पाता है,
जैसा नाम वैसा काम कोई, विरला ही कर पाता है।

सरल और सच्चरित्र हैं इतने, जैसे स्वयं नारायण हैं,
पूर्ण निष्ठा से कार्य करते, सेवा, त्याग परायण हैं।
राग-द्वेष से दूर है रहता अजातशत्रु कहलाता है,
जैसा नाम वैसा काम कोई, विरला ही कर पाता है।

धर्म-अनुष्ठान में आगे रहता, पददलितों का प्यारा है,
अपने कौल-वचन का पक्का, तारों में ध्रुवतारा है।
रोम-रोम से भारतवासी, रखता हर से नाता है,
जैसा नाम वैसा काम कोई, विरला ही कर पाता है।

एक से बढ़कर एक हुए हैं, सन्त-फकीर इस धरती पर,
फक्कड़ इनसा कहाँ मिलेगा, आ जाएं जब मस्ती पर।
उसका उसको अर्पण करते, कहते-'घर से क्या जाता है,
जैसा नाम वैसा काम कोई, विरला ही कर पाता है।

न केवल वैरागी ही है, घर बारी भी कम नहीं,
परिवार पालन के चक्कर में, लिया चैन से दम नहीं।
सब जग बंधु बांधव इनका, स्व से ऊपर उठ जाता है,
जैसा नाम वैसा काम कोई, विरला ही कर पाता है।

चन्दन बाला जैन
वरिष्ठ कवयित्री, हिसार।

श्रेष्ठ मानव

षष्टि-पूर्ति पर शत्-शत् वन्दन
सारस्वत जी का अभिनन्दन।

हँसमुख और मुधर भाषी हैं,
पावन ज्यों मथुरा काशी हैं।

स्वस्थ समाज के प्रबल समर्थक,
भारतीयता के सच्चे साधक।

सेवा दीन दुखी की करते,
प्रेम भाव से पर दुख हरते।

घर-घर जाकर यज्ञ कराते,
गायत्री का पाठ पढ़ाते।

गाँधी सा जीवन अपनाया।
मधुवाणी से सदा लुभाया।

जन सेवा में रहे समर्पित।
राज्य-स्तर पर हुए प्रशंसित।

सुन्दर स्वस्थ दीर्घ जीवन हो।
विकसित, सुरभित घर-उपवन हो।

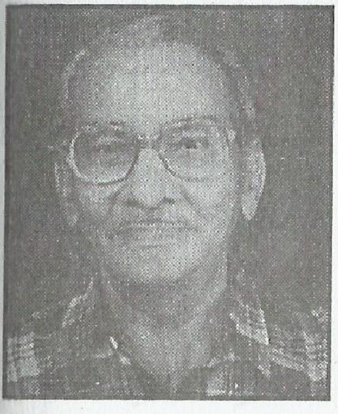

राजेन्द्र शर्मा विकल
वरिष्ठ कवि–फ़रीदाबाद

अपर्याप्त एक 'मंगल कलश'

डॉक्टर 'सारस्वत' पर अभिमत अपना, नत मस्तक हो करूं बखान,
हर दिशा में हर विधा में, आप का है व्यक्तित्व महान।।

मेरे अपने अनुभव अनुसार, आतिथ्य में हर पल आप परायण,
'सारस्वत सदन' में करें निवास, इसी लिये स्वयं ''लक्ष्मी-नारायण''।।

षष्टिपूर्ति पर भी इनकी, चुस्ती स्फूर्ति है प्रशंसनीय,
शतायु पर भी स्नायु देह की, स्निग्ध रहेगी अवर्णनीय।।

मधुरभाषी, निर्धन-मन-वासी, सन्यासी सम श्रेष्ठ हैं आप,
चिकित्सा, साहित्य तथा समाज सेवा में, पारंगत यथेष्ट हैं आप।।

आप के जीवन की, जी करता है, लिखूं जीवनी जी भर के,
किन्तु अनेक अध्याय बनेंगे, केवल आपके एक हुनर के।।

मेरा है अभिप्राय यही बस करने आप का गुणगान व यश,
नहीं पर्याप्त सारस्वत श्री जी, एक ही केवल 'मंगल-कलश'।।

अतीव उच्च शिखर पर चढ़ कर, आप में नहीं व्याप्त अभिमान ,
हुआ 'विकल' मैं, रह गये अब भी, वर्णन करने विशेष सन्मान।।

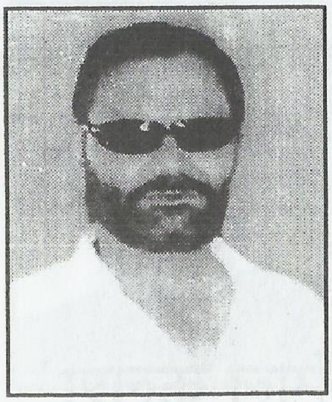

नन्द किशोर शर्मा

वरिष्ठ कवि–हिसार

सारी दुनिया कहती है

मंद-मंद मुस्कान तुम्हारी, सदा लबों पर रहती है,
यह केवल हम ही नहीं कहते, सारी दुनिया कहती है।

धर्म-कार्य में गुज़रा जीवन, गायत्री में ध्यान रहा,
निर्बल, निर्धन की सेवा में, तत्पर यह इन्सान रहा।
'सरस्वती' आँचल की छाया, हर पल इन पर रहती है,
यह केवल हम ही नहीं कहते, सारी दुनिया कहती है।

षष्टि-पूति का यह अवसर, बन्धु तुम्हें मुबारक हो,
पर सेवा में बीते जीवन, सुख-सुविधा का वाहक हो।
होती है वह सफल ज़िन्दगी, जो सेवारत रहती है,
यह केवल हम ही नहीं कहते, सारी दुनिया कहती है।

आँधी हो या सर्दी-गर्मी, या दुखों की छाया हो,
रहते हो समभाव सदा तुम, कितना संकट आया हो।
कांटों में, चट्टानों में भी 'सारस्वत' सरिता बहती है,
यह केवल हम ही नहीं कहते, सारी दुनिया कहती है।

सुशील बुड़ाकोटी शैलांचली,

वरिष्ठ साहित्यकार, हिसार।

आरोग्य-अवदानी हे!

जिएँ जीवन जो हँसकर
लगे सबको सो सुखकर
आरोग्य-अवदानी हे!
लक्ष्मी नारायण प्रियकर।

गोत्र सारस्वत सुन्दर
'परमेश्वरी' पाए वर,
शुचि तन, मन-पीयूषी
भेषज-रत्न, विद्याधर।

निजाभिमान को तजकर
स्वाभिमान में बंधकर
सत्-स्वतः स्फूर्ति से
बढ़ते, छूते कीर्ति-शिखर।

उदित-दिवा के हे दिनकर
तमस रात्रि के हे निशिहर
आलोकित जीवन-पथ हो
गुरुकृपा हो श्रेयस्कर।

'षष्टिपूर्ति' है अति उमंग उर
हर्षित परिजन, मोदित गुरुवर
'सीता' 'सरस्वती' के तपः पूत तुम
चिरानंद जियो 'मंगलकलश' भर।

महेन्द्र कुमार जैन
वरिष्ठ कवि–हिसार

रखते हैं समभाव

हैं स्वर्णिम आदर्श की, सारस्वत तस्वीर।
मनमोहक मुस्कान है, सागर सी गम्भीर।।

सरल शांत व्यवहार की, मूरत हैं साकार।
तपती दुपहरी में ज्यों, सावन की बौछार।।

षष्टिपूर्ति पर कर रहे, यौवन का आभास।
जैसे बगिया खिल उठे, जब आए मधुमास।।

जन सेवा से है सदा, इनका अति लगाव।
सभी प्राणियों के प्रति, रखते हैं समभाव।।

नशा मुक्ति, वृक्षारोपण, का छेड़ा अभियान।
गायत्री अनुष्ठान का, दिया सभी को ज्ञान।।

जीवन सादा सरल है, रखते उच्च विचार।
गांधीवादी धारा से, सदा किया श्रृंगार।।

आज यही शुभकामना, रहें ग़मों से दूर।
रहे सदा 'मंगल कलश', जीवन से भरपूर।।

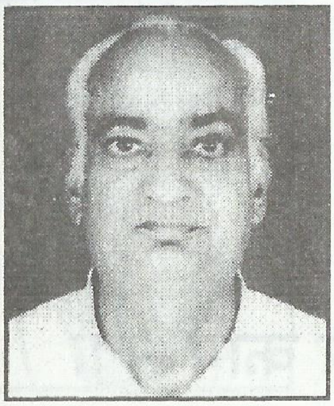

प्रेमसुख ओझा

सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य,

तारानगर (चूरू)

चन्द्रमा सी सौम्यता

चन्द्रमा सी सौम्यता को मैने, लक्ष्मीनारायण में देखा,
बाल-क्रीड़ा से लेकर, चिकित्सक के रूप में देखा,
जनमानस में, संस्कारों का दीप जलाते देखा,
कर्णप्रिय शब्दों से, सब का स्वागत करते देखा।

विनम्रता की मादक महक को, आतुरालय में देखा,
चिकित्सा ज्ञाता को, चिकित्सा अमृत पिलाते देखा,
बिना भेदभाव के, रुगनों की सेवा करते देखा।

रुगनों के मुख मण्डल पर, इनके प्रेम को देखा,
धनाढ्य से पहले, निर्धन की सेवा करते देखा,
संगी साथी और आतुरों को, प्रशंसा करते देखा।

जनप्रिय के जीवन में, मनीषियों का आदर्श देखा,
अनुशासन और तपोमय जीवन का, अनुपम संगम देखा,
तत्परता सेवा समर्पण, आयुष्यदाता में देखा।

सूर्य समान गतिशीलता को, नर श्रेष्ठ में देखा,
घोर कलयुग में भी धर्म निष्ठा को देखा,
माया को काया से, अलग करने का सामर्थ्य देखा।

हवासिंह शर्मा
हरियाणवी कवि, हिसार

खूब किया फिर काम सुनो

हिसार शहर के पश्चिम में, सिवानी बोलान गाम सुनो,
वैद्य लक्ष्मी नारायण का, वही पवित्र धाम सुनो।

सितम्बर १८ तेतालीस सन्-भू ऊपर देह धारी थी,
सीताराम पिता थे इनके, सरस्वती महतारी थी,
भाई तीन सभी छोटे-और हीरो दादी प्यारी थी,
देवीदयाल दादा के घर में, खिली नई फुलवाड़ी थी,
महिला मंगल गा री थी - कहें रक्षा करैं सुखधाम सुनो।

चौदह साल तक रहे गांव में, पढ़े पढ़ाई मन लाके,
नहला गये दो साल पढ़ण नै, रोज रोज बस्ता ठाके,
बी. ए. एम. एस. करी पास तनै, प्रथम श्रेणी में आके,
परमेश्वरी से की फिर शादी, गांव नंगथला में जाके,
लाग गये डाक्टर सेरड़ा में, खूब किया फिर काम सुनो।

आयुर्वेद के बल पर इन्होंने, वैद्यों में ख्याति पाई थी,
राज्यपाल से हुए सम्मानित, होगी मन की चाही थी,
परशुराम जयन्ती पर, पंड़ितों ने शाल उढ़ाई थी,
'साहित्य कला संगम' तरुवर, की मन से करी सिंचाई थी,
प्रेमलता एक बहन लाडली, गुण गाती हर याम सुनो।

मधुर कंठ से सुन्दर वाणी, की ये नित वर्षा करते,
दीन दलित पीड़ित लोगों की दे के दवा पीड़ हरते,
सच्ची बात कहैं सदा मुह पैं, नहीं किसी से ये डरते,
देश, धर्म, जाति कुल पेशे, के हित ध्यान सदा धरते,
डाबड़ा चौक आ पूछ लियो, 'सारसोत सदन' का नाम सुनो।

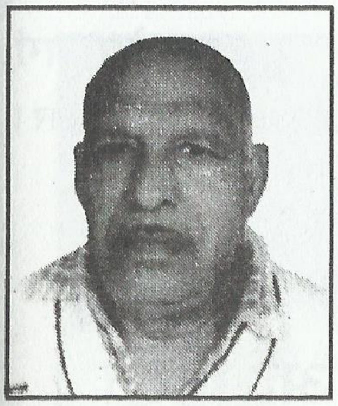

चन्द्र हिसारी
वरिष्ठ कवि-हिसार।

"मंगल कलश" - पावन सजे

प्रेम स्नेह आनन्द का, ऐसा अद्‌भुत रूप।
ज्यूं शरदऋतु में सजी, पावन पुलकित धूप।।

गायत्री मिशन हिय बसे, देव सम हैं विचार।
कोष लिए कल्याण का, बांटे सद् व्यवहार।।

जेब जो धन न दे सके, फिर भी मिले इलाज।
दीन-हीन की सेवा में, सुलभ-सारस्वत-काज।।

आदर्श विवाह हों सदा, देवें ऐसी सीख।
अनुज शादी, सादी की, डाली ऐसी लीक।।

होठ लिए मुस्कान सदा, हृदय बसता प्यार।
भाग्य विधाता ने रचा, अजातशत्रु अलंकार।।

'साहित्य कला संगम' धन्य, पाकर उच्च प्रधान।
प्रगति-पथ नित-२ गहें, वर दो यह भगवान।।

दीप-शिखा उपकार की, फैला रही प्रकाश।
सारस्वत कीर्ति बढ़े, लेकर संग उल्लास।।

"चन्द्र" पूनम ज्यूं बनो, हो जग को एहसास।
"मंगल कलश" पावन सजे, लिए अमर इतिहास।।

सन्तोष गर्ग

वरिष्ठ कवयित्री–हिसार।

उनका होता है अभिनंदन

जो रोतों को हँसाते हैं,
दुखियों को गले लगाते हैं,
उनका होता है अभिनन्दन।

जो गीत प्रेम के गाते हैं,
नफ़रत की अगन बुझाते हैं
कांटे चुग-चुग कर राहों के,
सूनी बगिया महकाते हैं,
उनका होता है अभिनन्दन।

जिनको अपनी परवाह नहीं,
आराम की जगती चाह नहीं,
जो दुर्गम पथ पर बढ़-चढ़ के,
नभ चंदा को छू आते हैं,
उनका होता है अभिनन्दन।

जो सादे वेश में रहते हैं,
छिप-छिप के दुखड़े सहते हैं,
जो घर संसार में रह के भी
संतों सी समता पाते हैं,
उनका होता है अभिनन्दन।

जो दया धर्म अपनाते हैं,
जो संतोषी कहलाते हैं,
थोड़ा-थोड़ा बीन-बीन कर
औरों को सुख पहुँचाते हैं,
उनका होता है अभिनन्दन।

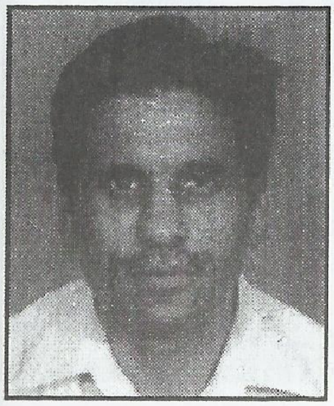

शुभकरण गौड़

निदेशक, प्रेरणा परिवार, हिसार।

प्रेम सभी से करते हैं

नर में नारायण, लक्ष्मी नारायण,
मानव सेवा करते हैं।

सहनशीलता भरी मन में,
सादगी इनमें रची बसी।
श्री सीताराम के सुपुत्र श्री ये
श्रीराम की गाथा से लगते हैं।

माँ सरस्वती के कृपा पात्र हैं,
परमेश्वरी पत्नी का सहयोग मिला।
प्यार भरा फूलों सा फला,
चहका-महका परिवार खिला।

प्यार, प्रेम की भाषा इनकी,
ये एक दूजे से बंधे हुए।
सबका दर्द समझते हैं ये,
प्रेम सभी से करते हैं।

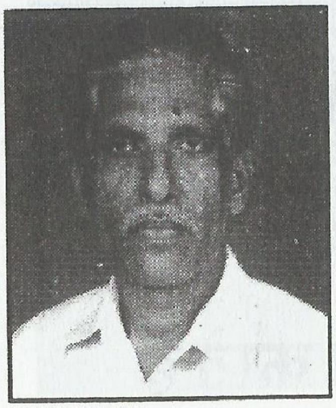

श्याम स्नेही गौड़

भूतपूर्व वर्गअनुदेशक

औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग

हिसार – (हरियाणा)

"समर्पित"

सर्वप्रिय 'सारस्वत' शाश्वत को समर्पित।
साहित्य कला संगम को समर्पित।।

नभ, सूर्य किरण, भू को समर्पित
विद्या-दायिनी माँ सरस्वती को समर्पित।
ईश्वरीय निष्ठा को समर्पित
प्रिय 'सारस्वत' शाश्वत् को समर्पित।।

दया, त्याग, कर्मठता को समर्पित।
तन, मन, धन से जन को समर्पित।
समाज के प्रत्येक वर्ग को समर्पित
प्रिय 'सारस्वत' शाश्वत को समर्पित।।

दीन, दुखी, कल्याण को समर्पित
राष्ट्र को, हिन्दुत्व को समर्पित
स-स्नेह मानव को समर्पित
प्रिय 'सारस्वत' शाश्वत को समर्पित।।

सत्य, गरिमा, स्वाभिमान को समर्पित
प्रकृति के कण-कण को समर्पित।
विनम्रता, सरलता, सौजन्य को समर्पित
हँसमुख मीठी वाणी को समर्पित।।

सुन्दरतम, मंगलमय जीवन हो
बढ़ो, फूलो, दीर्घ आयु हो।।
अनुकम्पा ईश्वर की बनी रहे।
हे सारस्वत हम तुम्हें समर्पित।।

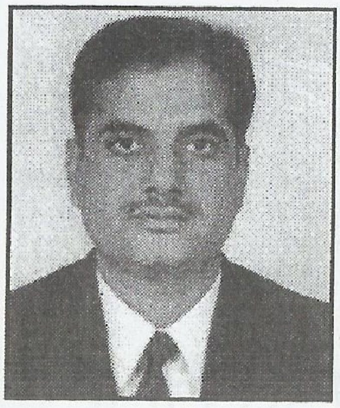

राधेश्याम चतुर्वेदी
एडवोकेट
(भाई–हिसार)

धन्य-धन्य हैं भाग हमारे

धन्य-धन्य हैं भाग हमारे जो यह शुभ अवसर आया।
गद्‌गद् है मन आज सभी का, हमने जीवन-धन पाया।।

बड़े त्यागी हैं भैया हमारे, यह है अहोभाग्य हमारा।
सबको पहले खिलाके भोजन, फिर उन्होंने खुद खाया।।

ग़लती हम थे जो भी करते, सदा उसे मुआफ़ किया।
गले लगाया, स्नेह जताया, सदा प्रेम का पाठ पढ़ाया।।

अपना, अपने परिवार का, हम सबका उत्थान किया।
तीज त्यौहार जन्मदिन पर, उपहार दिए और गले लगाया।।

धर्म-कर्म का जीवन जीकर, सबसे सद्व्यवहार किया।
गुरू श्रीराम शर्मा आचार्य, की जीवन शैली को अपनाया।।

षष्टिपूर्ति की वेला पर हम सबकी यह इच्छा है।
जुग-जुग तक आप जिएँ, सुख-स्वस्थ रहे निर्मल काया।।

शिप्रा शर्मा

भतीजी

मूनक (पंजाब)

हर तन का उपचार किया

माँ सरस्वती, पिता सीताराम ने, ऐसे पूत को जन्म दिया।
'सरस्वती'-सी ज्ञान संपदा, 'राम' जैसा जीवन जिया।।

युवाकाल में बन ब्रह्मचारी, उच्च शिक्षा का पान किया।
जीवन में आई 'परमेश्वरी', परिजन को सम्मान दिया।।

ऋषि दधीचि सी बना काया, परहित सेवा तुमको भाया।
स्वाभिमान गुण ऐसा पाया, सरकारी-पद भी ठुकराया।।

छोड़ शेरड़ा हिसार शहर में, निज चिकित्सालय खोल लिया।
रुग्ण-करुण-निर्धन लोगों को, दिल अपना बिन मोल दिया।।

कठोर बनाई जीवन-शैली, औरों को आराम दिया।
निर्धन हो या स्वास्थ्य-मंत्री, हर तन का उपचार किया।

क्या भाई, क्या पुत्र-वधू, देते सभी को नेह।
इसका ही परिणाम यह, प्रेम का बरसे मेह।।

'लक्ष्मी' नाम से हर रहे, भौतिक दुःख चुपचाप।
'नारायण' बनकर, स्वयं, सहे असंख्य संताप।।

राज्यकवि के परम प्रिय तुम, सबकी आँखों के तारे।
शिप्रा-सुनीता-सुशीला-प्रेमा, पावन-पर्व पर तुम्हें पुकारें।।

जन्मदिवस पर करें कामना, उन्नति-रथ जिस पथ जाए।
कंटक-संकट दूर करें प्रभु, मंज़िल पर तुमको पहुँचाए।।

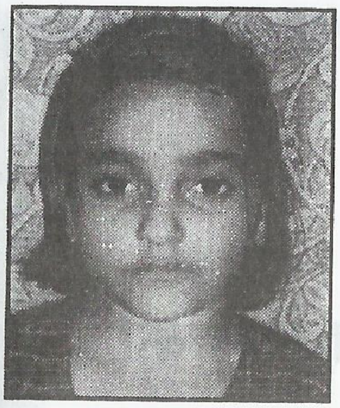

राधिका शर्मा

दौहित्री, रतनगढ

बहुत बधाई

आप सभी के हो प्रियजन,
करती मैं शत्-शत् वन्दन।

मुझको स्नेह अपार दिया,
खुशियों भरा रहे जीवन।
यही मेरी बस इच्छा है,
खुश रहो प्रतिपल प्रतिक्षण।

आप बढ़े, बढ़ते जाएँ,
स्वस्थ रहे ये तन और मन।
गूँजे विश्व में नाम तेरा,
गाए गीत तेरा जन-जन।

भव्या जोशी

दौहित्री, दिल्ली

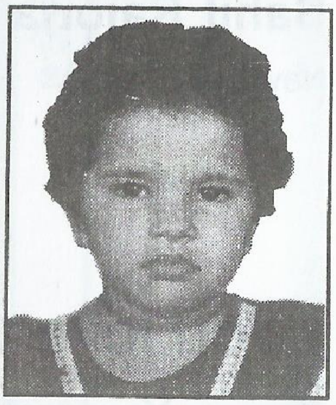

चाहते हैं तुझको हम सारे

जब भी हम छुट्टियों में आते
इधर-उधर की सैर कराते
हम सबको पार्क ले जाते
दिन-भर हमको खूब घुमाते
तरह-तरह की चीज़ खिलाते।
बनकर घोड़ा दौड़ लगाते
बच्चा बनकर मन बहलाते
सबसे प्यारे सबसे न्यारे
चाहते हैं तुझको हम सारे

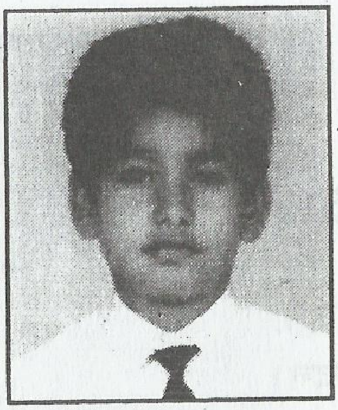

निखिल राजोरिया
नई दिल्ली

यही दुआ इस दिल की है

भगवान की असीम कृपा हम पर,
जो उन्होंने आपको भेजा धरा पर।
आपकी उपलब्धियाँ अनगिनत हैं,
हम सभी की दुआएँ आपके साथ हैं।
चाहते हैं कि आप आसमां छू जाएँ,
और हर तरह से देश के काम आएँ।
यही दुआ इस दिल की है,
यही कामना हम सब की है।

Sahil Rajoria
New Delhi

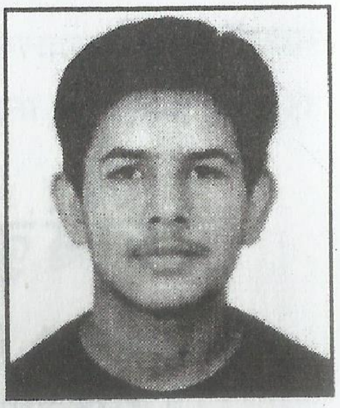

You love us very much

Your presence near us is indispensable,
Your qualities for us are approachable.
We all know you love India very much,
We hope you remain as such.
The day you were born,
The darkness of the earth was torn.
We know you love us very much.
We hope you remain as such.

6

चित्रावली

तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीय माता भगवती देवी शर्मा

पूज्य पिताजी पं. सीताराम शर्मा एवं पूजनीय माताजी श्रीमती सरस्वती शर्मा

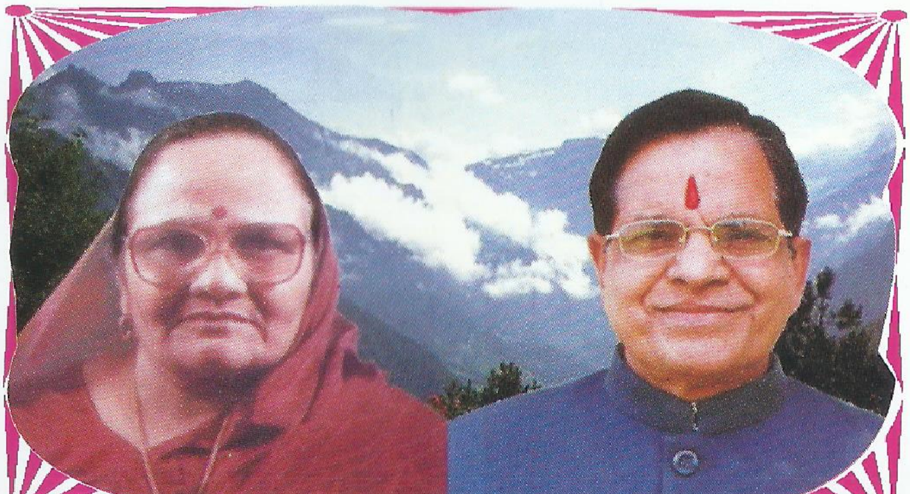

धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी शर्मा के साथ डॉ. सारस्वत।

विभिन्न मुद्राओं में :-

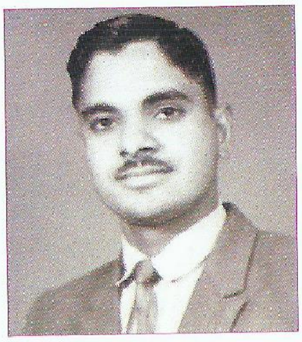
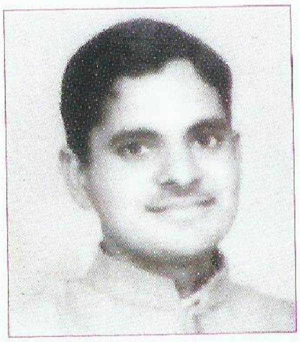

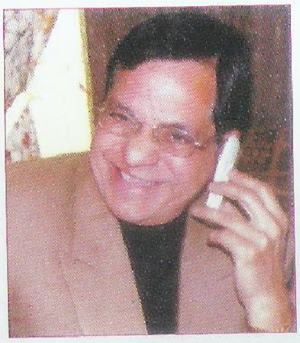
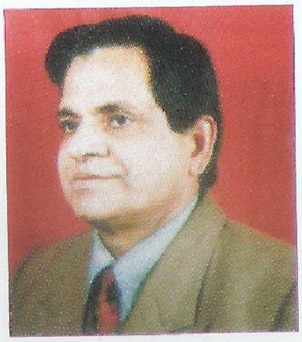

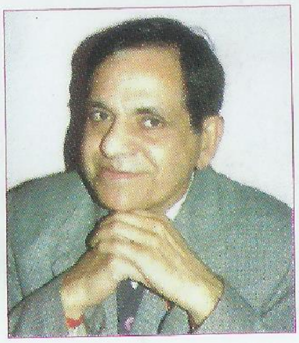

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में डॉ. सारस्वत को 'अम्बेडकर सेवा श्री' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करते हुए।

हिसार में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महिला खेल समारोह के उद्घाटन समारोह पर पधारे भारत के उपराष्ट्रपति कृष्णकांत के साथ।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, संगीत सम्राट पं. जसराज को रसराज केन्द्र, हिसार द्वारा आयोजित समारोह में 5 अप्रैल, 1992 को संस्था के प्रधान के रूप में अभिनन्दन-पत्र भेंट करते हुए।

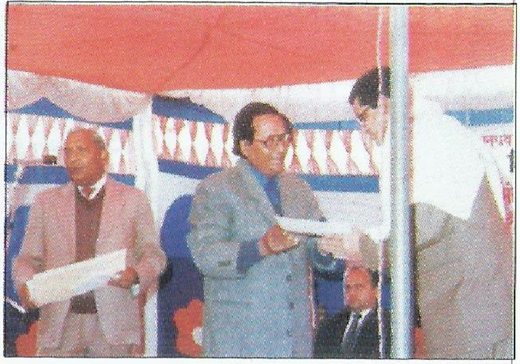

मासिक पत्र हिन्द जनपथ द्वारा तत्कालीन महानिदेशक, दूरदर्शन तथा सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री कमलेश्वर द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए।

केन्द्रीय राज्यमन्त्री कु० सैलजा के साथ जलपान करते हुए।

प्रसिद्ध उद्योगपति एवं मंत्री श्री ओमप्रकाश जिन्दल जी के साथ।

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखडिया का हाई स्कूल शेरड़ा (श्री गंगानगर) में पधारने पर डॉ० सारस्वत अभिनन्दन करते हुए।

सन्त नामदेव हाई स्कूल के वार्षिकोत्सव पर मंत्री चन्द्रमोहन जी तथा व्यापार मण्डल, हरियाणा के प्रधान बजरंग दास गर्ग द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए।

कुलपति ह॰कृ॰वि॰ हिसार श्री एम.के. मिगलानी का अभिवादन करते हुए।

श्री बलदेव तायल, पूर्व वित्त मंत्री, हरियाणा को सम्मानित करते हुए।

पूर्व विद्यायिका श्रीमती स्नेहलता को सम्मानित करते हुए।

पूर्व विधानसभा अध्यक्ष छत्रसिंह चौहान को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए।

प्रमुख समाज सेविका श्रीमती शान्ति तायल को सम्मानित करते हुए।

परशुराम जयन्ती के शुभावसर पर उपायुक्त श्रीमती दीप्ति उमाशंकर का स्वागत करते हुए।

स्वास्थ्य सचिव श्री मजीठिया से सम्मान प्राप्त करते हुए।

'साहित्य कला संगम' द्वारा आयोजित हंस पुरस्कार समारोह के सुअवसर पर मुख्य अतिथि सम्पत सिंह, वित्त मंत्री, हरियाणा को संस्था के प्रधान डॉ॰ सारस्वत सम्मानित करते हुए।

डॉ॰ एल.एन. सारस्वत सपरिवार - सुपुत्री सुशीला, धर्मपत्नी परमेश्वरी, दामाद अतुल जोशी, सुपुत्री सुनीता जोशी, पुत्रवधु सुनीता तथा सुपुत्र विजय सारस्वत।

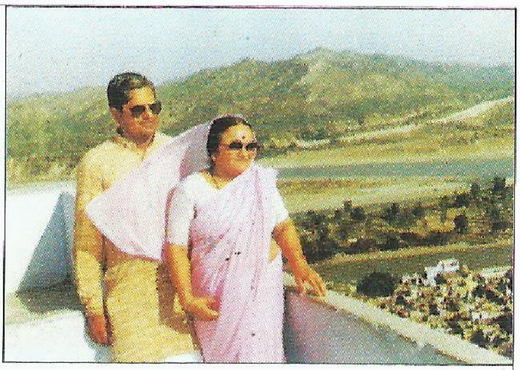

धर्मपत्नी के साथ तीर्थ यात्रा पर हरिद्वार में।

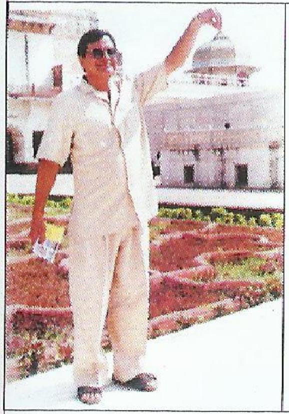

आगरे के किले में गुम्बद को पकड़े प्रसन्न मुद्रा में।

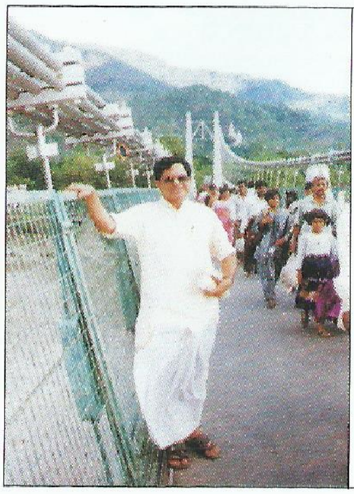

लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश तीर्थ यात्रा के सुअवसर पर गंगा प्रवाह का आनन्द लेते हुए।

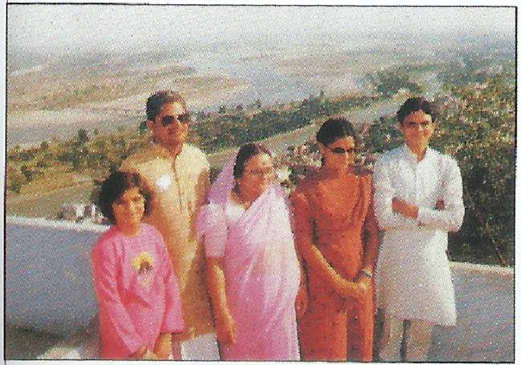

मनसा देवी, हरिद्वार की तीर्थ-यात्रा पर परिवार के साथ।

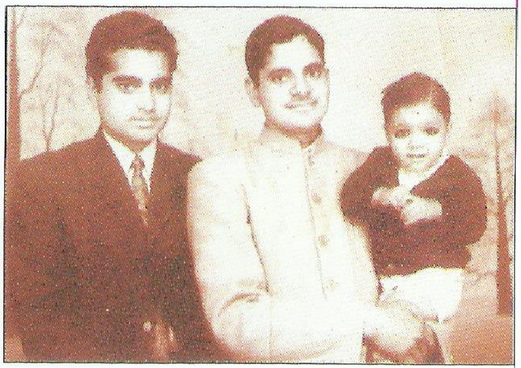

अनुज डॉ॰ के.आर. सारस्वत व पुत्र विजय के साथ।

सगे सम्बन्धियों एवं परिजनों के साथ

बहनोई श्री ओ.पी. शर्मा (सेवानिवृत्त सत्र-न्यायधीश) अनुज देवेन्द्र सारस्वत तथा अन्य सम्बन्धियों के साथ।

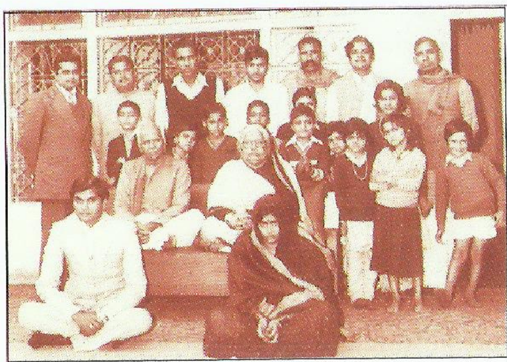

अनुज देवेन्द्र सारस्वत के आदर्श विवाह के उपलक्ष्य में 24 नवम्बर, 1982 को आचार्य श्रीराम शर्मा एवं माता भगवती देवी शर्मा के सान्निध्य में परिजनों के साथ

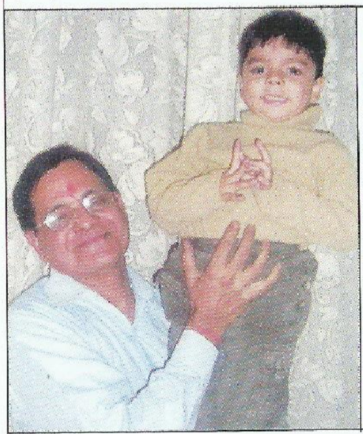

फ़ुर्सत के समय पौत्र कार्तिकेय के साथ प्रसन्न मुद्रा में

गुरू नानक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, हिसार के वार्षिकोत्सव पर ज़िला शिक्षा अधिकारी एवम् प्राचार्य द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए।

पंजाब नेशनल बैंक की 'ग्राहक सेवा योजना' के अन्तर्गत आयोजित समारोह में क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री रस्तोगी सम्मानित करते हुए।

मित्र मंडली के साथ डॉ० सारस्वत।

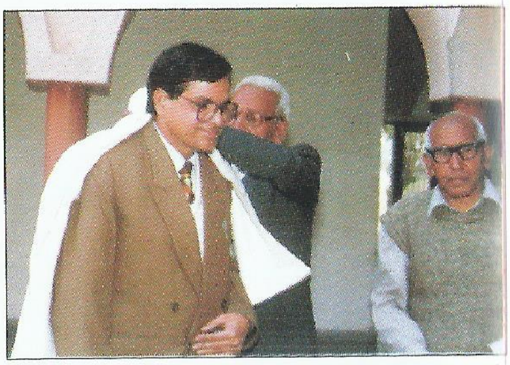

'वरिष्ठ नागरिक संस्था' के प्रधान श्री ओ.पी. शर्मा विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस पर सम्मानित करते हुए।

आर्य समाज, मॉडल टाउन, हिसार के वार्षिकोत्सव पर सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री जगदीशचन्द आर्य द्वारा सम्मानित होते हुए।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर जी के साथ राज्यकवि उदयभानु हंस जी के निवास स्थान पर आयोजित कवि गोष्ठी में।

साहित्य कला संगम के सचिव नरेन्द्र कश्यप, जिज्ञास मंच के प्रधान रघुवीर अनाम, राज्यकवि उदयभानु हंस तथा छविकार अशोक गुप्ता के साथ।

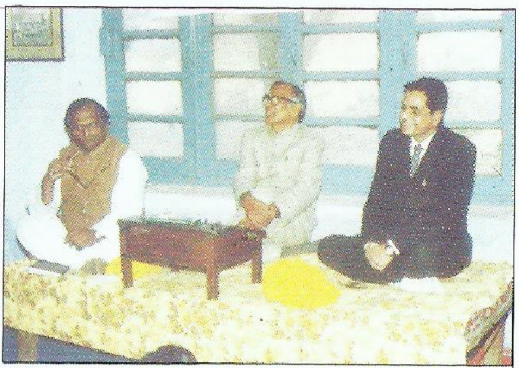

सर्वोदय भवन, हिसार में आयोजित काव्य गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में। साथ में अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद जैन तथा संयोजक प्रो. रघुवीर अनाम।

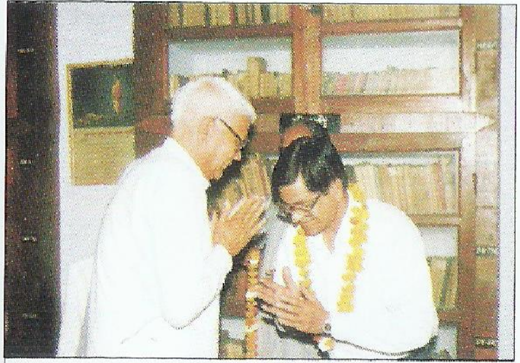

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के प्रधान श्री मदन गोपाल शास्त्री द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए।

नगर विकास न्यास हिसार के प्रधान श्री राम भगत गुप्ता अभिनन्दन करते हुए।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के पुरस्कार वितरण समारोह में अन्य अतिथियों के साथ।

आदर्श विवाह के शुभ अवसर पर पूर्व मंत्री श्री ज्ञानसिंह चौधरी चेयरमैन बिमला चौधरी व लालमन आर्य के साथ

आयुर्वेद विभागीय चिकित्सक संघ के वार्षिक अधिवेशन पर सालासर (राज.) में निदेशक श्री गोकुलेन्द्र शर्मा का अभिवादन करते हुए।

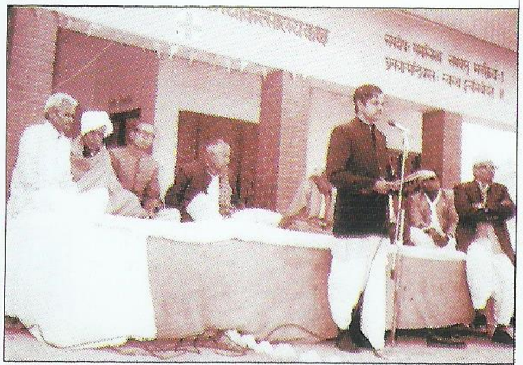

शेरड़ा (श्री गंगानगर) में 'अ' श्रेणी चिकित्सालय के उद्घाटन के सुअवसर पर अभिभाषण करते हुए।

रसराज केन्द्र द्वारा आयोजित संगीत समारोह में संगीत सम्राट पं. जसराज, सुप्रसिद्ध गाँधीवादी साहित्यकार यशपाल जैन के साथ

भारत विकास परिषद् के प्रधान डॉ॰ रमेश अग्रवाल को गुजरात भूकम्प पीड़ितों हेतु सहायता-राशि भेंट करते हुए।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार मधुकर गौड़ (बम्बई) का स्वागत करते हुए।

प्रमुख समाजसेवी श्री हंसराज मिगलानी को सम्मानित करते हुए।

प्राचार्य श्रीमती शमीम शर्मा को सम्मानित करते हुए।

हंस कविता पुरस्कार समारोह में हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ॰ चन्द्रत्रिखा एवं राज्य कवि उदयभानु हंस के साथ।

प्राचार्य बलबीर कौर, वरिष्ठ साहित्यकार पूरन मुद्‌गल के साथ माँ सरस्वती का पूजन करते हुए।

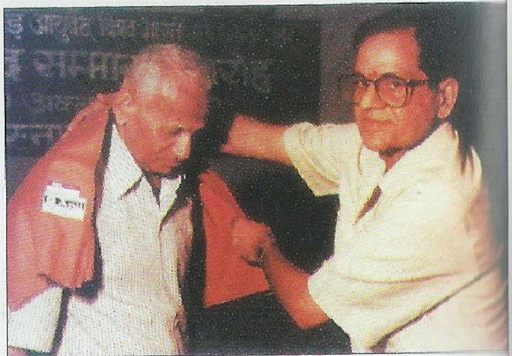

राष्ट्रीय संस्थान आयुर्वेद जयपुर के डॉ॰ वेदप्रकाश शर्मा को सम्मानित करते हुए।

7

चिन्तन के क्षण

विषय सूची

1	शक्तिपुंज गायत्री साधना	197-198
2	आध्यात्मिक जीवन के पाँच कदम	199
3	हम आशावादी बनें	200-01
4	जीवन लक्ष्य को न भूलें	202-204
5	जीवन जीने की कला	205
6	कर्तव्य पालन - एक श्रेष्ठ उपासना	206-07
7	गृहस्थ जीवन : एक तपोवन	208-10

शक्तिपुंज गायत्री साधना

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।।

गायत्री संसार के समस्त ज्ञान-विज्ञान की आदि-जननी है। वेदों को समस्त प्रकार की विद्याओं का अध्ययन माना जाता है। परन्तु वेद गायत्री की व्याख्या मात्र है। गायत्री को वेद माता कहा गया है। चारों वेद गायत्री के पुत्र हैं। ब्रह्माजी ने अपने एक-एक मुख से गायत्री के एक-एक चरण की व्याख्या करके चार वेदों को प्रकट किया।

ॐ भूर्भुवः स्वः से ऋगवेद, तत्सवितुर्वरेण्यं से यजुर्वेद, भर्गो देवस्य धीमहि से सामदेव और धियो योनः प्रचोदयात् से अथर्ववेद की रचना हुई। इन वेदों से शास्त्र, दर्शन, ब्राहम्ण ग्रंथ, आरण्यक, सूत्र, उपनिषद, पुराण, स्मृति आदि का निर्माण हुआ। इन्हीं ग्रंथों से शिल्प, वाणिज्य, शिक्षा, रसायन, वास्तु, संगीत आदि चौरासी कलाओं का आविष्कार हुआ है। इस प्रकार गायत्री संसार के समस्त ज्ञान-विज्ञान की जननी ठहरती है। जिस प्रकार बीज के भीतर पूरा मनुष्य सम्मिलित होता है, उसी प्रकार गायत्री के चौबीस अक्षरों में संसार का समस्त ज्ञान विज्ञान भरा हुआ।

गायत्री, गीता, गंगा और गौ यह भारतीय संस्कृति की चार आधार शिलाएँ हैं। इनमें सर्व प्रथम स्थान गायत्री का है।

यथा मधु पुष्पेभ्यो घृतं दुग्धात् रसात्पयः।
एवं हि सर्ववेदानां गायत्री सार उच्यते।।

महर्षि वेदव्यास जी ने उपरोक्त श्लोक में गायत्री मन्त्र को वेदों का सार कहा है। हिन्दू धर्म के सभी शास्त्र, सभी सम्प्रदाय, सभी ऋषि एक ही स्वर से गायत्री की महिमा को स्वीकार करते हैं। अथर्ववेद में गायत्री की स्तुति की गई है, जिसमें उसे आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली कहा गया है। विश्वामित्र ऋषि का कथन है कि गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मन्त्र नहीं है। अत्रि ऋषि कहते है कि जो गायत्री तत्व को समझता है उसके लिए संसार में कोई दुख शेष नहीं रहता है। पवित्र गीता में श्रीकृष्ण में लिखा है कि -

''गायत्री छन्दसामहम्'' - मैं छन्दों में गायत्री हूँ।

'हम आशावादी बनें'

आशा मनुष्य का शुभ संकल्प है। प्राणियों में वह अमृत है। जैसे सारा वनस्पति-जगत् सूर्य से प्रेरणा पाता है, वैसे ही मनुष्य में आशाएं ही पूर्ण शक्ति का संचार करती हैं। मनुष्य की प्रत्येक उन्नति, जीवन की सफ़लता, जीवन लक्ष्य की प्राप्ति का संचार आशाओं द्वारा होता है। आशाएं न होतीं तो संसार नीरस, अव्यक्त और निश्चेष्ट-सा दिखाई देता। इसलिए भारतीय आचार्यों ने सदैव मानव समाज को यही समझाया हैं :-

निराशया समं पापं मानवस्य न विद्यते।
तां समूलं समुत्सार्य ह्याशावादपरो भव।।

मनुष्य के लिए निराशा से बढ़कर कोई दूसरा पाप नहीं इसलिए निराशा को समूल नाश करके आशावादी धर्म बनाना है। आशाएं जीवन का शुभ लक्षण हैं। इसके सहारे मनुष्य घोर विपत्तियों में दुश्चिन्ताओं को हँसते-हँसते जीत लेता है। जो केवल दुनिया का रोना रोते रहते हैं, उन्हें अर्द्धमृत ही समझना चाहिए, किन्तु आशावान् व्यक्ति पौरुष के लिए सदैव तैयार रहता है। वह अपने हाथ में फावड़ा लेकर टूट पड़ता है, खेतों में मिट्टी से सोना पैदा कर लेता है। आशावान् व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है। वह औरों के आगे अपना हाथ नहीं फैलाता, बल्कि औरों को जीवन देता है।

चरित्रवान व्यक्ति कभी निराश नहीं होते, क्योंकि इनकी भावनाएं उदात्त एवं उर्ध्वगामी होती हैं। वे हर क्षण कठिनाइयों से लड़कर अपना अभीष्ट पा लेने की क्षमता रखते हैं। प्रतिभाशाली व्यक्तियों को निराशा के क्षणों में भी आशा का प्रकाश दिखाई देता है, इसी के सहारे वे अपनी परिस्थितियों में सुधार करके सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

इसके विपरीत निराशावाद उस महाभयंकर राक्षस के समान है जो मुँह फाड़े हमारे इस परम आनन्दमय जीवन के सर्वनाश के चक्कर में रहता है; जो हमारी समस्त शक्तियों का ह्रास किया करता है; जो हमें आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर नहीं होने देता और जीवन के अन्धकारमय

अंश हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया करता है।

इस बीमारी से ग्रस्त लोग उदास और खिन्न मुद्रा लिए घरों के कोने में पड़े दिन रात मक्खियाँ मारा करते हैं। उन्हें चारों ओर कष्ट ही कष्ट दीखते हैं। हर व्यक्ति से वह यही कहा करते हैं कि भाई हम क्या करें! हम बदनसीब हैं, हमारा भाग्य फूटा हुआ है, देव हमारे विपरीत हैं, हमारी क़िस्मत में विधि ने ठोकरों का ही विधान लिखा है।

वस्तुतः आशावाद मनुष्य के लिए अमृत तृल्य है। जैसे तृषित को शीतल जल से, रोगी को औषधि से, अन्धकार को प्रकाश से, वनस्पति को सूर्य से लाभ मिलता है, उसी भांति आशावाद की संजीवनी बूटी से मृत-प्राय मनुष्य में जीवन शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। आशावाद वह दिव्य प्रकाश है जो हमारे जीवन को उत्तरोतर परिपुष्ट, समृद्धशाली और प्रगतिशील बनाता है। सुख सौन्दर्य एवं अलौकिक छटा से उसे विभूषित कर उसका पूर्ण विकास करता है, उसमें माधुर्य का संचार कर विघ्न, बाधा, दुख, क्लेशों और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने वाली गुप्त मनः शक्ति जाग्रत करता है। आत्मा की शक्ति से देदीप्यमान आशावादी उम्मीद का पल्ला पकड़े प्रलोभनों को रोंदता हुआ अग्रसर होता है। सब शक्तियों का विकास करने वाली 'आशा' की शक्ति सदैव उसकी आत्मा को तेजोमय करती है।

जीवन-लक्ष्य को न भूलें

ज़िन्दगी का रास्ता हर किसी को पूरा करना पड़ता है। कुछ इसे सफलतापूर्वक पूरा कर लेते हैं और कुछ अनेक असफलता की वेदनाएँ लिए, इसके दूसरे छोर तक पहुँचते हैं। इस मार्ग में झाड़-झंखाड़ भी हैं, जिनमें उलझा भी जा सकता है, और फूल फुलवारी भी हैं, जो मोहक-मोद में पहुँचा देते हैं।

ज़िन्दगी के चौराहे पर प्रत्येक को एक-न-एक दिन पहुँचाना होता है। यहीं से रास्ता चुनना होता है जो हमें ठीक लक्ष्य तक पहुँचा दे। यदि इसके चुनाव में भूल हो गई, तो हम अपने लक्ष्य से भटक कर ऐसे स्थान पर पहुँच जाएगें, जहाँ पर हमारे अस्तित्व को ख़तरा उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि क्षोभ में यही सम्भव है। विचारपूर्वक मार्ग चुनने से लक्ष्य पर जा पहुँचेंगे। इससे हर्ष, उल्लास, प्रसन्नता, संतोष पाकर स्वयं अपनी दृष्टि से ऊँचे उठ जाएंगे। आवश्यक नहीं कि बड़ी-बड़ी वस्तु पाने को ही लक्ष्य बनाया जाए। मिली हुई ज़िन्दगी को सुव्यवस्थित रूप से एक रस बिता जाना भी एक ऊँचा लक्ष्य है।

जीवन का उद्देश्य भी समझें :-

मनुष्य जैसा अलभ्य अवसर पाकर भी यदि उसका उद्देश्य नहीं जान सके, तो क्या मनुष्य का शरीर और क्या पशु का शरीर। आत्मकल्याण की साधना जो इस जीवन में यदि नहीं कर सके, तो इस दुर्लभ अवसर का कुछ भी उपयोग नहीं। हम उदार बनें, साहस पैदा करें और आध्यात्मिक जीवन की कठिनाइयों को झेलने के लिए उठकर तैयार हों। फिर देखें कि जिस महानता की उपलब्धि के लिए हम निरंतर लालायित रहते हैं, वह सच्चे स्वरूप में मिलती है या नहीं। सब कुछ हमारे अन्दर ही है, उसे पुरुषार्थ द्वारा जागृत किया जा सकता है। सोई शक्ति को साधना से जगाना होगा। जीवन की सार्थकता का यही एक मार्ग है।

लक्ष्य ऊँचा और महान भी :-

हम जो भी काम करें पूरे मन, शरीर और इच्छा से करें। मामूली

उत्साह से मनुष्य की शक्ति इंजन के पानी की तरह भाप नहीं बन पाती और थोड़ी सी चेष्टाएँ भी निष्फल होकर रह जाती हैं।

महान उद्देश्य रखने वाले व्यक्ति का मन भी प्रचण्ड होता है। संचालन की शक्ति के अनुरूप ही उद्देश्य सफल होते हैं। इसलिए जब केन्द्रित शक्ति के किसी काम में प्रवृत्त होते हैं, तो सफलता स्वतः दौड़ी चली आती है। व्यक्तिगत जीवन को समुन्नत और सर्वांगपूर्ण बनाने के लिए जहां तक आवश्यक है कि हम पर्याप्त धन कमाएँ, परिवार बनाएँ, संगठन, सहानुभूति, सेवा और पुरुषार्थ द्वारा औरों की प्रगति में भी सहायता करें, वहाँ यह भी आवश्यक है कि हमारा जीवन श्रद्धा और विश्वासमय हो।

जीवन का लक्ष्य भी निर्धारित करें :-

जीवन लक्ष्य उस सुनिश्चित विचार को ही कहा जाएगा, जो संसार के साधारण कार्यक्रम से कुछ अलग, कुछ ऊँचा हो और जिसे पूरा करने में कुछ अतिरिक्त पुरुषार्थ करना पड़े। जीवन में कोई सुनिश्चित लक्ष्य, कुछ विशेष ध्येय लेकर चलने वालों को असाधारण व्यक्तियों की श्रेणी में रखा जाता है, क्योंकि उनका साहस और कष्ट- सहिष्णुता कुछ अधिक हो जाती है।

जीवन की सुन्दरता बाहरी वैभव में नहीं, मनुष्य के आन्तरिक संसार में हुआ करती है। जिसके गुण, कर्म, स्वभाव जितने ही सात्विक और सुरुचिपूर्ण होंगे, उसका जीवन उतना ही प्रसन्न और श्रेष्ठ होगा। जीवन की सफलता के लिए हमें कम-से-कम इच्छाओं के साथ अनुशासित, संयमित एवं कटी-छटी ज़िन्दगी को लेकर प्रसन्नतापूर्वक कार्यरत् रहना चाहिए।

जीवन लक्ष्य को न भूलें :-

आहार निद्रा भय मैथुनञ्च, सामान्यमेतत्पशुभिर्नाणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।

मनुष्य जीवन का अधिकांश भाग आहार, निद्रा भय और मैथुन में व्यतीत हो जाता है। शारीरिक आवयश्कताओं की पूर्ति में समय और

शक्तियों का अधिकांश भाग लग जाता है।

विचार करना चाहिए कि क्या इतने छोटे कार्यक्रम में लगे रहना ही मानव जीवन का लक्ष्य है ? यह सब तो पशु भी करते हैं। यदि मनुष्य भी इसी मर्यादा के अंतर्गत घूमता रहे, तो उसमें और पशु में क्या अन्तर रह जाएगा ? सृष्टि के समस्त जीवों में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने के कारण मनुष्य का उत्तरदायित्व भी ऊँचा है। जो अपने महान कर्त्तव्य की ओर ध्यान नहीं देता, निश्चय ही वह मनुष्यता का महान गौरव प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है।

दुःख और अधर्म को हटाकर सुख और धर्म की स्थापना करना, मनुष्य जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। ईश्वर ने जो योग्यताएँ और शक्तियाँ मानव प्राणी को दी हैं, उनका सदुपयोग यही हो सकता है कि दूसरों की सहायता की जाए, उन्हें सुखी एवं उत्तम जीवन बिताने में सहयोग दिया जाए। बेशक, शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए श्रम करना आवश्यक है, परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जीवन-निर्वाह की साधारण समस्या का हल करने के उपरान्त जो समय और शक्ति बचती है, उसे परमार्थ में, संसार भलाई में लगाना चाहिए। जो मनुष्य स्वार्थ से दृष्टि हटाकर परमार्थ पर जितना ध्यान देता है, समझना चाहिए कि वह उतना ही जीवन सद्व्यय कर रहा है। संत तुलसीदास जी ने भी कहा है कि-

सुतदारा और लक्ष्मी पापी के भी होय।
संत समागम हरिकथा तुलसी दुर्लभ दोय।।

जीवन जीने की कला

"ज़िन्दगी जीना एक कला है" ऐसा सुनकर अनेक लोगों को अजीब सा लग सकता है, किन्तु है यह वास्तविकता कि जीवन जीना एक कला है। जो लोग जीवन जीने की कला नहीं जानते अथवा उसे कलात्मक कर्त्तव्य नहीं मानते, वे जीते हुए भी ठीक से नहीं जी पाते।

बहुत लोग ज़िन्दगी को विविध उपकरणों से सजाए सँवारे रहने को कला समझते हैं, किन्तु बाह्य प्रसाधनों द्वारा जीवन का साज श्रृंगार किए रहना कला नहीं है। यह मनुष्य की लिप्सा है, जिसे पूरा करने में उसे एक झूठे संतोष का आभास होता है। फलतः यह मान बैठता है कि वह ज़िन्दगी को ठीक से जी रहा है। कला तो वास्तव में वह मानसिक वृत्ति है, जिसके आधार पर साधनों की कमी में भी ज़िन्दगी को ख़ूबसूरती के साथ जिया जा सकता है। ज़िन्दगी को हर समय हँसी-खुशी के साथ अग्रसर करते रहना ही कला है। और उसे रो-झीख कर काटना ही कलाहीनता है।

साधन अथवा असाधन, संपन्नता अथवा विपन्नता किन्हीं भी स्थितियों में अनुरूप अथवा आवश्यक पुरुषार्थ के साथ सहजता, सरलता, संतोष, आशा, उत्साह तथा अव्यग्रतापूर्ण हर्ष-विषाद का यथायोग्य निर्वाह करते हुए जीना ही कलापूर्ण जीवन है, जिसे प्राप्त करना न केवल श्रेयस्कर ही है, बल्कि सार्थक एवं सुखकर भी है।

यदि हमको संसार में सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत करना है तो सदैव उन मनोविकारों को नियन्त्रण में रखना आवश्यक है जो हमारे मानसिक सन्तुलन को नष्ट करके, हमको एकांगी बनाकर, हमें पतन की ओर अग्रसर करते हैं। सुख और दुःख संसार में अवश्यम्भावी हैं। इसी प्रकार किसी न किसी दृष्टि से किञ्चित छोटा-बड़ा होना भी प्रकृति में प्रायः देखा जाता है। पर इन बातों के कारण मन में क्रोध, ईर्ष्या, निराशा आदि का भाव उत्पन्न करना हमारा मानसिक दुर्गुण है।

मनुष्य वही है जो सब प्रकार की परिस्थितियों में शान्त रहकर अपने कर्त्तव्य का पालन करता चला जाता है। यदि आप इस नियम पर आचरण करेंगे तो दुःख के दिन, विपरीत घटनाएँ सहज ही निकल जाएंगी। एसे अवसर पर मानसिक सन्तुलन स्थिर रखना और शान्ति तथा दृढ़ता से विघ्न बाधाओं का प्रतिकार करना ही हमारे लिए सर्वाधिक हितकारी होता है।

"कर्त्तव्य-पालन एक श्रेष्ठ उपासना"

जिन कार्यों को करने की ह्रदय स्वीकृति दे, वही मनुष्य का कर्त्तव्य अथवा धर्म है, और ह्रदय जिन कार्यों को करने की सलाह न दे, उन्हें नहीं करना चाहिए क्योंकि वे अधर्म या अकर्त्तव्य हैं।

जो मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का यथोचित रीति से पालन करता है, उस सदाचारी मनुष्य को कभी भी कोई दुःख नहीं सहन करना पड़ता। क्योंकि वह ईश्वर की इच्छानुसार कार्य करता है, इसलिये ईश्वर सदैव उस पर दयादृष्टि रखते हैं। प्रायः ऊपर से देखने पर सदाचारी पुरुष निर्धन और दुःखी मालूम होते हैं, पर वास्तव में यह बात नहीं है। सदाचारी पुरुष में असाधारण दैवी-शाक्ति होती है। जिस पुरुष में दैवी-शक्ति है, वह दुःखी कैसा? सदाचारी पुरुष निर्धन तो हो ही नहीं सकता।

सच पूछा जाए तो सच्चा ख़ज़ाना सदाचारी के ही पास है। उसका वह ख़ज़ाना कभी ख़ाली नहीं होता, बल्कि ख़र्च करने पर बढ़ता ही जाता है। सदाचार के विचारों का चिंतन करने से ही आत्मा को अपार शान्ति और शीतलता प्राप्त होती है। दुष्टों को सदा अपने दुश्मनों का भय बना रहता है कि कहीं कोई हमारा अनिष्ट न कर दे, पर सदाचारी के पास ये सब बातें कहाँ ? वहाँ न कोई दोस्त है न दुश्मन। उसके लिये तो सारा संसार एक-सा है।

उपासना प्रतिदिन करनी चाहिए। जिसने सूरज-चाँद बनाए, फूल-फल और पौधे उगाए, कई वर्ण, कई जाति के प्राणी बनाए, उस परमपिता परमात्मा के समीप बैठेंगे नहीं, तो विश्व की यथार्थता का पता कैसे चलेगा ? शुद्ध ह्रदय से, कीर्तन, भजन एवं प्रवचन में भाग लेना, प्रभु की स्तुति ही है। इससे अपने देह, मन और बुद्धि के वे सूक्ष्म संस्थान जागृत होते हैं, जो मनुष्य को सफल और सद्गुणी बनाते हैं। उपासना का जीवन विकास से अद्वितीय संबंध है।

केवल प्रार्थना ही प्रभु का स्तवन नहीं है। हम कर्म से भी भगवान की उपासना करते हैं। भगवान कोई मनुष्य नहीं है, वह तो

सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान क्रियाशील सत्ता है। इसलिए उपासना का अभाव रहने पर भी उसके निमित्त कर्म करने वाला मनुष्य बहुत शीघ्र आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है। लकड़ी काटना, सड़क से पत्थर फोड़ना, मकान की सफ़ाई, खलिहान में अन्न निकालना आदि भी भगवान की स्तुति है। हम ये सारे कार्य इस आशय से करें कि इससे विश्वात्मा का कल्याण होगा। कर्त्तव्य भावना से किए गए कर्मों से भगवान जितना प्रसन्न होता है, उतना कीर्तन-भजन से नहीं होता। स्वार्थ के लिए नहीं, परमार्थ के लिए व आत्मसंतोष के लिए किए गए कर्म से बढ़कर फलदायक ईश्वर की भक्ति और कोई दूसरी नहीं हो सकती।

पूजा करते समय हम कहते है,- "हे प्रभु ! तू मुझे ऊपर उठा, मेरा कल्याण कर, मेरी शक्तियों को सर्वव्यापी बना दें।" कर्म करते समय हमारी भावना यह रहती है- 'हे प्रभु ! तुम मुझे इतनी शक्ति दो, इतना ज्ञान दो, वैभव और वर्चस्व दो कि वह कम विकसित प्राणियों की सेवा में काम आए। मैं जो करता हूँ उसका लाभ समस्त संसार को मिले।

इन भावनाओं में कहीं अधिक शक्ति और आत्मकल्याण की सुनिश्चितता है। इसलिए भजन को ही नहीं, ईश्वरीय आदेशों के पालन को भी सच्ची उपासना मानना चाहिए।

गृहस्थ जीवन : एक तपोवन

''धन्यो गृहस्थाश्रमः'' कहकर हमारे ऋषि मुनियों ने चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम ही धन्य कहे जाने योग्य है, ऐसा श्रुति में कहा है। जिस तरह समस्त प्राणी माता का आश्रय पाकर जीवित रहते हैं, उसी तरह सभी आश्रम गृहस्थाश्रम पर आधारित हैं। वस्तुतः किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास के लिए परिवार संस्था का स्वस्थ, समर्थ व सशक्त होना ज़रूरी है। यह सहजीवन के व्यवहारिक शिक्षण की प्रयोगशाला है। बिना किसी बाह्य दण्ड, भय या कानून के चलने वाली यह एक मात्र ऐसी संस्था है जो आनुवंशिक संस्कारों एवं पारस्परिक विश्वास पर निर्भर रह, अविच्छृंखल स्थिति में न जाकर सतत् गतिशील रहती आयी है। बिना स्वार्थों का त्याग किए, बिना कष्ट सहन किए सहज जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती एवम् त्याग, सहिष्णुता, सेवा की धुरी पर यह संस्था मात्र भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है, एवम् सदा रहेगी।

सुख के साधनों के साथ स्नेह, प्रेम और आत्मीयतापूर्ण भावनाओं के सम्मिश्रण को ही स्वर्ग कहा जा सकता है। यह स्वर्ग हमारे घर में ही मौजूद है, हम भले ही न देख पाते हों। यह स्वर्ग है-दाम्पत्य जीवन का सुख जो किसी ऊपर वाले स्वर्ग से कम सरस, सुखद और रुचिपूर्ण नहीं है।

सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्म एक ही था। उसने एकाकीपन की नीरसता और निष्क्रियता अनुभव की। फलतः अपने को ही दो भागों में विभाजित करके उसके साथ क्रीड़ा करने लगा। यह सृष्टि का शुभारम्भ है। नर-नारी के मध्य यही एक प्राण-दो शरीर वाली स्थिति बनी रहे; दोनो के बीच सघन आदान-प्रदान बना रहे, यही दाम्पत्य जीवन का लक्ष्य है। ब्रह्म और प्रकृति की भाँति ही पति-पत्नी के बीच एकात्मता वांछनीय है। स्त्रियाँ ही घर की लक्ष्मी हैं। उन्नति चाहने वाले पुरुष को उनका भली-भाँति सत्कार करना चाहिए। अपने वश में रखकर उनका पालन करने से स्त्री लक्ष्मी-स्वरूप बन जाती है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रफलाः क्रियाः।

अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता रमण करते हैं या प्रसन्न रहते हैं, जहाँ इसके विपरीत, नारियों का अपमान होता है वहाँ अफल (अशुभ) क्रियाएँ होती हैं।

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारणीं दुर्गसंसारात् सागरस्य कुलोद्भवाम्।।

हे भगवती ! ऐसी पत्नी दीजिए जो मनोवृत्तियों को आपका अनुसरण करने वाली बना दे। संसार-सागर से पार करे और कुल का उद्धार करे। अतः नारी की गरिमा के उपयुक्त हर घर में उसे समुचित सम्मान मिलना चाहिए।

इस स्वर्ग को बनाने के लिए पति-पत्नी को अपने कर्त्तव्यों का पालन करना होगा। हम अपने कर्त्तव्यों का पालन करके ही अपने घर को स्वर्ग बना सकते हैं। दाम्पत्य जीवन का महत्व मनुष्य की अनेक कोमल एवं उदार भावनाओं, विचारशीलताओं तथा सद्प्रवृत्तियों पर खड़ा होता है। स्नेह, आत्मीयता, त्याग, उत्सर्ग, सेवा, उदारता आदि अनेक दैवी गुणें पर दाम्पत्य-जीवन की नींव लगती है।

दाम्पत्य जीवन की धरती पर कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का सम्मिलित रूप है, जो स्त्री और पुरुष के परस्पर स्नेह, आत्मीयता, त्याग, बलिदान, जीवन की कठोरताओं और शुष्क मरुभूमियों को भी सींचकर उन्हें सरस और स्वर्गीय बना देता है। अनेक कठिनाइयों में भी इस सम्मिलित प्रयास से पग-पग पर नई आशा, नई उमंग, नई प्रेरणा जमी रहती है। पुरुष नारी की सरलता, सहिष्णुता, त्याग, सेवा से सशक्त बना रहता है तो नारी पुरुष के स्नेहपूर्ण संरक्षण, आत्मीयता, आदर-सम्मान को पाकर सबला, देवी, गृहणी के रूप में प्रतिष्ठित होती है।

पति-पत्नी की परस्पर आलोचना दाम्पत्य-जीवन के मधुर सम्बन्धों में खटास पैदा कर देती है। इससे एक दूसरे की आत्मीयता, प्रेम, स्नेहमय

आकर्षण समाप्त हो जाता है। इससे दाम्पत्य-जीवन की सुख-शान्ति तो नष्ट होती ही है, कालान्तर में घृणा, अलगाव, असहयोग, झूठ बोलना, धोखेबाज़ी के रूप में अनेक दुर्भावनाओं की सृष्टि होती है। वस्तुतः परस्पर सच्चाई, नम्रता, सहिष्णुता और उदारतापूर्ण क्षमा से ही दाम्पत्य-जीवन निभता है।

जिन परिवारों में मीठा बोलने और विनम्र होने की परम्परा होगी, वहाँ के बच्चे अभाव में भी असीम तृप्ति अनुभव कर रहे होते हैं। पति-पत्नी और अन्य कुटुम्बी-जनों के सुख-सन्तोष का तो कहना ही क्या! सुख-समृद्धि ऐसे ही घरों में बसती है। तुलसीदास जी ने लिखा है :-

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति-निदाना।

अर्थात जहाँ पर परस्पर प्रेम और सद्व्यवहार होता है, वहाँ सुख-सम्पत्ति की कमी नहीं रहती किन्तु दुर्बुद्धिग्रस्त परिवार तो सदा विपत्ति में ही पड़े रहते हैं।

''गृहस्थ्यमेव हि धर्माणां सर्वेषांमूलमुच्यते'' कहकर ऋषियों ने गृहस्थ जीवन की गरिमा स्थापित की है। किन्तु उन्होंने जो यह व्यवस्था दी, उन्हीं गुहस्थों के लिए है जो सदाचार पूर्वक इसे धर्म, कर्त्तव्य समझकर पालन किया करते हैं।

गृहस्थ जीवन सर्वोपरि जीवन है, किन्तु कब तक ? जब तक सद्गृहस्थ बनकर पारिवारिक शान्ति, शिष्टाचार, शिक्षित परिवार-नियोजन तथा बाल-विकास की शर्तों को पूरा करते हुए पारमार्थिक जीवन-यापन किया जाए और दाम्पत्य जीवन को भोग का माध्यम नहीं, एक धार्मिक तथा आध्यात्मिक-कर्ता समझकर निभाया जाए।

8

स्वास्थ्य दर्पण

आयुर्वेद प्रवर्तक भगवान श्री धन्वन्तरि जी

विषय सूची

1	आयुर्वेद ही सर्वोत्तम चिकित्सा पद्धति है	213
2	मधुमेह या डायबिटीज़	214-15
3	रक्त भार (Blood Pressure)	216
4	स्वास्थ्य रक्षा के चौबीस स्वर्णिम सूत्र	217-18
5	नीरोग जीवन के महत्वपूर्ण सूत्र	219-20
6	स्वस्थ रहने के मूलभूत सिद्धान्त	221-222

आयुर्वेद ही सर्वोत्तम चिकित्सा पद्धति है

आयुर्वेद प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति होने के कारण सभी पैथियों की जननी है। अथर्ववेद का उपाँग होने से इसे पाँचवां वेद भी मानते हैं।

''धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूल साधनम्'' की उक्ति के अनुसार हमारा स्वास्थ्य ठीक होगा, तभी हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। आयुर्वेद में सौ वर्ष तक स्वस्थ जीवन जीने की कला बताई है।

समदोषः समाग्नि समधातु मलः क्रियाः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।

आयुर्वेद शास्त्र में स्वस्थ की जो परिभाषा बताई गई है, वह अन्य किसी भी पैथी में नहीं है। केवल शरीर स्वस्थ रहने से नहीं, बल्कि आत्मा, इन्द्रियाँ एवं मन के प्रसन्न रहने से ही व्यक्ति स्वस्थ रहता है। आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करता है और अस्वस्थ व्यक्ति को निरोग बनाता है। इसकी चिकित्सा निरापद होती है अर्थात किसी प्रकार का हानिकारक रिएक्शन नहीं होता है। इसलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन **(W.H.O.)** ने भी माना है कि यह पद्धति केवल परम्परागत नहीं, वैज्ञानिक भी है।

भारत सरकार ने इसके महत्त्व को समझते हुए सभी राज्यों में निदेशालय भी स्थापित किये हैं। एलोपैथिक चिकित्सकों के समान आयुर्वेद चिकित्सकों के वेतनमान भी बराबर कर दिए हैं। आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति का सम्मान दिया जाएगा।

''मधुमेह या डायबिटीज़''

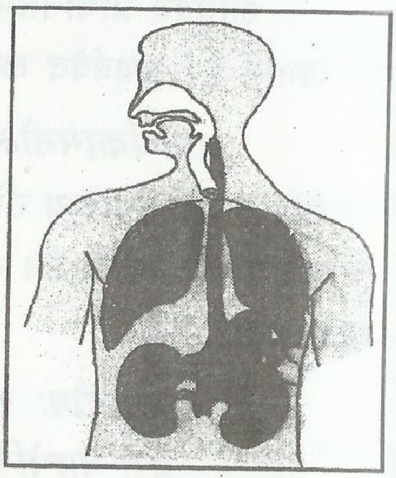

यह रोग प्रायः अमीर लोगों को होता है। इसका प्रत्यक्ष कारण अधिक मात्रा में चीनी खाना या आटा, मैदा, चावल, आलू आदि ऐसे पदार्थों का अधिक सेवन करना होता है, जिनमें श्वेतासार की अधिक मात्रा होती है, जो शरीर के भीतर जाकर चीनी के रूप में बदल जाता है। शरीर के भीतर इस चीनी की आवश्यकता रहती है और इसका उपयोग भी है। यह चीनी शरीर के भीतर पैंक्रियाज नामक ग्रन्थि से निकलने वाले ''इन्स्युलिन'' रस के द्वारा जलाई जाती है और उससे शरीर को गर्मी तथा शक्ति प्राप्त होती है, पर जब हम आवश्यकता से अधिक मात्रा में चीनी खाते हैं और शारीरिक ग्रन्थियों से निकलने वाला 'इन्स्युलिन' उस सबको नहीं जला पाता, तब वह वैसी ही हमारे रक्त में मिल जाती है और वहाँ से गुर्दों द्वारा खींचकर पेशाब के मार्ग से निकाली जाती है। इस प्रकार की अस्वाभाविक प्रक्रिया से मधुमेह रोग की उत्पत्ति होती है, जिसके कारण रोगी का शरीर सूखने लगता है, शक्ति घट जाती है और पेशाब अधिक मात्रा में निकलने लगता है। बहुत से लोगों को तो प्रतिदिन पाँच-सात लिटर तक पेशाब हो जाता है। इससे शरीर की गर्मी कम पड़ जाती है। देह तंतुओं में निर्बलता आ जाती है और शरीर में फोड़े-फुन्सी अधिक उत्पन्न होने लगते हैं। इसी कारण मधुमेह के रोगी के शरीर में कोई घाव आदि हो जाने पर बहुत देर से ठीक हो पाता है। मूत्र की अधिकता से रोगी की प्यास बहुत बढ़ जाती है। कितने ही व्यक्तियों को भूख अधिक लगने लगती है और बहुत सा खा लेने पर भी उनकी तृप्ति नहीं होती। पर इस भोजन से शरीर को कोई लाभ नहीं होता और दिन-पर-दिन कमज़ोरी बढ़कर रोगी मृत्यु के निकट पहुँचता जाता है।

डॉक्टरों के पास इस रोग का मुख्य और एकमात्र इलाज कृत्रिम इन्स्युलिन का इन्जैक्शन लगाना व गोली खिलाना है। यह इन्स्युलिन

पशुओं के शरीर में से निकाली जाती है और उसका सेवन करने से चीनी की अधिक मात्रा जल करके रोग में कमी पड़ जाती है। पर जब तक रोग की जड़ को दूर न किया जाये, तब तक इससे कोई स्थायी लाभ नहीं होता और ज्योंही दवा का सेवन बन्द कर दिया जाता है, त्योंही रोग फिर बढ़ जाता है। इसलिए डॉक्टर भी मधुमेह के रोगियों की चीनी खाना बन्द कर देते हैं। यहाँ तक कि सेब, अंगूर, आम, अमरूद जैसे मीठे फलों को खाने की भी आज्ञा नहीं देते।

इस प्रकार के उपाय से रोग दबा हुआ रहता है, पर जहाँ किसी से ज़रा सी ग़लती हुई, कहीं पर किसी के आग्रह या स्वादवश थोड़ी-सी चीनी खा ली गई, वहीं रोग उमड़ पड़ता है। इसलिए रोग से छुटकारा पाने के लिए भीतर जमे हुए विकारों को निकालना तथा 'इन्स्युलिन' पैदा करने वाली ग्रन्थियों को सशक्त बनाना ही कारगर होता है। इसलिए भोजन सुधार के साथ आरम्भ में कुछ दिन का उपवास करना और पेट को भली प्रकार साफ़ करना आवश्यक है। पालक, चौराई, बथुआ आदि पत्ते के साग खाकर अपने पेट को ठीक करना चाहिए। इसी प्रकार शाक, खट्टे फलों का रस, मट्ठा आदि पर दो-तीन सप्ताह निर्वाह करने से शरीर बहुत कुछ शुद्ध हो जाता है। खाने योग्य फलों में जामुन इस रोग में सबसे अच्छा माना गया है और उसकी पत्ती तथा गुठली के प्रयोग से भी इस रोग में पर्याप्त लाभ होता है। मेथी को अंकुरित करके एक-एक चम्मच सुबह-सायं लेना लाभप्रद होता है। गुरुकुल कांगडी फार्मेसी की मधुमेहनाशिनी-बटी, हिमालय ड्रग कम्पनी की डायबीकोन गोली खाने से बहुत लाभ होता है।

"रक्त भार" Blood-Pressure

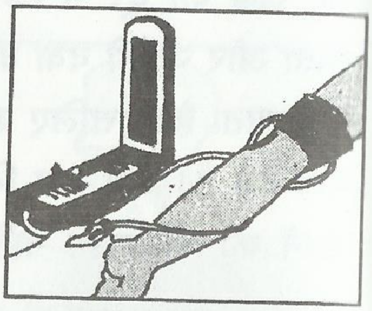

आधुनिक युग में यह रोग दिन-प्रतिदिन बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है और ६० प्रतिशत जनता इसका शिकार बनी हुई है। रक्तवाहिनियों की दीवार पर रक्त का जो दबाव पड़ता है, उसे रक्तभार कहते हैं। यह निम्नलिखित कारणों से होता है :

हृदय की शक्ति क्षीण होना, हृदयगति का क्रम सही ढंग से न होना, रक्त का परिणाम, रक्त की सान्द्रता, रक्त वाहिनियों की स्थिति-स्थापकता, श्वसन सम्बन्धी रोग, हरीज़ (भाग-दौड़ ज़्यादा होना) वरीज़ (मानसिक चिन्ता) व करीज़ (तेज़ मसालेदार सब्ज़ियों का प्रयोग) प्रमुख कारण है।

रक्तभार का मापना : १. स्पर्श विधि (Palpatory) २. श्रवण विधि (Auscultatory) इनको देखने का एक विशेष प्रकार का यन्त्र आता है, जिसे रक्तभार मापक यंत्र (Sphygmomano meter) कहते हैं। हृदय में दो प्रकार की ध्वनि होती है - १. संकोचकालीन (Systolic blood pressure) २. प्रसार कालिक (Diastolic blood pressure) सांकोचिक रक्तभार स्थायी रूप से १४० मि.मी. से अधिक तथा प्रसारकालिक ६० मि.मी. से अधिक होने पर रक्तभार कहलाता है। स्वस्थ युवा पुरुषां में संकोचकालिक रक्तभार मालूम करने के लिए आयु+६० जोड़ देने चाहिए। १६० मि.मि. होते ही विकृति का सूचक है।

लक्षण : साधारण रक्तभार के प्रारम्भ में कभी-कभी सिर में धड़कन-सी होती है, भ्रम (Vertigo) निद्रानाश, थकावट, मूर्च्छा, हृदयशूल (Angina Pain), श्वासकृच्छ (Dyspnoea) नेत्र और नासागत रक्त स्राव आदि लक्षण होते हैं। रोग के अधिक बढ़ जाने पर धातुक्षय, क्षुधानाश, रक्ताल्पता, रक्ताधिक्य, हृदयातिपं मस्तिष्कगत रक्तस्त्राव हो कर मृत्यु तक हो जाती है।

चिकित्सा : रोग के विशिष्ट कारण की उपयुक्त चिकित्सा करनी चाहिए। रोगी का आहार, विश्राम, व्यायाम तथा निद्रा आदि नियमपूर्वक होने चाहिए। भोजन में लवण, मांस तथा वसा की मात्रा कम होनी चाहिए। तम्बाकू, मद्यपान का निषेध हो। कार्बोज (Carbohydrate) जीवतिक्ति 'बी' तथा 'सी' की मात्रा अधिक होनी चाहिए। नींद न आने पर सर्पगन्धा (Serpina), एमडोपा, एस्प्रीन, एल्प्रेक्श का प्रयोग करें। अधिक परेशानी होने पर योग्य चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।

"स्वास्थ्य रक्षा के चौबीस स्वर्णिम सूत्र"

१. प्राकृतिक जीवन जीना प्रारम्भ करें।

२. बिना कड़ी भूख लगे कुछ भी न खाने की आदत डालें।

३. मसाले कम से कम प्रयोग करें व अंकुरित अनाज नाश्ते में लें।

४. सप्ताह में एक दिन उपवास करने की आदत डालें।

५. नशा करना बहुत हानिकारक है, किसी तरह का व्यसन नहीं अपनाना चाहिए।

६. भोजन को चबा-चबा कर खाना चाहिए व भोजन के बीच पानी भी बहुत कम पीना चाहिए।

७. प्रातः जलपान में हल्का नाश्ता दूध, दही, रस, छाछ आदि पेय पदार्थ लें।

८. शारीरिक श्रम का कोई न कोई उपाय अवश्य अपनाना चाहिए।

९. आसन और प्राणायाम नियमित रूप से करने चाहिएं।

१०. उचित आहार, हवादार मकान और हँसती-हँसती ज़िन्दगी की सुविधा होनी चाहिए।

११. घर की स्वच्छता के लिये फ़िनायल या नीम के पत्तों का धुआं देना चाहिए।

१२. घर के आस-पास पेड़-पौधों की हरियाली रखें।

१३. शरीर के प्रत्येक अवयव की सफाई का ध्यान रखें।

१४. जल्दी सोएं, जल्दी उठें। दिन चढ़े तक सोने वाले आलसी व दरिद्र बन जाते हैं।

१५. मुँह ढक कर न सोयें। ताज़ी हवा में सांस लें। ब्रह्मचर्य का पालन करें।

१६. विवेकशील का कर्त्तव्य है कि सन्तानोत्पादन कम से कम करें।

१७. विषैली या निरोधक दवाएं, सीमित मात्रा में ही लेनी चाहिए।

१८. चिन्ता, भय, आशंका, संकोच, आवेश, द्वेष, अहंकार जैसे मनोविकारों

से बचें।

१९. मिलनसार, हँसमुख, सेवा और सहयोग के स्वभाव की आदत डालें।

२०. जो उपलब्ध है, उसी में प्रसन्न रहने की आदत डालें।

२१. जिसका मन सन्तुलित और चित्त प्रसन्न रहता है, वह सदा स्वस्थ रहता है।

२२. प्रतिकूलताएँ हर मनुष्य के जीवन में आती हैं, अतः तालमेल बिठाएं।

२३. बेईमानी, चोरी, मुफ़्तख़ोरी, कामचोरी आदि अनीति से धनोपार्जित न करें।

२४. मन में कपट, क्रोध, द्वेष, हिंसा व प्रतिरोध के भाव न रखें।

''नीरोग जीवन के महत्वपूर्ण सूत्र''

संस्कृत में प्रसिद्ध उक्ति है कि :

''शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'' अर्थात् शरीर धर्म-कर्म के लिये प्रथम आवश्यक साधन है। अतः शरीर को स्वस्थ रखना प्रत्येक मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है।

हमारा सदा सहायक-सेवक शरीर है। वह चौबीसों घंटे सोते-जागते हमारे लिये काम करता रहता है। वह जिस भी स्थिति में हो, अपनी सामर्थ्य भर आज्ञा पालन के लिए तत्पर रहता है। सुविधा साधनों के उपार्जन में उसी का पुरुषार्थ काम देता है। इतना ही नहीं, उसकी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ न केवल ज्ञानवृद्धि का दायित्व उठाती हैं, वरन् समय-समय पर अपने-अपने ढंग से अनेक प्रकार के रसास्वादन भी कराती रहती हैं। इन विशेषताओं के कारण ही आत्मा उसकी सेवा साधना पर मुग्ध हो जाती है। उसका सुख-दुःख मानापमान आदि अपनी निज की भाव-संवेदना में सम्मिलित कर लेती है। यह घनिष्ठता इतनी अधिक सघन हो जाती है कि व्यक्ति आत्मा की सत्ता-आवश्यकता तक को भूल जाता है और शरीर को अपना ही आपा मानने लग जाता है।

ऐसे वफ़ादार सेवक को समर्थ नीरोग एवं दीर्घजीवी बनाए रखना प्रत्येक विचारशील का कर्तव्य है। चाहते तो सभी ऐसा ही हैं, पर जो रहन-सहन, आहार-विहार अपनाते हैं, वह विद्या ऐसी उल्टी पड़ जाती है कि उसके कारण अपने प्रिय पात्र को ही अपार हानि उठानी पड़ती है। उसका कचूमर तक निकल जाता है और रोता-कल्पता दुर्बलता की रुग्णता से ग्रसित होकर व्यक्ति असमय में ही दम तोड़ देता है।

इसमें सन्देह नहीं कि जो लोग प्राकृतिक नियमों के अनुसार अपना रहन-सहन रखते हैं, उनका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहता है और यदि कभी किसी घटनावश कोई रोग हुआ तो वह साधारण उपचार से अथवा बिना उपचार के ही शीघ्र अच्छा हो जाता है। आवश्यक बात यह है कि

जिससे स्वास्थ्य स्थिर रहे और बीमार होने की नौबत ही न आए, ऐसी कुछ बातों का सारांश संक्षिप्त रूप से नीचे लिख रहे हैं :-

१. प्रातः काल शौच जाने से पूर्व एक गिलास पानी पिया कीजिए, इससे पेट साफ़ होगा और रात का बिना पचा हुआ भोजन पचने में सहायता मिलेगी।

२. हल्का व्यायाम आवश्यक है। सुबह-शाम तेज़ चाल से, दोनों हाथों को हिलाते हुए, दूर तक घूमना आवश्यक है।

३. प्रातः काल की धूप का शरीर पर सेवन करें। इससे जीवन शक्ति प्राप्त होती है।

४. स्नान से पूर्व शरीर पर धीरे-धीरे तेल मालिश किया करें।

५. नाश्ते में दूध, मट्ठा, नींबू की शिकंजी, दलिया आदि पतली चीज़ ही लें। दोपहर, शाम दो बार ही नियत समय पर संतुलित भोजन लें।

६. सुपाच्य, ताज़े फल, हरे शाक तथा अंकुरित अन्न हमारी सर्वोत्तम खुराक हैं। तले हुए पूड़ी पकवान, मिठाइयाँ, चाट, पकौड़ी तथा मिर्च-मसालों से सर्वथा बचना चाहिए।

७. चाय, तंबाकू, भांग, अफ़ीम, गाँजा, शराब आदि नशीली चीज़ों से परहेज़ रखना चाहिए।

८. रात्रि को जल्दी सोने तथा सुबह जल्दी उठने की आदत डालनी चाहिए।

९. चिन्ता, क्रोध, भय, निराशा, शोक, बेचैनी, ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट आदि मनोविकारों से बचना चाहिए।

१०. चित्त को प्रसन्न, चेहरे को हँसमुख, मस्तिष्क को शांत रखने का बार-बार प्रयत्न करना चाहिए।

११. अब तक मिथ्या आहार-विहारों की आदत रही हो तो अब उनको दृढ़तापूर्वक छोड़ देने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए और नित्य प्रति परमात्मा से सच्चे हृदय से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में हमारा मनोबल बढ़ाए।

स्वस्थ रहने के मूलभूत सिद्धांत

सुख-शान्ति का मार्ग सरल है। स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन का मार्ग अति सरल है। अपनी साधारण चतुरता को छोड़कर सीधा-सादा रहनसहन अपना लें तो प्रकृति के प्रतिरोध में जो दण्ड सहने पड़ते हैं, उनका अवसर न आए। स्वस्थ रहने के मूलभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं:

१. शारीरिक ब्रह्मचर्य का अधिकाधिक पालन करें।

२. मानसिक कामुकता से बचें। मानवीय सौन्दर्य में पुष्प जैसी पवित्रता का आनन्द-लाभ करें। दृष्टि और कल्पना में विकारों का विष न मिलाएं।

३. रात्रि में जल्दी सोएं और प्रातः जल्दी उठें।

४. शरीर, वस्त्र, निवास और उपकरणों की स्वच्छता का पूरा-पूरा ध्यान रखें।

५. शारीरिक श्रम से ज़रा भी जी न चुराएं। हर दिन थकाने वाला परिश्रम करने की व्यवस्था बनाए रखें।

६. क्रोध, चिन्ता, आशंका, निराशा, ईर्ष्या-द्वेष जैसे मनोविकारों का परित्याग करें।

७. वस्त्रों में जकड़े न रहें। सर्दी-गर्मी का प्रभाव सहन करने की आदत शरीर में बनाए रखें।

८. दुर्व्यसनों से बचें तथा नशा छुएं भी नहीं। बुरी संगति, बुरा साहित्य तथा बुरे मनोरंजन से सर्प की तरह बचें।

९. कृत्रिमता, शृंगार, बनावट, फैशन की बचकानी पसन्दगी छोड़ें, सज्जनों की तरह सादा वेश रखें। सन्तोषी जीवन जिएं।

१०. दूसरों की नकल न करें। अपना मानसिक तथा शारीरिक-क्रम विवेकशीलता के आधार पर विनिर्मित करें और अपनी राह पर मजबूती के साथ एकाकी चलते रहने का साहस एकत्रित करें।

यह दस सूत्र रहन-सहन सम्बन्धी ऐसे हैं, जिनके आधार पर दिनचर्या और क्रिया-पद्धति का निर्धारण किया जाए तो स्वास्थ्य-समस्या का समाधान बड़ी सरलतपूर्वक सम्पन्न हो सकता है। एक अंग्रेज़ी कहावत है *''स्वस्थ दिमाग़ स्वस्थ शरीर में होता है''* जिसकी शारीरिक स्थिति ही अच्छी न होगी, उसका मस्तिष्क उसके विचार व समझ कदापि परिपक्व

न होंगे। सदाचार व नैतिक जीवन जीने वाले व्यक्ति स्वस्थ, बलिष्ठ व निरोग होते हैं। उनके चेहरे पर सदैव मुस्कान खिली रहती है।

''धर्मार्थ काममोक्षाणामारोग्यं मूल साधनम्''

आयुर्वेद शास्त्र में लिखा है कि मनुष्य की चार इच्छाएं होती हैं - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति। ये चारों इच्छाएं जब पूरी होती हैं, तब स्वास्थ्य अच्छा होता है। भौतिक या आध्यात्मिक कोई भी पुरुषार्थ स्वस्थ शरीर से सम्भव है। अस्तु उचित यही है कि स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उपेक्षा न बरती जाए।

स्वास्थ्य दवा-दारु पर निर्भर नहीं है। वह पैसों से भी नहीं ख़रीदा जा सकता। क़ीमती चीज़ें खाकर आरोग्य रक्षा की बात सोचना भी व्यर्थ है। यह सुरक्षा तो आहार-विहार तथा श्रम के सन्तुलन पर निर्भर रहती है। जो इनकी विधि व्यवस्था बनाए रहता है, वही स्वास्थ्य का आनन्द लेता है और वही कमज़ोरी एवं बीमारी से अपनी रक्षा करने में समर्थ होता है।

काम में न आने वाले चाकू को ज़ंग लग जाता है। काम में न आने से शरीर भी अपनी क्षमता खो बैठता है। जो कड़ी मेहनत करते हैं, उनके अंग-प्रत्यंग भी मज़बूत बनते हैं, जबकि आरामतलब और कामचोरों की काया अशक्त होती चली जाती है। न उनका अन्न पचता है, न गहरी नींद आती है। आरामतलबी एक अभिशाप है।

जिन्हें सुविधा हो वे व्यायामशाला जाकर व्यायाम करें। व्यक्तिगत श्रम से आसन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार आदि किए जा सकते हैं। जिनका कार्य बैठे रहने का है, उनके लिए तो टहलने का व्यायाम नितान्त आवश्यक है। सुबह ३-४ मील तेज़ रफ़्तार में भ्रमण करना और भी लाभदायक है।

''प्रसन्नात्मेन्द्रिमनाः स्वस्थ इत्यभिधियते''

जिन्हें स्वस्थ रहना हो वे मन को हल्का रखें तथा हँसने की आदत डालें। जो अभाव तथा कठिनाइयां सामने हैं, उनका धैर्य, साहस और सूझ-बूझ के साथ मुकाबला करें। सदा असन्तुष्ट रहने वाले व्यक्ति, अनिद्रा, सिरदर्द, दिल की धड़कन, मधुमेह जैसे अकाल मृत्यु बुलाने वाले रोगों के चंगुल में फंस जाते हैं। स्वस्थ रहने के लिए निश्चिन्त, संतुष्ट, श्रमशील और प्रसन्न रहना आवश्यक है।

९

भजन-गीत

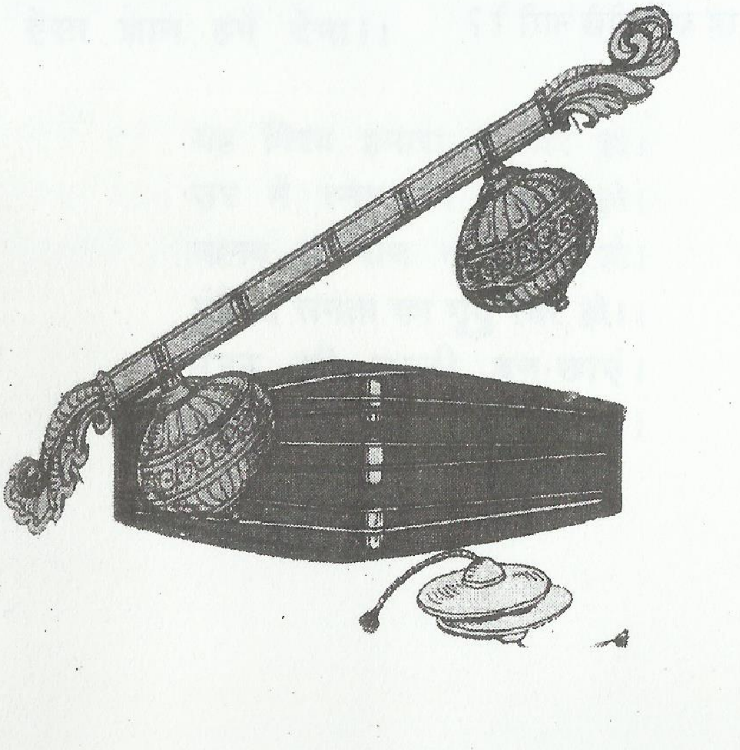

विषय सूची

1	प्रभु, ऐसा ज्ञान हमें देना	225
2	कैसे आयेंगे भगवान्?	226
3	चन्दन सी इस देश की माटी	227
4	हमको अपने भारत की, मिट्टी से अनुपम प्यार है	228
5	इन्सान बनकर जी	229
6.	सूरज की आवाज़	230
7.	गगन क्या कहेगा?	231
8.	उसे इन्सान कहते हैं	232
9.	देवियाँ देश की जाग जाएं अगर	233
10.	रहे क्यों पीछे नारी रे?	234

प्रभु, ऐसा ज्ञान हमें देना

नर से नारायण बन जाएं।
प्रभु, ऐसा ज्ञान हमें देना।।

दुखियों के हम दुःख दूर करें।
श्रम-कष्टों से हम नहीं डरें।।
उर में सबके प्रति प्यार भरें।
जल बनकर मरुस्थल में बिखरें।।
बाधाओं से टकरा जाएं।
प्रभु, ऐसा ज्ञान हमें देना।।

आलस में दिवस न कटे कभी।
सेवा के भाव न मिटें कभी।।
पथ से ये चरण न हटें कभी।
जनहित के कार्य न छुटें कभी।।
दैवी-क्षमताएँ विकसाएं-
प्रभु, ऐसा ज्ञान हमें देना।।

यह विश्व हमारा ही घर हो।
उर में स्नेह का निर्झर हो।
मानव के बीच न अन्तर हो।
गुंजित समता का मृदु स्वर हो।।
पूरब की लाली बन-छाएं।
प्रभु! ऐसा ज्ञान हमें देना।।

कैसे आयेंगे भगवान्?

हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान्?
मन का मैल नहीं धोया तो, कैसे आयेंगे भगवान्?

हर कोने कल्मष-कषाय की लगी हुई है ढेरी।
नहीं ज्ञान की किरण कहीं पर, हर कोठरी अँधेरी।
आँगन चौबारा अँधियारा, कैसे आयेंगे भगवान्?

हृदय हमारा पिघल न पाया, जब देखा दुखियारा।
किसी पंथ भूले ने हम से, पाया नहीं सहारा।
सूखी है करुणा की धारा, कैसे आयेंगे भगवान्?

अन्तर के पट खोल देख लो, ईश्वर पास मिलेगा।
हर प्राणी में ही परमेश्वर, का आभास मिलेगा।
सच्चे मन से नहीं पुकारा, कैसे आयेंगे भगवान्?

निर्मल मन हो तो रघुनायक, शबरी के घर जाते।
श्याम-सूर की बाँह पकड़ते, साग विदुर घर खाते।
इस पर हमने नहीं विचारा, कैसे आयेंगे भगवान्?

चन्दन सी इस देश की माटी

चन्दन सी इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम हो।
हर नारी देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम हो।

जिसके सैनिक समर भूमि में, गाया करते थे गीता।
यहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती थी सीता।
जीवन का आदर्श जहाँ पर, परमेश्वर का काम हो।

यहाँ कर्म से भाग्य बदल, देती श्रम-निष्ठा कल्याणी।
त्याग और तप की गाथाएँ, गाती थी कवि की वाणी।
ज्ञान यहाँ का गंगा जल सा, निर्मल हो, अभिराम हो।

रही सदा मानवतावादी, इसकी संस्कृति की धारा।
मिलकर रहना सीखें फिर से, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारा।
मानवीय संस्कृति का फिर, सारे जग में गुणगान हो।

हर शरीर मंदिर सा पावन, हर मानव उपकारी हो।
क्षुद्र असुरता को ठुकरा दे, प्रभु का आज्ञाकारी हो।
यहाँ सबेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम हो।

हमको अपने भारत की, मिट्टी से अनुपम प्यार है

हमको अपने भारत की, मिट्टी से अनुपम प्यार है।
अपना तन-मन जीवन सब, इस मिट्टी का उपहार है।।

इस मिट्टी में जन्म लिया था, दशरथ नन्दन राम ने।
इस धरती पर गीता गाई, यदुकुल भूषण श्याम ने।।
इस धरती के आगे मस्तक, झुकता बारम्बार है।।

इस माटी की जौहर गाथा, गाई राजस्थान ने।
इसे बनाया पावन गाँधी, के महान् बलिदान ने।
मीरा के गीतों की इसमें, छिपी हुई झंकार है।।

इस मिट्टी की शान बढ़ायी, तुलसी, सूर, कबीर ने।
अर्जुन, भीष्म, अशोक, प्रतापी, भगत सिंह से वीर ने।
इस धरती के कण-कण में, शुभ कर्मों का संस्कार है।

कण-कण मन्दिर इस माटी का, कण-कण में भगवान् है।
इस मिट्टी का तिलक करो, ये अपना हिन्दुस्तान है।
इस माटी का हर सपूत, भारत का पहरेदार है।।

इन्सान बनकर जी

एक दिन ही जी, मगर इन्सान बनकर जी।

आपदा आयें भले, मत छोड़ना सङ्कल्प अपने।
हो सघन मत टूटने देना कहीं सुकुमान सपने।।
देखना मुड़कर भला क्या? पंख बीधे कण्टकों को।
मत कभी देना महत्व, मार्ग व्यापी संङ्कटों को।।
एक दिन ही जी, सफल अभियान बनकर जी।
एक दिन ही जी, मगर इन्सान बनकर जी।।

एक छोटी नाव, उसके ही सहारे पास जाना।
हो भले तूफान राही! सोचना मत, जूझ जाना।
कष्ट सहकर भी स्वयं इस विश्व का उपकार कर जा।
छोड़ जा पदचिह्न अपने तीर्थ नव-निर्माण कर जा।
एक दिन ही जी, जगत की शान बनकर जी।
एक दिन ही जी, मगर इन्सान बन कर जी।।

चमक बिजली-सा गगन में, जब कभी छायें घटाएं।
बन अडिग चट्टान तुझसे आंधियाँ जब जूझ जाएं।
कुछ नहीं कठिनाइयाँ, विश्वास की ज्वाला जलाले।
युग नया निर्माण करने की, अटल सौगन्ध खाले।।
एक दिन ही जी, मगर वरदान बनकर जी।
एक दिन ही जी, मगर इन्सान बनकर जी।।

सूरज की आवाज़

उठो! सुनो प्राची से उगते सूरज की आवाज़।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज।।

देश की जिसने सबसे पहले जीवन ज्योति जलायी।
और ज्ञान की किरणें सारी दुनियाँ में फैलायी।।
लोभ मोह के भ्रम से सारे जग को मुक्त कराया।
भ्रातृ भावना का प्रकाश सारे जग में फैलाया।।
अगणित बार बचाई जिसने मानवता की लाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज।।

इतना प्रेम कि पशु-पक्षी तक प्राणों से भी प्यारे।
इतनी दया कि जीव मात्र सब परिजन सखा हमारे।।
श्रद्धा अपरंपार की पत्थर में भी प्रीति जगाई।
और पराक्रम ऐसा जिसकी रिपु भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें हम फिर से नया समाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज।।

मानवता के लिए हड्डियाँ तक जिसने दे डाली।
माताओं की हुई अनेकों बार गोदियाँ खाली।।
पर न पाप के आगे उनने अपना शीश झुकाया।
संस्कृति का सन्मान बढ़ाने हँस-हँस शीश कटाया।।
रहे शिवाजी अर्जुन जैसा निज चरित्र पर नाज़।
अपना देश बनेगा सारी दुनियाँ का सरताज।।

गगन क्या कहेगा?

अगर हम नहीं देश के काम आये,
धरा क्या कहेगी, गगन क्या कहेगा?

चलो श्रम करें देश अपना सँवारें।
युगों से चढ़ी जो खुमारी उतारें।।
अगर वक्त पर हम नहीं जाग पाए,
सुबह क्या कहेगी, पवन क्या कहेगा?

मधुर गंध का अर्थ है खूब महके।
पड़े संकटों की भले मार चहके।।
अगर हम नहीं पुष्प सा मुस्कराए,
व्यथा क्या कहेगी, चमन क्या कहेगा?

बहुत हो चुका, स्वर्ग भू पर उतारें।
करें कुछ नया, स्वस्थ सोचें विचारें।।
अगर हम नहीं ज्योति बन झिलमिलाए,
निशा क्या कहेगी, भुवन क्या कहेगा?

रहे क्यों पीछे नारी रे?

दुनियाँ आगे बढ़ती जाये, रहे क्यों पीछे नारी रे?
रहे क्यों पीछे नारी रे, रहे क्यों पीछे नारी रे?

नारियों को आगे आना,
काम कुछ करके दिखलाना।
मार्ग उन्नति का अपनाना,
न बाधाओं से घबराना।।

समझ लें मिल-जुलकर हम आज हमारी जिम्मेदारी रे।
दुनियाँ आगे बढ़ती जाये, रहे क्यों पीछे नारी रे?

करें आओ हम नव निर्माण,
व्यक्ति का करें चलो उत्थान।
बनायें अपने को गुणवान,
करे जग नारी का गुणगान।।

मिले हर नारी को सम्मान, करें इसकी तैयारी रे,
दुनिया आगे बढ़ती जाये, रहे क्यों पीछे नारी रे?

अगर सारी बहनें जागें,
हमारे सारे दु:ख भागें।
नारियाँ आ जायें आगे,
आज का युग यह ही मांगे।।

करें आओ युग का निर्माण, इसी में शान हमारी रे,
दुनियाँ आगे बढ़ती जाये, रहे क्यों पीछे नारी रे?

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स-
वितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो
यो नः प्रचोदयात्।

अर्थात् :- उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें।